CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अ१२/23

7-2

अभिनव संगीत रत्न

भाग-2

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

ग्रन्थालय
, वाराणसी-५
/23

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
नवनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिनव संगीत रत्न

द्वितीय भाग

अ 82/23

आम्नाय—ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

लेखक: —
संगीताचार्य ओम्प्रकाश
प्रिंसिपल संगीत भवन, देहली।

—:o:—

संगीत भवन प्रकाशन
१५ ए/५८, डबल्यू० ई० ए०,
करौल बाग, नई देहली-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक—
श्री ओम् प्रकाश

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम बार १९६४

मुद्रक:—
एस० के० वशिष्ट
वशिष्ट प्रिंटिंग प्रेस
गाज़ियाबाद
फ़ून : २२०४

मूल्य पाँच रुपया पचास नए पैसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय
भरतनिधि, कर्नल
अनूपशहर

समर्पण

जिनके चरणों में रहकर

मेरे हृदय को अनुभूति

और

वाणी को स्वर मिले

उन्हीं प्रेरणादायिनी सरस्वती

के चरणों में

यह

'अभिनव संगीत रत्न' समर्पित है।

संगीताचार्य ओम्प्रकाश
प्रि० संगीत भवन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी

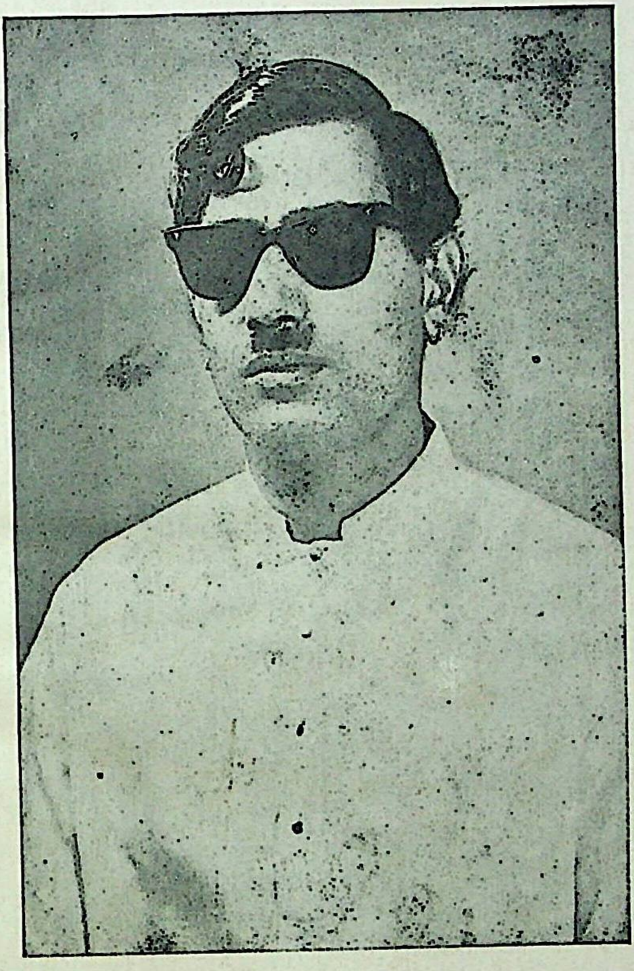

संगीताचार्य ओम् प्रकाश

प्रिंसिपल संगीत भवन

दिल्ली ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

दानी दयानी वीणा वादिनी सरस्वती माँ के वरदान से मुझे बाल्यकाल से ही कविता एवं संगीत से अत्यन्त रुचि, लग्न तथा स्नेह रहा है। मेरे पूज्यनीय पिताजी को भी इस कला से अत्यन्त प्रेम था। इतना ही नही, वे एक योग्य संगीतज्ञ भी थे। वे संगीत कला को जीविका का आधार न मान, हरिभक्ति एवं आत्मशाँति के साधन स्वरुप समझते थे। उनकी यह तीव्र इच्छा थी कि परिवार में कोई न कोई निपुण संगीतज्ञ बने। इसी घ्येय की पूर्ति के लिये उन्होंने मुझे योग्य तथा अनुभवी गुरुजनों के पास रहकर इस कला के अध्ययन करने में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया। हमारे परिवार में मेरे अतिरिक्त, मेरी बड़ी बहनजी की सुपुत्री डा० कुमारी प्रेमलता शर्मा को भी संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। डा० कुमांरी प्रेमलता जी ने अपनी संगीत की शिक्षा पं० ओंकार नाथ ठाकुर जी से प्राप्त की। आचार्यं ओंकारनाथ जी के बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय के कुलगुरु पद से अवकाश पा लेने के पश्चात् विश्वविद्यालय का सारा कार्यंभार प्रेमलता जी ने सम्हाला। आजकल भी वे इसी संस्था में प्रोफेसर नियुक्त हैं। डा० प्रेमलता ने पूरी लग्न तथा गुरु कृपा के कारण संगीत के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति और यश की प्राप्ति की।

उन्हीं गुरुजनों की कृपा व आर्शीवाद से, मैं, लगभग पच्चीस वर्ष के कठोर परिश्रम तथा, अनुभव के पश्चात् इन ग्रन्थों 'अभिनव संगीत रत्न' भाग प्रथम तथा भाग द्वितीय के लिखने में समर्थ हो सका हूँ जिन्हें जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इन ग्रन्थों द्वारा संगीत के प्रचार में सहयोग अथवा जिज्ञासुओं को कोई लाभ हुआ तो मैं अपने किये हुये परिश्रम को सफल समझूंगा।

प्रस्तुत ग्रन्थों के लिखने में मेरी शिष्या कुमारी कमल-प्रभा महेन्द्र, एम० ए. ने अत्यन्त परिश्रम एवं लग्न के साथ कार्य किया है। आशा है कि आगामी ग्रन्थो के लिखने में भी सहयोग देंगी। इनके अतिरिक्त वशिष्ट प्रेस गाजिया-बाद के संचालक रवीन्द्र शर्मा से इन ग्रन्थों को छापने में बडी सावधानी से काम लिया है। रवीन्द्र शर्मा जी ने प्रथम बार संगीत के स्वर लिपि वद्य ग्रन्थ छापे हैं इसी कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	पृष्ठ संख्या
१-चिह्न परिचय	१
२-ताल परिचय	२

राग अनुक्रमणिका

राग भीमपलासी

१-परिचय	५
२-आलाप	६
३-तानें	८
४-स्वरमालिका (त्रिताल)	११
५-लक्षणगीत (त्रिताल) ... ... रागनी भीमपलासी कहावत	१२
६-विलंम्बित ख्याल (एकताल) ... ... काहे गुमान करे तू	१४
७-विलंम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ... सहज तरे भव माँहि	१६
८-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ... आई ऋतु बरसन को प्यारी	१८
९-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ... पिया घर आए	२०
१०-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ... बीती जात उमरिया तोरि	२२
११-द्रुत ख्याल (एकताल) ... ... शंकर शिव महादेव	२४
१२-तराना (त्रिताल) ... ... तनन तनन तन	२६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३-ध्रुपद चारताल ... ...
नमन करो गुरु चरना २८
१४-धमार (धमार) ... ...
फागुन आयो री आज ३०

राग बिहाग

१५-परिचय ३२
१६-आलाप ३३
१७-तानें ३५
१८-स्वरमालिका (त्रिताल) ३७
१९-लक्षणगीत (त्रिताल) ... ...
शुद्ध सुरन को मेल मिलायें ३८
२०-विलंम्बित ख्याल (एकताल) ... ...
बन बन ढूंढ फिरी मनमोहन ४०
२१-विलंम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ...
बेर भई सखि री ४२
२२-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
नैंना मोरे नीर भरें ४४
२३-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
पिया बिन परत न चैन ४६
२४-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
बिरथा जनम गयो भजन बिन ४८
२५-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
टेर सुनो ब्रज राज दुलारे ५०
२६-तराना (त्रिताल) ... ...
ना दिर दिर दीम् तनन ५२
२७-ध्रुपद (चारताल) ... ...
नैनन में आन बसो ५४
२८-धमार (धमार) ... ...
आयो री आली फागुन मास ५६

राग दुर्गा

२९-परिचय ५८
३०-आलाप ५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३१-तानें	...	...	६०
३२-स्वरमालिका (त्रिताल)	...	...	६२
३३-लक्षणगीत (त्रिताल)	...	...	
दुर्गा थाट बिलावल मानी	...	...	६३
३४-विलंबिम्त ख्याल (एकताल)	...	...	
सीता पति राम सुमिर	...	...	६५
३५-विलंम्वित ख्याल (तिलवाड़ा)	...	...	
बाजत बाँसुरिया मधुबन में	...	...	६७
३६-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
हरि को नाम सुमिर मन मोरे	...	...	६९
३७-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
साँवरिया सुनो विनती हमारी	...	...	७०
३८-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
आई ऋतु बरसन को प्यारी	...	...	७१
३९-द्रुत ख्याल (झपाताल)	...	...	
पिया नाहीं सखि आये	...	...	७३
४०-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
बोलन लागे मोर सखिरी आज	...	...	७५
४१-तराना (त्रिताल)	...	...	
दीम् तन नन दिर	...	...	७६
४२-ध्रुपद (चारताल)	...	...	
गरजन लागे बादर कारे	...	...	७७
४३-धमार (धमार)	...	...	
व्रज में आज फाग मच्यो री	...	...	७९

राग पीलू

४४-परिचय	...	...	८१
४५-आलाप	...	...	८२
४६-तानें	...	...	८४
४७-स्वरमालिका (त्रिताल)	...	...	८७
४८-लक्षणगीत (त्रिताल)	...	...	
पीलू राग मेरो मन लीनो	...	...	८८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४९-विलंम्बित ख्याल (एकताल) ... ...
नाद भेद अपरम्पार ९०
५०-विलंम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ...
जिया नाहीं लागे ९२
५१-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
मंगल गावत सखियाँ सारी ९४
५२-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
गोरी छम छम नीर भरे ९५
५३-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
काहे करत निठुराई ९७
५४-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
हरि को सुमिरन निसदिन करिये ९८
५५-तराना (त्रिताल) ... ...
श्रोदा दानि श्रोदा दानि १००
५६-ध्रुपद (चारताल) ... ...
आद सुमिर महादेव १०१
५७-धमार (धमार) ... ...
फगवा खेलत नन्द कुमार १०३

राग भैरवी

५८-परिचय १०५
५९-आलाप १०६
६०-तानें १०८
६१-स्वरमालिका १११
६२-लक्षणगीत (त्रिताल) ... ...
प्रातः गाइये मिल राग भैरवी ११२
६३-विलंम्बित ख्याल (एकताल) ... ...
शिव शिव रट रे मना तू ११४
६४-विलंम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ...
आज बलम आये ११६
६५-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
जिया नाहीं लागे हरि दरशन बिन ११८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६६-द्रुत ख्याल (झपताल) ... ...
कैसे करूँ मैं आली ११९
६७-द्रुत ख्याल (एकताल) ... ...
मदन मोहन आये १२१
६८-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
सुमिर सुमिर हरि नाम मोरे मन १२३
६९-तराना (त्रिताल) ... ...
तनन तनन तन १२५
७०-ध्रुपद (चारताल) ... ...
राजन को महाराज १२७
७१-धमार (धमार) ... ...
केसर चंदन तिलक विराजे १२९

राग सारंग

७२-परिचय १३१
७३-आलाप १३२
७४-तानें १३४
७५-स्वरमालिका (त्रिताल) १३६
७६-लक्षणगीत (झपताल) ... ...
सारंग वृन्दावन १३७
७७-विलम्बित ख्याल (एकताल) ... ...
आद महादेव सुमिर १३९
७८-विलम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ...
नाद भेद अपरम्पार १४१
७९ द्रुत ख्याल (एकताल) ... ...
बंसीवट यमुना तट १४३
८०-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
मोहन आन बसो नैनन में १४५
८१-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
दरशन दीजो नन्द दुलारे १४७
८२-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
धेनु चरावत हरि वृन्दावन १४८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८३-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
झनन झनन पग पैंजनी बाजे	...	...	१५०
८४-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
देव पूजन को चली अलबेली	...	...	१५२
८५-तराना (एकताल)	...	...	
ओदा ना दिर दिर दीम्	...	...	१५४
८६-ध्रुपद (चारताल)	...	...	
गरजत घन घोर आये	...	...	१५६
८७-धमार (धमार)	...	...	
खेलत हैं महादेव देवन सन होरी	...	...	

राग बागेश्री

८८-परिचय	...	...	१०६
८९-आलाप	...	...	१६१
९०-तानें	...	...	१६३
९१-स्वरमालिका (त्रिताल	...	...	१६५
९२-लक्षणगीत त्रिताल)	...	...	
सुन्दर तान सखि अति रसभरी	...	...	१६६
९३-विलम्बित ख्याल (एकताल)	...	...	
कौन करे री ऐसो भक्तन को काज	...	...	१६८
९४-विलंबित ख्याल (तिलवाड़ा)	...	...	
भज रे भज मोरे मन तू	...	...	१७०
९५-विलम्बित ख्याल (तिलवाड़ा)	...	...	
इतनी विनती अब सुनहु मोरी	...	...	१७२
९६-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
घोर घोर घन गरजत आली	...	...	१७४
९७-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
नैया करो मोरी पार कन्हैया	...	...	१७६
९८-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
शरण गहे की लाज राखो हरि	...	...	१७८
९९-द्रुत ख्याल (त्रिताल)	...	...	
झनन झनन बाज रही पायल की झंकार		...	१८०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१००-तराना (त्रिताल) ... ...
आदोनि तदारे दानि १८२
१०१-ध्रुपद (चारताल) ... ...
ठुमक ठुमक चलत चाल १८४
१०२-धमार (धमार) ... ...
खेलत फाग आज बनवारी १८५

राग देस

१०३-परिचय १८७
१०४-आलाप १८८
१०५-तानें १८९
१०६-स्वरमालिका १९२
१०७-लक्षणगीत (त्रिताल) ... ...
सब मिल राग देश को गाइये १९३
१०८-विलंम्बित ख्याल (एकताल) ... ...
पिया परदेस गयो री आली १९५
१०९-विलंम्बित ख्याल (तिलवाड़ा) ... ...
आन बसी हिया माधुरी मूरत १९७
११०-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
बरसन लागि बूंदरियाँ १९९
१११-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
सुमिर सिया राम कमल चरण २०१
११२-द्रुत ख्याल झपताल) ... ...
इतनी सुनो मोरी २०३
११३-द्रुत ख्याल (त्रिताल) ... ...
हे रस भरी तान सखि हरिं गाये २०५
११४-तराना (त्रिताल) ... ...
ओदा नादिर दिर दीम् २०७
११५-ध्रुपद (चारताल) ... ...
आज सखि आनन्द भयो २०९
११६-धमार (धमार) ... ...
फगवा खेलत नन्द कुमार २११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाद

संगीत के आचार्यों के अनुसार अग्नि और मरुत के संयोग से नाद की उत्पत्ति हुई है। यह नाद अनाहत रूप से सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इसी को शब्द ब्रह्म कहते हैं। यही पिण्ड में भी है, किन्तु सुषुम्ना-पथ बन्द होने के कारण साधारण व्यक्ति नहीं सुन सकते। योगी जन हठ योग के द्वारा कुण्डलिनी को जाग्रत कर, उर्ध्वगामी करते हैं जिससे यह पथ खुल जाता है, तो वे उस अनाहत ध्वनि को सुनने लगते हैं। सिद्ध साधकों ने उस ध्वनि को पहले समुद्र-गर्जन, मेघों की गड़गड़ाहट, शंख-घण्टे आदि की ध्वनि और अंत में किंकिणी वंशी भ्रमर आदि की ध्वनि के समान बताया है। यही नाद वास्तव में उपाधि युक्त होकर सात स्वरों में विभाजित हो जाता है, पर निरुपाधि होकर प्रणव या ओंकार कहलाता है। नाद ध्वनि के विषय में नाद विन्दूपनिषद् में नाद की ध्वनि की क्रमागत स्थूल से सूक्ष्म की ओर गत्यता को, निम्न छन्द में स्पष्टतः व्यक्त किया है। यथा:—

सिद्धासनस्थितो योगी मुद्रां सन्धाय वैष्णवीम्।
शृणुयाद्दाक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा॥
श्रूयते प्रथमाभ्यासे नादो नाना विधो महान्।
वर्धमानस्तथऽभ्यासे श्रूयते सूक्ष्म सूक्ष्मतः॥
आदौ जलधिजीमूत भेरी निर्झर संभवः।
मध्ये मर्देल शब्दा मो घण्टा काहलजस्तथा॥
अन्ते तु किंकिणी वंशी वीणा भ्रमर निस्वनः॥

'प्रणव' 'ओंकार' या 'ओऽम्' को शब्द ब्रह्म कहा है ओऽम् के तीनों अक्षर 'अ,' 'उ,' 'म,' तीन शक्तियों के द्योतक हैं। 'अ' उत्पत्ति शक्ति वाले सृष्टि कर्ता ब्रह्मा जी का प्रतीक है। 'उ,' धारक पालन तथा रक्षण शक्ति के प्रतीक विष्णु जी हैं और 'म,' महेश अर्थात् "शिव शक्ति"—नाश करने वाली शक्ति का द्योतक है। इन तीनों शक्तियों का पुंज ही परमेश्वर है। सृष्टि के उद्भव से लेकर मानव की सभी वृत्तियों में इसकी महत्ता वर्तमान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। भारत के सभी दर्शन-शास्त्रियों और प्रायः सभी उपासना पद्धतियों में नाद तत्व की सर्वश्रेष्ठता स्वीकार की गई है। नाद को, ब्रह्म रूप मानकर योगी महर्षियों ने उसे निराकार ब्रह्म का साकार रूप कहा है। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में शब्द ब्रह्म, नाद की विवर्त प्रक्रिया द्वारा इस संसार की उत्पत्ति बताई है। परात्पर ब्रह्म की अनुभूति, 'प्रणव' की साधना या नाद की उपासना से ही सिद्ध होती है। ब्रह्माण्ड में दो ही तत्त्व, आकाश और नाद ऐसे हैं जो सर्व व्यापी एवं विश्व व्यापी हैं तथा 'शब्द गुणामाकाशं' का तात्पर्य भी यही है। इससे यह स्पष्ट है कि आकाश का गुण नाद है।

आकाश में इस गुण के उद्भव के लिए किसी प्रकार के प्रयत्न या संघर्ष की आवश्यकता नहीं होती। आकाश और ब्रह्माण्ड एक दूसरे के पर्याय रूप में यहाँ व्यवहृत हैं। यह नाद जैसा कि कहा जा चुका है आकाश का गुण है जो स्वतः उत्पन्न है। इसी तरह पिण्ड में स्थित आकाश में नाद के उद्बोधन के लिए किसी प्रकार के आघात या संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती। किन्तु अन्य वस्तुओं में स्थित आकाश में नाद के उद्बोधन के लिए आघात अथवा संघर्ष की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह नाद के दो स्वरूप हमारे सामने आते हैं। पहला अनाहत और दूसरा आहत।

ब्रह्माण्ड में पिण्ड और पिण्ड में ब्रह्माण्ड—कबीर के शब्दों में "जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है" की स्थिति है। दूसरे शब्दों में ऐसा कह सकते हैं कि हृदय में एक छोटी सी जगह 'दहराकाश' नाम से शुद्ध आकाश से व्याप्त है। इस आकाश में भी नाद की सृष्टि स्वतः उद्भूत ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनाहत नाद के समान ही है। यह स्वतः उद्भूत नाद इतना मधुर है कि इसे एक बार श्रवण कर लेने के पश्चात् प्राणी या जीव का मन किसी दूसरे विषय में नहीं लगता। इसी अभिप्रेय से यह योगी ऋषियों का दीर्घ कालीन, युगों-युगों तक साधना का विषय रहा है। साधना कृच्छ्र होने के कारण इसे केवल कठोर साधक ही सुनते, समझते और मुक्ति पाते रहे। यह नाद मन या चित्त की सामरस्य अवस्था में या पारिभाषिक यौगिक शब्दावली में स्थितप्रज्ञ की स्थिति में ही सुना जा सकता है। कृच्छ्र यौगिक साधनाओं से मन या चित्त पूर्वा-पर वृत्तियों, रागों से पूर्णतः मुक्त होकर एक ऐसी विशेष मधुमती भूमिका में पहुँच जाता है जहाँ वितर्क की सत्ता नहीं रह जाती, वहाँ अनाहत नाद श्रुतिगोचर होता है। उसी नाद में साधक निमग्न होकर ब्रह्मानन्द का अनुभव करते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाद की श्रुति के विषय में, नाद-विन्दूपनिषद् में "नाना विद्या नादा: श्रूयन्ते सूक्ष्मसूक्ष्मत:" अर्थात् नाद, साधक के अभ्यास क्रमोन्नति के अनुसार स्थूल से सूक्ष्म की ओर गतिशील होता है जैसा कि पिछले पृष्ठ में नाद क्रमान्तर से सूक्ष्म हुआ है वैसी ही साधक की नादानुभूति होती है। इस तरह की साधना के मार्ग में जिस नाद की अनुभूत्ति होती है, वह उपाय रूप होती है। और जिस 'नाद' का संलक्षण रहता है वह 'उपेय स्वरूप' संज्ञा से अभिहित है। यह उपेय स्वरूप नाद साधक की नाना प्रकार की साधनाओं के द्वारा जब कुण्डिलनी शक्ति को ऊर्ध्वमुख उद्‌बुद्ध करता है उससे स्फोट होता है। जिसे संलक्ष्य नाद कहते हैं। इस स्फोटसिक्त नाद से प्रकाश स्फुरित होता है। यौगिक पारिभाषिक शब्दावली में, इसी को सूर्य, चन्द्र, अग्नि कहा गया है और कहीं-कहीं ब्रह्मा, विष्णु और महेश या शिव भी कहा गया है। यह नाद अपने आत्म रूप में अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनाहत नाद का व्यष्टि या पिण्ड में व्याप्त या व्यक्त रूप है। इस तरह जो नाद अनाहत रूप में ब्रह्माण्ड में या विश्व में व्याप्त है उसी का प्रकाश जब व्यक्ति में होता है तब वह उपेय स्वरूप नाद या संलक्ष्य नाद से अभिहित होगा।

इस नाद के विषय में सरल स्पष्टीकरण यही है कि जो नाद अखण्ड रूप हो, जगत के अंतस्थल और सर्व ब्रह्माण्ड में निरन्तर ध्वनित हो रहा है, और जिसका कि एक सर्वथा स्वत: प्रसूत रूप स्वतंत्र हृदय परिधि में भी विद्यमान है, उसे साधारण व्यक्ति का, मन की वृत्तियाँ सदैव इड़ा पिंगला के माध्यम् से गतिमय रहने के कारण बहिर्मुखी होने से, सुषुम्ना-पथ बन्द हो जाता है और वह व्यक्ति उस ध्वनि को सुनने में सर्वथा असमर्थ रहता है। तभी इस सुषुम्ना-पथ को उन्मुक्त करने के लिए, कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने की कृच्छ्र साधना अभिप्रेय है। ध्यान विन्दूनिषद् में संलक्ष्य नाद, इसके हल के हेतु दृष्टव्य है यथा:—

मूलाधरातं सुषुम्ना च विस तन्तु निमाशुभा।
अमूर्त्तो वर्तते नादो वीणा दण्ड समुत्थित:॥
शंखनादादिभश्चैव मध्यमेव ध्वनिर्यं था।
व्योमशन्ध्रगतो नादो मायूरं नादमेव च॥
कपाल कुहरे मध्ये चतुद्वरिस्य मध्य में।
तदात्मा राजते तत्र यथा व्योम्नि दिवाकर:॥
कोदण्डद्वयमध्ये तु ब्रह्मपन्धेषु शक्ति च।
स्वातमानं पुरुषं पश्येन्मनस्यत्र लयंगतम्॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थात्—मूलाधार चक्र से सुषुम्ना का उर्ध्व गामी स्वरूप कमल-नाड़ सदृश्य है। संलक्ष्य नाद इसी कमल-नाड़ सदृश्य सुषुम्ना नाड़ी में अमूर्त रूप में रहता है। शंख मयूरादि ध्वनियों की अनुभूति, इड़ा पिंगला सुषुम्ना घाण्टिकादि चार तोरणों को भेदकर व्योमरन्ध्रगत नाद की एकात्मता की अनुभूति कपाल कुहर में हो जाती है या उसे जो सुन लेता है, उसके समक्ष आकाश में स्थित सूर्य के सदृश्य आत्मा का पूर्ण प्रकाश प्रस्फुटित हो जाता है। इस अवस्था में मन लय को प्राप्त हो जाता है तथा इसी संदर्भ में शिव संहिता में दी हुई व्याख्या भी दृष्टव्य है :—

इड़ा गंग पुरा प्रोक्ता पिंगलाचार्क पुयिका।
मध्या सरस्वती प्रोक्ता तासां संगोऽति दुर्लभः॥
ब्रह्मा रंध्र मुखे तासां संगमः स्यादसंपयः।
तस्मिन् स्नाने स्नातकाना मुक्तिस्याद विरोधतः।

इस तरह जब क्रिया विशेष से सुषुम्ना पथ उन्मुक्त हो जाता है और कुण्डलिनी शक्ति जाग उठती है, तो प्राण स्थिर होकर शून्य पथ से निरन्तर उस अनाहत ध्वनि को सुनने लगता है।

नाद का अन्य रूप तंत्रों में प्राप्त होता है। तंत्रों का विशेष संबंध आगम ग्रन्थों से हैं। इनमें नाद के पूर्व-शक्ति और शक्तिमान ओंकार की श्रेष्ठता स्थापित की है। इन ग्रन्थों में शक्ति को नाद, शब्द, रव, स्वन आदि नाम देकर बहुत विस्तृत स्वरूपों से प्रस्तुत किया है। 'वाक्' के उल्लेखन् में इसको परावाक् या पराशक्ति संज्ञा से अभिहित किया है। यही अपने आगम रूपों में पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी में विभक्त हो जाती है जिसे अन्य शब्दों में इच्छा, ज्ञान, और क्रिया, नाम देते हैं। स्फोटवाद के अनुसार आत्मा या स्फोट 'वाच्य' है और उसकी वाचक शक्ति को 'नाद' या प्राकृत ध्वनि कहते हैं। आत्मा पहले नाद या प्राकृत ध्वनि के रूप में व्यक्त होती है इसके अनन्तर ही अन्य विकार उद्भूत होते हैं। इन सबकी प्रतीति आत्मा में स्वीकार की गई है। यहाँ यह मैं स्पष्ट कर दूँ कि स्फोटात्मा को ही प्रणव या ओंकार कहा जाता है। सूत-संहिता में इसके दो भेद कर दिए गए हैं एक ब्रह्म रूप दूसरा शब्द रूप। इसे पर-अपर भी कहते हैं। भागवत् पुराण कर्ता ने भी पर-ब्रह्म ओंकार के उल्लेखन् में इसे स्पष्ट व्यक्त किया है कि जो नाद शक्ति उत्पन्न होने पर प्रणव (ओंकार) के रूप में विवृत ओंकार के अनुरूप परिवर्तित होता है उसका मूल निम्न संस्कृत श्लोक में दृष्टव्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथाः —

समाहित्तात्मनो ब्रह्मन् ब्रह्मणः परमेष्ठिनः,
हृद्याकाशादभून्ना दो वृत्तिरोधाद् विभाव्यते।
त तोऽभूस्त्रिवृ दोंकारो योऽव्यक्त प्रणव वराट्,
वस्तालिंग भगवतो ब्रह्माः परमात्मनः ।।

किसी-किसी आगम ग्रन्थ में सत्-चित् आनन्द स्वरूप ओंकार से शक्ति शक्ति से नाद, और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति बताते हैं। योग-दर्शन में नाद और बिन्दू एकार्थक हैं। यहाँ प्रयुक्त बिन्दू का आशय अपेक्षाकृत सीमित अर्थ में है। मूल संस्कृत में "आसीच्छक्तिस्ततो नादा नादाद्बिन्दु समुद्भवः" अर्थात् शक्ति से नाद और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति है। इनके अनुसार शक्ति से उत्पन्न होने वाला नाद महानाद कहलाता है, और बिन्दु अनाहत नाद का पर्याय है जैसा कि स्वीकार किया गया है—"बिन्दुरेव समाख्यात व्योमानाहतमित्यापि।" शैवागमों में इसे इतर ढंग से कहा गया है जो कि नाद सृष्टि और विकार के समग्र चित्र को प्रस्तुत करता है। इसमें शिव की शक्ति को ज्ञान शक्ति मानकर उसे सारी सृष्टि का निमित्त माना है एवं शक्ति और शिव के सम्मिलित रूप को क्रिया शक्ति का निमित्त माना है। यही क्रिया शक्ति बिन्दु और नाद का पर्याय है जो कि सृष्टि काल आधेय भी है। इसके दो भेद महामाया और माया हैं जो कि क्रमशः संगीत के अर्थ में अनाहत नाद और आहत नाद के पर्याय हैं। यहाँ विकल्प को लेकर शुद्ध और अशुद्ध रूपों की अवतारणा हुई जिससे कि चार पृथक-पृथक अवस्थायें परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी होती हैं, जो कि वाणी के चार भेदों के रूप में स्वीकार की गई हैं। इन भेदों को यौगिक पारिभाषिक शब्दावली में उपाय स्वरूप और उपेय स्वरूप या संलक्ष्य रूप में कहा गया है। अर्थात् जो उपेय स्वरूप हैं वे माया भेद के अशुद्ध रूप में वैखरी और मध्यमा हैं और संलक्ष्य रूप या उपेय स्वरूप वे महामाया भेद के शुद्ध रूप में पश्यन्ती और परा है। ये शुद्ध और अशुद्ध रूप, ओंकार, या प्रणव ब्रह्म के पर-अपर हैं। इस संबंध में सूत संहिता का श्लोक मूल रूप में दृष्टव्य है:—

यथा:—

परः परतरं ब्रह्म ज्ञानानन्दादिलक्षणम्।
प्रकर्षेण प्रणवः यस्मात् परं ब्रह्म स्वभावतः ।।
अपरः प्रणवः साक्षच्छिब्दस्य सुनिर्मलः।
प्रकर्षेण नवत्वस्य हेतुत्वात् प्रणवः स्मृतः ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रणव ओंकार या आगमानुसार चित्त आनन्द के स्वरूप को शैव शब्दावली में 'अचित' कहा है जिससे दोनों प्रकार की सृष्टियाँ हुई हैं।

इसके अनुसार हम देखते हैं कि जहाँ संगीताचार्यों ने दो स्पष्ट सोपान अनाहत और आहत के प्रस्तुत किये थे वे यौगिक, तांत्रिक, और दार्शनिक पारिभाषिक शब्द रूपों में, प्रथमत: एक आदि शक्ति की स्थापना करते हैं, उसके अनन्तर ही सृष्टि का विवर्त क्रम आता है जिसमें उसके भेदक्रम होते हैं। इस तरह हमारे सामने तीन वृत चित्र उपस्थित होते हैं। पहला वृत तो आदिरूप नाद अर्थात् महानाद, पर ओडम्, ओंकार, प्रणव, ब्रह्म शिव का है। दूसरे वृत्त में इस आदि रूप का शुद्ध रूप पश्यन्ती, परा सोपानों के स्वरूप अनाहत नाद, महामाया, का और तीसरा वृत अपर मध्यमा वैखरी से मुक्त आहत नाद व माया का है।

बौद्धिक तंत्र साधना में 'बिन्दुसाधन' एक विशिष्ट अंग है। वास्तव में वह तंत्रीय शब्दावली में महासुख की प्राप्ति है। इसमें बिन्दु का उद्भव जिसे निरोध बल से नाभि स्थित निर्माण चक्र में स्थिर तथा धारण करना पड़ता है। इस क्रिया के अभिप्राय में, बिन्दु को उद्बुद्ध कर निर्माण चक्र से उष्णीव कमल तक ले जाना पड़ता है। यौगिक क्रियाओं के समरूप ही यह बिन्दु का उद्बोध वस्तुत: कुण्डलिनी शक्ति का जागरण, एक ही व्यापार है! बिन्दु आत्मा प्राण, जीव का पर्याय है। इस सर्व व्यापार को तांत्रिकों की परिभाषा में, निर्माण चक्र में स्वशक्ति चाण्डाली का जागरण कहा जाता है। इसे मध्य मार्गीय उर्ध्व शक्ति भी कहते हैं। जिस क्षण में इस शक्ति का उदय होता है, उसी क्षण में कपाल कुहर स्थित् चन्द्र बिन्दु से अमृत-धारण प्रारम्भ होता है। इसमें उपाय और उपेय दोनों एकात्म होकर संलक्ष्य के प्रति उन्मुख होते हैं तभी यह जागरण होता है अर्थात् चित्त और सहजानन्द का सम्मिलित साम्य लाभ ही वस्तुतः महासुख राग का उदय है इस ऊर्ध्वोन्मुखी प्रक्रिया में बिन्दु स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ता है। ध्यान देने की बात इधर यह है कि नाद ध्वनि भी क्रमश: स्थूल से सूक्ष्म की ओर गतिमान रहती है। इसमें बिन्दु अपनी अपनी दिशा में तेजोमय स्वरूप में चलता है। फलत: प्रथमत: यह पृथ्वी जल, तेज, वायु के अवतरणों को प्राप्त होता हुआ अंत में चित्त मात्र अथवा शुद्ध ज्योति मात्र रुप में परिणत होकर उष्णीव कमल में बिन्दु के स्थिर होने के साथ ही दिव्यदृष्टि, दिव्य श्रुति का तथा सर्वज्ञत्व और विभुत्व गुण का उदय होता है। इस समय तुरीय दशा का उदय होता है। सिद्धि प्राप्त होने पर साधक का चित्त निर्वाण गामी स्रोत में आपन्न होता है। यही स्रोत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आगे चलकर जीवमुक्ति की अवस्था तक पहुँचा देता है। यही तंत्रीय निर्वाण या परम सिद्धि है इनकी तुरीया-वस्था, अनाहत नाद या महासुख राग अवस्था की ही पर्याय है। इसमें कथित उपाय और उपेय हिन्दू तंत्रों में शरीर स्थित जीवात्मा और मूलाधार चक्र स्थित कुण्डलिनि शक्ति का सम्मिलित प्रयास ही है। बौद्ध तंत्रों का उष्णीव-कमल-लक्ष्य गत प्रयास, सहस्त्रार स्थित परम तत्व परम शिव, ब्रह्म में लय होने की ही प्रक्रिया है।

कहने का सारांश यह है कि 'नाद' मानव शरीर के अंतर्गत वस्तुतः उस 'नाद' का प्रतिनिधित्व करता है जो ब्रह्माण्ड में, विश्व में कहा है। यूरोप के प्राचीन दार्शनिकों को इस व्यापक नाद के अस्तित्व में विश्वास था। वे इसे 'Music of the spheres' 'विश्व का मधुर संगीत' कहते थे। यह संगीत, मन की वृत्ति वहिर्मुखी रहने के कारण, साधना अभिप्रेय है। साधना के फलस्वरूप प्राण कुण्डलिनी के जागृत होने पर ऊर्ध्वोन्मुखी सुषुम्ना में प्रवेश है। इसके मार्ग में नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञा चक्रों से होती हुई अपने अभीष्ट संलक्ष्य तक पहुंचती है।

इस तरह योग तंत्र आदि में किसी न किसी तरह शब्द 'नाद' की उपासना है। शब्द या स्फोट, इसे प्रणव की व्याख्या करते समय पिछले पृष्टों में, प्रणव, के समरूप ही प्रस्तुत किया है।

इस शब्द या स्फोट की सैद्धान्तिक महत्ता स्थापित करने वालों में सर्व प्रथम भर्तृहरि हैं जिन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वाक्य-पदीय' में शब्दाद्वैत वाद का प्रवर्त्तन किया। चूंकि यहाँ हमारा दृष्टि कोण संगीत परक है अतएव इसको विस्तृत व्याप्ति न देकर इसके विषय गत आलेख को ही प्रस्तुत करता हूँ।

इसके आदि तत्वों में या बीजवत् स्वरूप वेद मंत्रों में है। उपनिषदों में तो प्रणवोपासना ही इसका अन्य रूप है। प्रसिद्ध वैय्याकरण पाणिणी ने अपने सूत्रों में इसका उल्लेख कर इसका स्वरूप इस प्रकार 'तदशिष्यं संज्ञा प्रणाम त्वात्' निर्धारित किया है। इसमें 'शब्द' व्यवहार को अनादि बताया है। आदि से आशय ब्रह्म का है। इन सूत्रों के वार्तिककार कात्यायन ने 'सिद्धे शब्दार्थ सम्बधें' कहकर, शब्दार्द्ध को परम सिद्धि-वश प्रस्तुत किया। इसके अनन्तर भर्तृहरि ने "ध्वनिः स्फोटस्य शब्दानां ध्वनिस्तु खलु लक्ष्यते" में एर्द्ध निश्चित् दर्शन की धारा व्याप्त की है। इसका कथन है कि हमारी वागीन्द्रियों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का प्रथम समायोग, श्वास प्रश्वास या श्वास निष्क्रमण और अंगों का संचालन भी तभी होता है जब पूर्व के संस्कारों से नवजातशिशु को स्मृति होती है तब ध्वनि स्फोट के साथ होता है। इस तरह यह नित्य एवं अनादि है। आगे के श्लोकों ये उन्होंने यह तर्क दिया है कि यदि ऐसा होता तो नव-जात शिशु को अपने को व्यक्त करने के लिये ध्वनि 'अ' शब्द का आश्रय न लेना पड़ता। इस तरह यह सिद्ध किया कि शब्द सर्व व्यापक एवं नित्य है। इसका अगला चरण हम वैय्याकरणों का मान सकते हैं। उनका कथन है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु जो शब्दों के द्वारा व्यक्त की जा सकती है उसका अस्तित्व मान्य है। इसके अतिरिक्त कोई भी वस्तु जो शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती, उसकी सत्ता भी स्वीकार नहीं की जा सकती। मूल रूप में इस तरह है— 'यर्द्धत्ते तव्यपरेश्य यन्त व्ययदिश्यते तन्नास्ति' इस तरह शब्द की अंतव्यप्ति शक्ति को ब्रह्म-गुण, रुदृश्य किसी भी परिधि में नहीं बाँधा जा सकता।

शब्द को ब्रह्म की संज्ञा तक ले जाने वालों में मीमांसक और नैयायिक में शब्द, ध्वनि को मानकर काफी समय तक विवाद एवं मत भेद रहा। समय के प्रवाह के साथ दोनों की है महत्ता कम हो गई। यहाँ मैं उसे पूर्ण रूप में प्रस्तुत न कर, केवल उसके सार को प्रस्तुत करता हूँ। उनकी ऐसी मान्यता थी कि यह विश्व अर्थों से निर्मित होने के कारण वास्तविक नहीं है। इसमें यह शब्द ही एक ऐसा है जो हमें सबका अर्थज्ञान कराता है। यहाँ विवाद इस बात पर हो गया कि 'गुरु गोविन्द दोनों खड़े काको लागूँ पाय' अर्थात् शब्द महत्त्तम है या अर्थ।

इसमें मुख से व्यक्त ध्वनि के विषय में मीमांसक और नैयायिक दोनों की बात की अपेक्षा वैय्याकरणों का मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है। उनके अनुसार शब्द या स्फोट, ध्वनि नित्य नहीं, यह आधारवत् है। यह आधार प्रणव है, सारा विश्व जिसकी अभिव्यक्ति है। यह शब्द तत्व विश्व का कारण है। इसका साम्य हम शंकर के अद्वैत ब्रह्म से कर सकते हैं। स्फोट वादियों का शब्द ब्रह्म, शुद्ध ब्रह्म का पर्याय है। इसकी पुष्टि में ऋग्वेद में प्रतिपादित इसकी महत्ता में व्यक्त श्लोक दृष्टव्य है:—

"वागेवार्थम पश्यति वाग्ब्रवीति वागेवर्धम् सान्निहिपम् सन्तनीनि।
वाचैत विश्वम् बहु रूपम् बिद्धम् तदेतदेकम् प्रतिज्योपमुङक्ते।।"

और आगे पूर्ति में देखिए:—

"वागेव विश्वा भुवनानि जज्ञे वाच इतसर्वममृतम् भमिम् च।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके अनुसार यह विश्व शब्द से विकसित हुआ है। अद्वैत वादी शंकर का एक पद्य भी इस संबंध में द्रष्टव्य है:—

"नित्येभ्य: शब्देभ्यो देवदिव्य वीना प्रणव इत्यविरुद्धम् ।
नित्येभ्य: शब्देभ्यो देवदिव्यवर्ताना संभव इत्यविरुद्धम् ।"

अर्थात् ऋषियों ने वाणी को अपन्न नहीं किया अपितु जो वाणी का स्वरूप पहले से ही विद्यमान था उसी को पुनः प्राप्त किया था। भर्तृहरि का एक श्लोक इस विषय में और देखिए:—

'अनादि निधनं ब्रह्म शब्दस्तत्त्वं यदक्षरम् ।
निवर्त्तते ऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यत: ॥

इस श्लोक में ध्यान देने की बात यह है कि विश्व को शब्द ब्रह्म का विवर्त कहा है, परिणाम नहीं।

अभी तक आपने शब्द ब्रह्म के संवर्त्त विवर्त्त रूप को जाना है अब आप 'शब्द ब्रह्म की अनुभूति के विषय में भी जान लीजिए। वाणी का पिछले पृष्टों में उल्लेखन हुआ है। इस शब्द ब्रह्म की अनुभूति भी तदनुरूप ही है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १६४वें सूत्र के १०वें मंत्र में इस प्रकार दिया है:-

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मिणा ये मनीषिण: ।
गुहात्रीणि निहिता नेंगयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥

अर्थात् शब्द या वाणी के, परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी ये चार रूप हैं। इनमें से परा मूलाधार में है, पश्यन्ति नाभि में है, मध्यमा हृदयाकाश में है और जो हम बोलते हैं, यह वैखरी है।

शब्द ब्रह्म की अनुभूति में प्रणवोपासना 'नेदिष्ठ ब्रह्मणो यदोङ्कार इति' कथित, एव योग और शुद्ध भाषण सहायक हैं। शब्द का यही दर्शन है। इसके लौकिक अनुभूति पक्ष में दो भेद माने हैं। पहला ध्वन्यात्मक और दूसरा वर्णात्मक, ये क्रमशः वैखरी और रेहमम्मा से अयिजात्य संभूत हैं, यही वैयाकरणों की दृष्टि में स्फोट है। इस स्फोट में पदगत कार्यों के आभास क्रम को ग्रहण न कर, श्रोता उसके समस्त व्यंजक रूप को लेता है। लघु मंजूषा में अभिव्यक्त श्लोक का भाव इस संबंध में दृष्टव्य है—"मध्यमया कृति नाशः स्फोटो व्यंजक उच्चते।" स्फोट का अर्थ "स्फुटत्यर्थों ऽस्मिनिति स्फोट", अर्थात जिसमें या जिससे अर्थ प्रस्फुटित हो वही स्फोट है।

साहित्य शास्त्र में व्यवहृत शब्द और शक्ति के रूप, संगीत में व्यक्त एवं आध्यात्मपरक अर्थ से भिन्न, तीन शक्तियों, अभिधा लक्षणा और व्यंजना से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिप्रेत है। काव्य या काव्य का रूप, शब्द और अर्थ से निर्मित है। शब्द के विना काव्य का जन्म ही संभव नहीं है। किन्तु संगीत में इन सब रूप विद्याओं की सीमा से अतिव्याप्त आशय है। वह सर्वथा देश काल के वन्धनों से मुक्त सार्व भौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। उसकी विश्व-व्यापक अन्विति है। साहित्य में प्रयुक्त शब्द वैखरी के उत्स से निसृत है या शब्दों का आधार वैखरी वाणी है। स्वरों का आधार मध्यमा वाणी है। मध्यमा, पश्यन्ती के व्यक्त विमर्श का परिणाम है। मध्यमा वाणी स्वर रूप में या नाद रूप में प्रस्फुटित होकर श्रवणेन्द्रिय ग्राह्य है। संगीत में स्वरों की सत्ता अलग नहीं रहती अपितु उनका समवेत स्वरूप नाद ही संलक्ष्य होता है।

गान क्रिया प्रायः मध्यमा वाणी से ही संपन्न होती है। ऐतरेय ब्राह्मण में वेदों के उच्चारण के विषय में स्पष्ट लिखा है कि वेदों में व्यक्त वैखरी का उच्चारण मध्यमा वाणी से करना चाहिये। इस संबंध में वेद का ही उदाहरण समीचीन है। "मध्यमा वाचा शसत्यात्मानमेध तत्सस्कुरनते।" अर्थात् इनके उच्चारण में मध्यमा वाणी का प्रयोग ही अभिप्रेत है। मंत्र की सिद्धि तभी हो सकती है। यही कारण है कि ऋग्वेद गानलयवद्ध और स्वर वद्ध है। साम वेद तो स्पष्टतः स्वर संगीत का परिप्लावित स्वरूप ही है।

आज के सभी पाठक यह भली प्रकार जानते हैं कि मनोरंजन का उत्तम साधन संगीत है। इससे मनुष्य का हृदय सदैव उल्लसित रहता है। मानव के विकास के विषय में यह सर्वमान्य सत्य है कि समाज को सर्वांगीण उन्नति के पश्चात् ही काव्य और संगीत आदि का ज्ञान हुआ होगा। वेद, मानव सभ्यता के अति-अतीत की प्राचीनतम सिद्धि है। वेद स्वयं काव्य रूप है। वेदों के सम रूप आज विश्व में कहने को कुछ भी नहीं है। इसके काव्य रूप के साथ संगीत की विद्या की भी अवस्थापना स्पष्ट शब्दों में निम्नवत् करनी होगी।

इस वैदिक काल में संगीत का श्रेयस् प्रचार था, यह हमें मानने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है। इसके प्रमाण हमें वेदों से भली प्रकार मिलते हैं। 'ऋग्वेद में मृदंग, वीणा, वंशी, डमरू आदि वाद्य यंत्रों का उल्लेख मिलता है। इन वेदों के यज्ञों में साम गायन के लिए उद्गाताओं की नियुक्ति होती थी, जो प्रतिक्षण वीणा वाद्य के द्वारा सामगायन किया करते थे। इस सामगायन में वीणा और मृदंग स्वर ताल के साथ बजते थे। सांत स्वरों के उदात्त, अनुदात्त, स्वरित तीन भेदों में तीन ग्रामों के साथ, श्रुति, मूर्च्छना और तानों को साम मंत्रों के द्वारा प्रकट किया जाता था जिससे अति प्राकृत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आनंद की सृष्टि होती थी।

यदि संगीत विकास की दृष्टि से विचार करें तो ये याज्ञिक अर्थात् यज्ञ क्रिया कराने वाले याज्ञिकों ने संगीत का प्रचार और प्रसार दोनों ही सत्‌रूप में किया। इनके मूल भाव में आध्यात्मिक भावना संकल्प-वत् रही जिस कारण से इन याज्ञिकों ने संगीत के स्तर को, या विकास कार्य को एक श्रेष्टतम् गति प्रदान की। इन याज्ञिकों के द्वारा उत्पन्न हुए सात स्वरों के अतिरिक्त आज तक विश्व का कोई संगीतकार आठवाँ स्वर निःसृत नहीं कर सका। तथा ऐसा ही, वीणा सदृश वाद्य यंत्र के विषय में भी है कि आज भी इसके समान-धरातल, पर समस्त विश्व में कोई दूसरा वाद्य यंत्र कोई भी वादक नहीं बना सका। इस वीणा की वेदों में वहुत चर्चा है और यह अपने समय में प्रसिद्धि-प्राप्त पूर्ण विकास पाया हुआ वाद्य यंत्र था।

जर्मन के नामी-ग्रामी विद्वान् 'वेवर' जिन्होंने भारतवर्ष में रहकर भारतीय साँस्कृतिक, प्राचीन एवं अर्वाचीन गति विधि के वैज्ञानिक विश्लेषण में सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भाग लिया है, उन्होंने भारतीय साहित्य नामक पुस्तक में संगीत के सात स्वरों के विषय में अपना मतं व्यक्त किया है कि हिन्दुओं के सात स्वर, स, रे, ग, म, प, ध, नि, की नकल ईरानियों ने की, और दो, रे, नि, क, सो. ल, सि के रूप में परिवर्तित किया। फ़ारस वालों से 'गिड़ों' नामक अंग्रेज ने इनको दो, रे, नि, फ, सोल, लो, री कर दिया। इसी प्रकार फ्रान्सीसियों का 'ग्राम' और अंग्रेजों का 'ग्रेट' शब्द भी संस्कृत के ग्राम और प्राकृत के 'गम' का रूपान्तर हैं। अतः वेवर के इस कथन से पूर्णतया स्पष्ट हो जाने के साथ ही यह मान्यता भी स्थापित हो जाती है कि यह विद्या याज्ञिकों की ही है। जिसका कि विवर्तक्रम वैभिन्य के साथ अन्यान्य देशों में परिवर्तित तथा परिवर्धित रूप में हुआ।

वेदों में प्राप्त संगीतात्मकता के विषय में केवल 'कुछ' कह देना ही यथेष्ट नहीं है। वास्तव में इन वेदों में ऋषियों महर्षियों को आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति जिस रूप में हुई है, उसका स्वरूप ही गीतात्मकता को लिए हुए है। इनके सूत्रों का प्रणयन ही इस ढंग से किया गया है जिसमें उनके हृदयस्थ अनुराग एवं सौन्दर्य भावना को संगीतमय रूप सहज ही मिल गया है। इसमें उदात्त अनुदात्त और स्वरित स्वरों के विधान के द्वारा संगीत तत्त्व का समावेश हुआ है, जिससे कि इसका पाठ विना लय और स्वर के संभव नहीं है। यह अपने आप में इतना पूर्ण है कि तनिक भी परिवर्त्तन से अर्थ का अनर्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो जाता है। सम्पूर्ण का तात्पर्य विपर्यय हो जाता है तथा वह भेद समस्त उत्पन्न-सौन्दर्य को नष्ट कर देता है। अतः ऐसा मान्य है कि इस उदात्त अनुदात्त और स्वरित के विधान द्वारा वेदों का प्रत्येक सूत्र कहीं भी असंतुलित नहीं होने पाया है।

ऋग्वेद में और तैत्तरीय यजुर्वेद में उदात्त को मुख्य स्वर माना गया है। इसमें उदात्त स्वर का कोई अपना चिन्ह नहीं होता है वरन् यह अपने से पहले आए हुए अनुदात्त से जिसका चिन्ह '—' नीचे आड़ी रेखा का होता है तथा अपने से पश्चात् आने वाले स्वरित चिन्ह '—' खड़ी रेखा होती है, से जाना जाता है। जैसे 'अग्निमीले पुरोहिते (ऋग्वेद १,१,१,) में प्रथम शब्द में प्रयुक्त आड़ी रेखा के ऊपर का 'अ' अनुपात है तथा खड़ी रेखा से चिन्हित भी' स्वरित है। इसमें 'अ' के बाद का और 'भी' के पहले का 'ग्न' उदात्त स्वर है। इसे स्पष्ट सरल शब्दों में यों कहेंगे कि संगीत में व्यवहृत ताल और स्वर के अनुसार जिसका उच्चारण किया जाता है उसमें चढ़ाव उत्तार, आरोह अवरोह अवश्य होता है। यही चढ़ाव-उत्तार की स्थिति अनुदात्त उदात्त और स्वरित, थी वह ऋग्वेद में है।

ऋग्वेद का पाठ 'संहिता पाठ' और 'पद-पाठ' के दो रूपों में है। संहिता-पाठ के अंतर्गत शब्द की समस्त योजना का रूप है तथा पद पाठ में स्वर और लय के समन्वित स्वरूप का पाठ होता है। इस तरह पद-पाठ में स्वर और लय के विधान को दृष्टि में रखकर पाठ करने की प्रक्रिया, इसी संगीतात्मकता की ओर संकेत करती है। वेदों में सर्वाधिक प्रयुक्त गायत्री छंद यथा नाम तथा गुण है। गायत्री का अर्थ होता है जो गाया जा सके, अर्थात् गेयता पर ही इस छंद की महत्ता निर्भर है। इस गायत्री छंद के अतिरिक्त कई मार्मिक अंश अपनी गेयता के लिए प्रसिद्ध है। इन अंशों में, सर्व प्रथम उषा विषयक ऋचाओं में संहित गीतात्मकता द्रष्टव्य है। इस प्रस्तुत अंश से गीतात्मकता के साथ ही भावों की मौलिकता भी दर्शनीय है:—

एषा शुभ्रा न तन्वो विदानो र्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्॥
एषा प्रतीची दुहिता दिवो नृन्योषेव भद्राणि रिणीते अप्सः।
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः।

(ऋग्वेद ५+५/८०)

इस प्रस्तुत ऋचा में गीत तत्त्व के साथ ही भाव का सौन्दर्य भी द्रष्टव्य है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उषा पूर्व दिशा में आकर इस प्रकार खड़ी हो गई है जैसे अभी स्नान करके उठी हो और वह अपने अंगों के सौन्दर्य से अभिज्ञ है इस तरह वह अपने आपको हम से परिचित करा देना चाहती है आदि-आदि ।

यम-यमी का प्रसंग जो ऋग्वेद के नवें दसवें मण्डल में है अपनी गीतिमत्ता के कारण विशेष महत्ता रखता है । इसमें भाव की अपेक्षा एक कथा का नियोजन किया गया है जिसमें कि हृदय का अंतर्द्वन्द्व, जो कि अति ही सजीव और स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत हुआ है, इसके स्वरूप गुणों की वृष्टि करता है । पुरूरवा और उर्वशी का प्रसंग भी इसी धारा में उल्लेखनीय है । यह प्रसंग संवाद के रूप में आया है । इन कुछ ही प्रकरणों से ऋग्वेद की गीतात्मकता का परिचय पूर्ण रूप से मिल जाता है ।

सामवेद में प्राप्त संगीतात्मक तत्वों के अन्वेषण से पूर्व यह जान लेना अति आवश्यक है कि सामवेद की रचना का मुख्य उद्देश्य उपासना के योग्य संगीत गुण वाली ऋचाओं का एक स्थान में संग्रहीत करना ही था जिसके द्वारा तत्कालीन वातावरण को माधुर्य और भावना से ओत-प्रोत बनाया जा सके, इसी का परिवर्तित रूप आगे चलकर हमें 'सांङ्गीतिक मण्डलियों' तथा सामवेदीय गीतकारों के रूप में मिलता है । सामवेद पूर्वाचिक और, उत्तराचिक इन दो भागों में मिलता है । आर्चिक शब्द का अर्थ होता है गेय मंत्रों का संग्रह । जैसा कि अभी कहा जा चुका है कि सामवेद गेय मंत्रों का संग्रह है । ये मंत्र मूल रूप में ऋग्वेद तथा अन्य वेदों से लिए गए हैं तथा उन्हें एक विशिष्ट संगीतात्मक विद्या में संजो कर रखा गया है इसमें स्वरों का अंकन ऋग्वेद से भिन्न भिन्न रूप में हुआ है यह नियम अथर्ववेद और यजुर्वेद में भी भिन्न प्रकार से पाला गयाहै । सामवेद में उदात्तादि स्वरों का अंकन रेखाओं के स्थान पर १, २, ३, संख्याओं के द्वारा किया गया है । यहाँ १ का तात्पर्य उदात्त स्वर से २ का अनुदात्त स्वर से और ३ का स्वरित से है । सामवेद में कहीं कहीं चौथे स्वर प्रचय या एक श्रुति का भी उल्लेख आया है । प्रचय के संबंध में यह कहा गया है कि उदात्त और अनुदात्त के एकीभाव से बने स्वर के आरम्भिक अर्थ मात्रा का अंश स्वरित है तथा उसका शेषांश प्रचय में आने वाली सामवेदीय गीत परम्परा में सामवेद का सामगान सात स्वरों में प्राप्त होता है ।

सामवेद के मंत्रों की ऋचाओं को गेय गीतात्मकता में परिणत करने के लिए कुछ पद जोड़े जाते हैं, जिन्हें 'स्तोभ' कहा जाता है । वैसे हा, उ, हों इ,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओ हो वा, ओ हो २ ओ हा ३, ओ वा ३, इत्यादि । ये स्तोभ कुछ ऐसे ही अक्षर और पद हैं जिन्हें कि आलाप के लिए गेय पदों में राग-रागिनी का गान करने वाले गायक जोड़ दिया करते हैं । सामगान के वास्तविक रूप को समझने के लिए आपके समक्ष एक मूल ऋचा पर आधृत गान को प्रस्तुत करता हूँ जिसका नाम 'सेतुसाम' है । मूल ऋचा का स्वरूप निम्न है:—

३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३.१ २ ३ १ २ ३ १ २
अहमास्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वंदेवेभ्यो अमृतस्य नाम ।
२ ३ १ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ २ उ. ३ १ २ ३ १ २
यो मा ददाति स इ देवमा व दह: मन्नमन्नम दन्तमद्मि ।

अर्थ की दृष्टि से इस ऋचा का संबंध आत्मा से है यह अपने मूल रूप से ऋग्वेद में नहीं है । यह सामवेद में ही अपने मूल रूप में है तथा सामवेद की आरण्यक सहिता में प्राप्त होती है । इस मूल ऋचा में सामगान के लिए अतिरिक्त पदों को जोड़ा गया है उसका विस्तार निम्न प्रकार है:—

हा उ हा उ हा उ
सेनू स्तर सेतु स्तर सेनु स्तर । (ख)

(क) दुरस्तान दुरस्तान दुरस्तान ।
दानेनादानम् दानेनादानम् दानेनादनम् ॥
हा उ हा उ हा उ
अह्यस्मि प्रथमजाऽ२३ स्याऽ३४५ ।

(क)
अक्रोधेन क्रोधम अक्रोधेन क्रोधम अक्रोधेन क्रोधम ।
हा उ हा उ हा उ
मूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाऽ२३ याऽ३४५ ॥

(ख)
श्रद्धमाश्रद्धाम् श्रद्धमाश्रद्धाम् श्रद्धमाश्रद्धाम् ।
हा उ हा उ हा उ
यो मा ददाति स इदेव माऽ२३ वा ३४५त् ।

(क)
सत्येनानृतम् सत्येनानृतम् सत्येनानृतम् ।
अहमन्नमन्नम दन्त माऽ२३ भि ३४५ ।
हा उ हा उ हा उ
ऐषा गति ऐषा गति: ऐषा गति:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतदमृतम् एतदमृतम् एतदमृतम् ।
स्वर्गच्छ स्वर्गच्छ स्वर्गच्छ ।
ज्योतिर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ ज्योतिर्गच्छ ।
सेतुं स्तीर्त्वा चतुरः २३४५ ॥

इस तरह सामगान का सर्वथा सीधा संबंध संगीत शास्त्र से है । नारदीय शिक्षा के अनुसार सामवेदीय सप्त स्वरों की गणणा अंगुलियों पर संकेत से करते हैं । अंगूठे के अग्रभाग में क्रुष्ट, निम्न भाग में प्रथम स्वर, तर्जनी अंगुली में द्वितीय या 'गन्धार स्वर, मध्यमा में तृतीय स्वर या ऋषभ, अनामिका में चतुर्थ स्वर या षड्ज, कनिष्ठका के निम्न भाग में पंचम स्वर या निषाद और अग्रभाग में षष्ठ स्वर या धैवत का संकेत किया जाता था ।

संगीत में जिस तरह मन्द्र, मध्य और तार तीन सप्तक होते हैं उसी प्रकार सामगान में भी मन्द्र, मध्य और उत्तम ये तीन स्थान सात स्वर के माने जाते हैं ।

वेदों में प्रमुख रूप से तीन प्रकार के स्वरों का ही उल्लेख है उदात्त अनुदात्त और स्वरित किन्तु ये तीनों आगे चलकर सात में विवर्त हुए । वेदों के समय से इन सात स्वरों का समभाव तीन में ही था । जिनका कि आविर्भाव आगे चलकर एक के वाद एक का होता गया । इस प्रकार वेद एवं वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त स्वरों के विषय में अनेक उल्लेख मिलते हैं । इनमें एक स्वर से लेकर सात स्वरों तक का आलेखन है । एक स्वर का विधान कतिपय ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है । जिसे 'तान स्वर' या प्रावचन' स्वर भी कहते हैं । तान स्वर का अर्थ एक श्रुति स्वर भी किया गया है । वाजसनेय प्रति शाख्य १/१२८ में केवल दो स्वरों का ही उल्लेख मिलता है जो कि इसके व्याख्याकार के मतानुसार उदात्त और अनुदात्त ही हैं । कई संहिताओं में उदात्त अनुदात्त और स्वरित तीन स्वरों का उल्लेख प्राप्त होता है । स्वरित के विषय में कुछ प्राचीन विद्वानों की धारणा है कि उदात्त और अनुदात्त का एकीभाव ही स्वरित है । इन तीन स्वरों का विधान ऋग्वेद में विस्तृत रूप से प्राप्त है । जिसका कि उल्लेख 'अग्नि भीले पुरोहित ·····' में किया जा चुका है । तैत्तिरीय संहिता में चार स्वरों का भी उल्लेख मिलता है । इन चार स्वरों में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय या एक श्रुति है । नारदीय शिक्षा ७/१८ में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित प्रचय और निघात नामक पाँच स्वरों का वर्णन उनके एक सूत्र में प्राप्त होता है:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदात्तश्चानुदात्तश्च 'स्वरित प्रचिते तथा ।
निघातंश्चेति विज्ञेयः स्वर भेदस्तु पञ्चमः ॥

सामवेद में ६ स्वरों वाले सामगानों की संख्या बहुतायत से प्राप्त है किन्तु ७ स्वरों वाले सामगानों से कम है। महाभाष्य में सात स्वरों के विषय में इस प्रकार लिखा है "सप्त स्वरा भवन्ति—उदात्त, उदात्ततर, अनुदात्त अनुदात्ततर, स्वरितः, स्वरिते च उदात्तः (सोऽन्येन विशिष्टः, एक श्रुति सप्तमः) अर्थात् उदात्त, उदात्ततर, अनुदात्त, अनुदात्ततर, स्वरित, स्वरित के आरंभ में विद्यमान उदात्त (अन्य उदात्त से भिन्न) और एक श्रुति ये सात स्वर होते हैं। सामगानोपयोगी सात स्वरों का विधान नारदीय शिक्षा में मिलता है, वे सात स्वर हैं षड्ज, ऋषभ, गंधार मध्यम्, पंचम धैवत निषाद तैत्तिरीय प्रतिशाख्य २३/१४ में इन्हें क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र, और अतिस्वार्य कहा है नारदीय शिक्षा १/१२ में भी इन्हीं नामों से साम स्वर का विधान दिया गया है।

वेदों के संगीत तत्व के उपरान्त, वैदिक साहित्य में सात स्वरों के आविर्भाव में आई हुई साङ्गीतिक विद्या का स्पष्ट चित्राङ्कन जिसका कि संकेत पूर्व पृष्टों में किया जा चुका है कि संगीत दो रूपों में प्राप्त है। प्रथमतः अनाहित संगीत जिसे नाद, अनाहत नाद आदि कहा गया है, यह मार्गीय संज्ञा से अभिहित है। जिसकी कि साधना, योगी ऋषि, मुनि, यति, प्रज्ञावान ही कर पाये हैं। जिसकी साधना के अंतर्गत ब्रह्म मोक्ष आदि प्राप्ति ही मुख्य लक्ष्य रहा है। ऐसा संगीत केवल कुछ तक ही सीमित होकर रह गया। इसकी प्रति क्रिया स्वरूप बाधित संगीत जन साधारण में आया, जिसमें आहतनाद का प्रयोग हुआ। यह संगीत देशीसंगीत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि मार्गी सगीत कतिपय योगियों, सिद्धों और तपस्वियों तक ही सीमित रहा जिनका ध्येय केवल मोक्ष की प्राप्ति ही था। जनसाधारण एवं भक्तजन जो घोर साधना नहीं कर सकते थे, उन्होंने भी किसी न किसी रूप में नाद का ही आश्रय लिया। यह वही आहत नाद है जिसका प्रयोग देशी संगीत में हुआ और भक्तजनों के लिये भगवद् शक्ति का साधक बना। आहत नाद से अभिप्राय है—वह नाद जो किन्हीं दो वस्तुओं के परस्पर संघर्ष से उद्भूत हो। यह नाद मुक्तिदायक तो है ही साथ ही रक्तिदायक भी है। संसार का हर प्राणी इस नाद से किसी न किसी रूप में सम्बद्ध है।

संसार में सुख और दुःख का चक्र सदैव ही गतिमान रहता है, कोई भी जीव इससे छुटकारा नहीं पा सकता। मनुष्य की सांसारिक इच्छायें जब पूर्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होती हैं, वे जो बाह्य रूप से तो सत्य, नित्य एवं आनन्दप्रद परन्तु ज्ञान की दृष्टि से देखने पर मिथ्या तथा क्षणभंगुर ही होती हैं, परन्तु मानव अज्ञान-वश उनमें लीन हो कुछ समय के लिये सुख तथा आनन्द का अनुभव करता है। इन इच्छाओं की पूर्ति पर प्राप्त हृदयोल्लास को वह संगीत के माध्यम से प्रकट करता है अर्थात् उसके सुख एवं आनन्द की अभिव्यक्ति संगीत द्वारा होती है। ये सुख की घड़ियाँ प्रत्येक पुरुष के जीवन में अनेक बार आती हैं उदाहरणतया विवाह, शिशु जन्म, नाम संस्कार, मुंडन संस्कार तथा ऐसे ही शुभ अवसर। इन अवसरों पर यदि मनुष्य संगीत का आश्रय न ले अथवा संगीत को न अपनाये तो वह आनन्द की घड़ी नीरस तथा शून्य सी प्रतीत होगी। अतएव संगीताभाव में मानव का जीवन नीरस तथा अधूरा है। दीपावली, दशहरा, रामनवमी, शिवरात्रि आदि अनेक पावन पर्वों पर मानव का मन आनन्द विभोर हो उठता है और स्वतः ही वह नाच उठता है। उसका उन्मत्त हृदय स्वाभाविकतया किल्लोल करने लग जाता है और वह गुनगुनाने लग जाता है।

इस परिवर्तनशील संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। ऋतुयें परिवर्तित होती हैं, दिन और रात बदलते हैं, यहाँ तक कि मानव की देह भी परिवर्तन को प्राप्त होती है। ग्रीष्म के पश्चात् वसन्त, वसन्त के पश्चात् पुनः ग्रीष्म ऋतु आती है, अतएव ऋतुयें स्थायी न होकर बदलती रहती हैं। दिवस रात्रि में और रात्रि पुनः दिवस में परिवर्तित होती है। तद्वत मानव की देह भी अनेक अवस्थाओं को प्राप्त होती है जैसे शिशु से बालक, बालक से युवक और युवक से वृद्ध। यही प्रकृति का नियम है। संसार के इस उतार चढ़ाव में मानव को संघर्ष करना पड़ता है। जहाँ मानव सुख प्राप्त करता है वहाँ उसे अपनी इच्छा के प्रतिकूल दुःख के दिन भी देखने पड़ते हैं। दुःख में वह जब पीड़ानुभव करता है तो, उस समय वह उसका (दुःख का) निवारन भी संगीत द्वारा ही करता है। उसके मित्र, सगे सम्बन्धी संकट की स्थिति में जब उसका साथ छोड़ देते हैं तो ऐसे समय में संगीत मानव का सच्चा साथी सिद्ध होता है, उसको एकाकीपन का आभास नहीं होने देता और दुःख को दूर करने में भी समर्थ होता है। सारांश यह है कि सुख में, दुःख में संगीत मानव का साथ देता है। दुःख के समय उसके हृदय के बोझ को हल्का करता है और सुख में उसके आनन्दित हृदय को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अतएव मानव इन दोनों अवस्थाओं में संगीत के आश्रित है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हर एक व्यक्ति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से, संगीत से सम्बन्धित है, हर अवस्था में जाने अनजाने रूप से संगीत का उसमें निवास है। यहाँ तक कि बालक, जिसको संसार की कोई भी वस्तु आकर्षित एवं अपने अधीन नहीं कर सकती, वह भी संगीत के नाद से वंचित नहीं। हम सभी जानते हैं कि वे खिलौने जिनसे ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं शिशुओं को विशेष रूप से प्रिय होते हैं। इसी प्रकार यदि जब शिशु हठ पूर्वक रोना प्रारम्भ कर देता है, और किसी भी यत्न द्वारा वह चुप नहीं होता, तो उस समय उसकी माता संगीत का आश्रय लेती है और अपने कंठ से अनेक प्रकार की ध्वनियाँ बोलना प्रारम्भ कर देती है, या किसी न किसी वस्तु पर आघात करके उससे नाद उत्पन्न करती है। परिणाम यह होता है कि वह शिशु जो किसी भी प्रकार से बहल नहीं रहा था अब तुरन्त ही ध्वनियों के श्रवण से आनन्दित हो, चुप हो जाता है और हँसना प्रारम्भ कर देता है। इससे स्पष्ट हुआ कि अबोध शिशु पर भी नाद का कितना विलक्षण प्रभाव पड़ता है।

प्रत्यक्षानुभव द्वारा इस तथ्य से भी हम सब परिचित हैं कि बालक चाहे कार्यनिमग्न हों, अर्थात् वे खा रहे हों या खेल रहे हों, घर से बाहर यदि उन्हें किसी बाजे की सुनाई पड़ जाती है तो उसे सुनने के लिये अत्यन्त व्याकुल हो बड़ी शीघ्रता से उस ओर भागते हैं जहाँ से बाजे की ध्वनि सुनाई पड़ती है। बालकों को नाद इतना अधिक आकर्षित कर लेता है कि वे सब कुछ भूलकर भयरहित हो दौड़ने लग जाते हैं। बन्दर व रीछ का तमाशा दिखाने वाले व्यक्ति की डुगडुगी की आवाज के सुनते ही वे तमाशा देखने के लिये दौड़ पड़ते हैं।

इसके अतिरिक्त संगीत बाल्यावस्था में बुद्धि के विकास में भी सहायक सिद्ध होता है। बालकों को यदि हम भाषण द्वारा कुछ समझाने का प्रयत्न करें तो उसे समझने तथा कंठस्थ करने में वे असमर्थ रहते हैं परन्तु यदि संगीत के माध्यम से उन्हें समझाने का प्रयास करें तो हम सफल होते हैं और बच्चे बड़े चाव से गाते गाते कंठस्थ कर लेते हैं। जिस बालक का मन शिक्षा ग्रहण करने में नहीं लगता, वह भी संगीत द्वारा आकर्षित हो अपने चंचल मन को स्थिर करके गायन को गाने व सुनने में निमग्न हो जाता है। ऐसे ही चंचल बालक का मन धीरे धीरे स्थिर हो जाता है और वह विद्याध्ययन में भी मन लगाना प्रारम्भ कर देता है। यही कारण है कि आजकल छोटे २ बच्चों को छोटी छोटी कविताओं के गायन द्वारा कई ज्ञातव्य विषयों ज्ञान कराया जाता है। बालकों को जब संस्कृति का परिचय संगीतात्मक पदों द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराया जाता है तो वे सहज ही बड़ी सरलता पूर्वक उन्हें कंठस्थ कर लेते हैं ।

संगीत के स्वरों को गाने अथवा समझने के लिए चतुर एवं सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है । इसलिये जब भी कोई इन स्वरों को गाने या सुनने का प्रयत्न करता है तो उसकी बुद्धि चंचलता को त्याग उन स्वरों में खो जाती है । इस प्रकार संगीत की शिक्षा द्वारा बालकों की बुद्धि सूक्ष्म एवं तीव्र हो जाती है, वे प्रत्येक वस्तु पर सोच विचार करने लग जाते हैं । ऐसे ही सूक्ष्म एवं चतुर बुद्धि वाले बालक ही भविष्य में जाकर देश तथा धर्म की रक्षा करने में सहायक सिद्ध होते हैं । मुझे स्मरण है कि एक बार लाला लाजपतराय जी ने भाषण में कहा था कि प्रत्येक भारतीय को संगीत की शिक्षा होना आवश्यक है क्योंकि संगीतकार चतुर, बुद्धिमान एवं दूरदर्शी होते हैं । विशेषकर, इन्हें समय की पहिचान होती है । वे जानते हैं कि क्या समय है और क्या करना उचित है ? ऐसे चतुर तथा बुद्धिमान, पुरुष का जीवन श्रेष्ठ होता है कारण यह कि वह जो कुछ भी करेगा वह समय की माँग के अनुकूल होगा, जिससे उसकी समाज में प्रतिष्ठा होगी । इसके अतिरिक्त वह देश व धर्म की रक्षा करने में भी सहायक सिद्ध होगा । कई बार हम अनुभव करते हैं कि जब भी कोई व्यक्ति समय के विपरीत कार्य करता है तो वह कितना असंगत एवं हानिकारक सिद्ध होता है ? ऐसा करने पर उसके सम्मान को कितनी क्षति पहुँचती है ? इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सूक्ष्म तथा चतुर बुद्धि वाला व्यक्ति ही देश, धर्म एवं जाति का रक्षण कर सकता है, समाज में वह यश और सम्मान प्राप्त करता है । सारांश यह है कि मानव जीवन को सफल एवं श्रेष्ठ बनाने में संगीत कला का महत्वपूर्ण स्थान है ।

केवल यही नहीं कि संगीत मानव के दुःख में एवं सुख में सहायक होता हैं, यही नहीं कि यह कला बुद्धि के विकास में सहायक होती है, यही नहीं कि अबोध शिशु तथा बालक भी इसके द्वारा आकर्षित होते हैं अपितु जैसा कि हम ऊपर भी वर्णन कर चुके हैं कि देश के अच्छे नागरिक बनाने में भी इस कला का योगदान सराहनीय है । और तो और देश में संकट की स्थिति आ जाने पर यह कला देश भक्तों को त्याग बलिदान और आत्मसमर्पण करने के लिये प्रेरित करती है । अपने देश की शत्रुओं से रक्षा करने वाले वीर सैनिकों में वीर भावनाओं को जागृत करने वाला भी संगीत ही है । वीर जवान इन्हीं भावनाओं से ओत प्रोत होकर हँसते हँसते देश के लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राणों की बलि दे देते हैं। यह प्रसिद्ध किंवदंती है कि एक बार सेना को पुल से पार होना था, परन्तु पुल कच्चा था इसलिये सेना उस पुल से पार होने में असमर्थ थी। वह पुल सेना की जोशभरी पदचापों के कारण बार २ टूट जाता था। यह देखकर बैण्ड के प्रतिनिधि ने कैप्टेन से कहा कि यदि मेरा कहा मानें तो यह पुल नहीं टूटेगा और सेना भी कुशलता से पार हो जायगी। उसने कहा कि बैण्ड न बजने दिया जाय, और सैनिक भी मार्च न करते हुये सामान्य रीति से चलें। कैप्टेन ने ऐसा ही आदेश दिया और सेना भली प्रकार पुल से पार हो गई। कैप्टेन के पूछने पर ज्ञात हुआ कि जब बैण्ड बजता था तो सेना में जोश आ जाता था और इस प्रकार उनके पदचापों की ध्वनि के प्रभाव से पुल टूट जाता था; अत. सिद्ध हुआ कि बैण्ड के कारण युवकों को जोश आ जाता है। वीरता की भावना का संचार सगीत के माध्यम से ही होता है। इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने अपना शंख बजाया तो उसकी ध्वनि इतनी भयंकर थी कि दोनों पक्ष की सेनाओं के हृदय कंपित हो गये। क्या पशु क्या पक्षी जिस २ ने वह ध्वनि सुनी, सभी भयभीत हो गये। इन उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि हर प्रकार की भावना को जागृत करने की सामर्थ्य संगीत के नाद में है। इस अमूल्य कला को किसी भी दृष्टि से परखा जाय वह खरी उतरती है और हर अवस्था में मानव का पूरा साथ देती है।

ग्रामीण युवतियाँ भी अपने जीवन को आनन्दमय बनाने के लिये समय समय पर संगीत का आश्रय लेती हैं। कुँये पर जल भरते समय उनका सगीत कितना मनोहरी होता है। सावन में झूला झूलते समय जब वे गीत गाती हैं तब वह संगीत कितना आकर्षक होता है ? इसी प्रकार खेतों में कड़ी धूप में हल चलाते समय किसान अपने परिश्रम की थकान को संगीत द्वारा भुलाने का प्रयत्न करता है। उधर गड़रिया भी वन में अपनी भेड़ बकरियों को चराते समय अथवा साँझ को घर की ओर वंशी बजाता हुआ प्रसन्नचित्त आता है। श्रमिकगण भी घोर परिश्रम करने के पश्चात् रात्रि में एकत्रित होकर अपने अपने ढंग से गा बजा कर अपनी थकान का परिहार कर प्रातः फिर अपने कार्य पर जाने के लिये तत्पर हो जाते हैं। कहने का अभिप्राय यह कि कोई भी व्यक्ति संगीत से रहित नहीं।

मानव जब जन्म लेता है तब भी हर्षोल्लास से भरपूर संगीत की ध्वनियाँ गुंजरित होती हैं और जिस समय वह प्राणी अपनी देह को त्याग देता है तब भी उसके शोकातुर सगे सम्बन्धी राम नाम की ध्वनियाँ कहते हुए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसका दाह संस्कार करते हैं। अभिप्राय यह कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मानव संगीताश्रित है।

यह तो हुआ संगीत कला का साँसारिक दृष्टि-कोण से मानव जीवन से सम्बन्ध। मानव जन्म प्राप्त करने का ध्येय जो हमारे ऋषि मुनि बताते चले आ रहे हैं वह है—हरि भक्ति अथवा मोक्ष की प्राप्ति। यहाँ भी संगीत ने मनुष्य को अकेला नहीं छोड़ा और भक्तजनों को भी इसके आश्रित होना पड़ा। यही कारण है कि हमारे भक्तों ने हरि नाम कीर्तन की प्रणाली अपनायी। इसमें किंचित भी संदेह की स्थान नहीं कि मानव का मन अति चँचल है। जिस मन को योगी सिद्ध तपस्वी घोर तपस्या करने के पश्चात् भी अपने वश में करने में विफल रहे। ऐसे मन को भक्तजन नादाश्रित हो कर सहज ही वशीभूत कर लेते हैं। मन रूपी गज को वश में करने के लिये नाद एक अंकुश के समान है। यह नितान्त असम्भव है कि एक ही समय में हम गायें भी और हमारा मन कहीं अन्यत्र भ्रमण करे। यदि हम मनोयोग से संगीत की आराधना करें तो यह मन चचलता को त्याग देता है, और यदि मन स्थिर नहीं होता तो हमारा गायन भी भाव शून्य तथा नीरस हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि यदि हम संगीत के नाद में लीन हो जायें, तो मन स्वयमेव ही स्थिर हो जाये। इस ससार रूपी सागर से पार उतरने के लिये नाद रूपी नौका का निर्माण भगवद् भक्तों ने किया।

भगवान् कृष्ण जी कहते हैं:—हे नारद, न तो मैं बैंकुंठ में निवास करता हूँ और न योगियों एवं सिद्धों के हृदय में। मैं सदा वहाँ निवास करता हूँ जहाँ मेरे भक्त सुमधुर गायन करते हैं।

नाहं वसामि वैंकुण्ठे योगिनाँ हृदयेन् च,
मद् भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः।

अभी तक तो हमने संगीत के नाद का मानवजगत् पर प्रभाव देखा। मानव के अतिरिक्त पशु जगत् पर भी इस नाद का यथोचित प्रभाव परिलक्षित होता है। कहते हैं कि एक बार एक सुन्दर बालिका सो रही थी। एक विषैला सर्प उसके निकट आ गया और बालिका को टकटकी लगाकर निहारने लगा बालिका तो सो रही थी उसे इस घटना का लेशमात्र भी ज्ञान न था। परन्तु उसके माता पिता ने सर्प को देखा तो वे भयभीत हो गये और सोचने लगे कि विषधार को किस प्रकार हटाया जाय। इधर उधर से पास पड़ोस के व्यक्ति भी एकत्रित हो गये और उस सर्प को परे हटाने के हेतु अपने अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपाय सुझाने लगे। परन्तु कोई भी युक्ति उचित न जान पड़ी। इसी समय एक वृद्ध पुरुष ने कहा कि सर्प को मारना मत। यदि इसे मारने का प्रयत्न करोगे तो बालिका को डस लेगा। मैं अभी किसी सपेरे को बुला लाता हूँ वह सहज ही बीन बजाकर नाद लहरी द्वारा सर्प को आकर्षित कर लेगा और वह (सर्प) बालिका को छोड़ सपेरे की ओर आ जायगा। इस युक्ति के सुनते ही एकत्रित जनों को कुछ धीरज हुआ। अब वे सपेरे की प्रतीक्षा करने लगे। सपेरे ने आकर बीन बजानी प्रारम्भ की। ज्योंहि बीन की ध्वनि सर्प ने सुनी वह बालिका के पास से हटकर सपेरे के निकट आकर बीन की नाद लहरी से झूमने लगा। इस प्रकार सपेरे ने सहज ही सर्प को वशीभूत कर लिया। यह सत्य ही है कि सपेरा जब भी वन में अपनी बीन बजाता है तो सर्प अपने प्राण की तनिक भी चिन्ता न करते हुए सपेरे के पिटारे में सदैव के लिये बन्दी बन जाते हैं। सर्प के अतिरिक्त अन्य पशु भी नाद द्वारा मोहित होते हैं यह किवंदती प्रसिद्ध ही है कि जिस समय तानसेन और बैजू के बीच प्रतियोगिता हुई तो बैजू ने अपने संगीत द्वारा बन के मृगों को एकत्रित कर उनके गले में पुष्प मालायें पहना दीं और अपना सगीत बन्द कर दिया। संगीत के समाप्त होते ही मृग चौंककर चौकड़ी भरते हुये वन में भाग गये। आजकल हम सुनते हैं कि विदेशों में गऊएँ नाद से प्रभावित होकर अधिक दूध देने लग गई हैं। कहते हैं कि दूध प्राप्त करते समय उन्हें रिकार्ड सुनाये जाते हैं, फलस्वरूप वे अपेक्षाकृत अधिक दूध देती हैं। अतएव उक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि पशुओं पर नाद का पूर्ण प्रभाव होता है और वे भी इसके प्रभाव से वञ्चित नहीं।

इसी प्रकार पक्षी भी नाद ध्वनि द्वारा आकर्षित हो अपनी सारी सुध बुध खो देते हैं। हमारे एक मित्र विख्यात् सितारिये श्री टेक चन्द जी, जिनका दुर्भाग्यवश देहान्त हो चुका है, उनका सितार वादन सुनने का मुझे कई बार अवसर मिला। वे जब भी सितार पर अभ्यास करते, पहले चिड़ियों को दाना डाल देते थे जिससे चिड़ियाँ एकत्रित होकर दाना खाने के लिये आ जातीं तब वे सितार बजाना प्रारम्भ कर देते। सितार के मधुर नाद को सुनकर चिड़ियाँ दाना खाना छोड़ कर मौन होकर बैठ जाती। ज्योंहि सितार वादन समाप्त होता, चिड़ियाँ पुनः दाना खाना और बोलना प्रारम्भ कर देती थीं। जितनी देर सितार वादन होता, उन एकत्रित चिड़ियों में से कोई भी बोलती नहीं थी। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि पक्षी भी नाद द्वारा आकर्षित होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा यह भी सिद्ध हो चुका है कि संगीत का पौधों पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता हैं। संगीत के वातावरण में एक पौधे को फूलने फलने दिया गया और दूसरे पौधे को प्रकृति में पनपने दिया गया। कुछ दिनों के बाद देखा गया कि पहला पौधा दूसरे की अपेक्षा अधिक पनपा। प्रयोगशालाओं में इसी प्रकार के परीक्षणों द्वारा यही निष्कर्ष निकाला गया कि सगीत पौधों की वृद्धि में भी सहायक है।

ऐसा भी देखा गया है कि संगीत द्वारा रोगों का क्षय हो गया। अनेक बीमारियों का उपचार संगीत द्वारा किया जाता है। यदि पागल व्यक्ति को निरन्तर संगीत सुनाया जाये तो उसका पागलपन दूर हो जाता है। इसी प्रकार फॉलिज जैसी बीमारियों का उपचार भी संगीत द्वारा होता है। अति संक्षेप में यह कहना अत्युक्तिपूर्ण प्रतीत नहीं होगा कि जड़-जीव, पशु-पक्षी, चर-अचर, पृथ्वी-आकाश सभी में नाद की व्याप्ति है। और-यदि कोई ब्रह्म का साकार स्वरुप है तो वह भी नाद ही है।

जैसा कि हम पिछले पृष्टों में वर्णन कर चुके हैं कि देशी सगीत में आहत नाद का प्रयोग किया गया। यह आहत नाद भी दो प्रकार का है एक तो वह, जो कि संगीत के लिये उपयोगी है और दूसरा वह, जो संगीत की दृष्टि से त्याज्य है। अब स्वाभाविकतया यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि संगीतोपयोगी नाद कौनसा है और संगीतानुपयोगी नाद के लक्षण क्या हैं? संगीतोपयोगो नाद हम उसे कहते हैं जो सुमधुर, आकर्षक एवं रंजक हो, जो ध्वनि पर्याप्त समय तक टिकी रहे अर्थात् स्थिर हो प्राणी मात्र के हृदय के आह्लादित करे, जो ध्वनि श्रवणप्रिय हो वही सगीत के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसी कथन को संक्षेप में हम यूँ अभिव्यक्त कर सकते हैं कि जिस नाद में नियमितता, स्थिरता और अनुरणन या झंकार हो वही नाद संगीतोपयोगी कहलाता है। यही नाद स्वर श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना आदि का आधार है।

इसी संगीतोपयोगी आहत नाद के तीन भेद कहे गये हैं जिनका संक्षिप्त उल्लेख निम्न है :—

१ नाद का ऊँचा नीचापन,

२ नाद का छोटा बड़ापन,

३ और नाद की जाति अथवा विशेष गुण।

नाद का ऊँचा नीचापन-नाद के ऊँचे नीचेपन से अभिप्राय यह है कि ध्वनि का क्रमानुसार नीचे से ऊपर एवं ऊपर से नीचे की ओर आना, उदाहरण स्वरूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा रे ग म प ध नि सां, इन सात स्वरों का उच्चारण करते समय सा के पश्चात् रे, रे के पश्चात् और ग के पश्चात् म क्रम-पूर्वक नीचे से ऊँचे होते चले जाते हैं। ठीक इसी भाँति तार षड्ज से मध्य षड्ज की ओर आने पर (अवरोह करने पर) स्वर क्रमशः ऊँचे से नीचे होते जाते हैं। नाद के इसी चढ़ाव उतराव को नाद का अर्थ ऊँचा नीचापन कहते हैं।

नाद का छोटा बड़ापन-नाद के छोटे बड़ेपन का अर्थ है कि एक ही ध्वनि एक ही स्थान पर धीरे से उच्चरित की जाय और वही ध्वनि उसी स्थान पर ज़ोर से उच्चारित हो अथवा यूँ कहिये कि किसी भी वाद्य के तार को धीरे से छेड़ा जाय और उसी तार को ज़ोर से झंकृत किया जाय तो धीरे से बोला हुआ नाद या धीरे से छेड़ा हुआ तार पास तक ही सुनाई दे सकेगा और जोर से बोला गया नाद या ज़ोर से झंकृत किये हुए तार का नाद दूर तक श्रवणगोचर होगा। नाद के ऊँचे नीचे पन में और नाद के छोटे बड़े पन में परस्पर पर्याप्त अन्तर है। ऊँचे नीचे पन का नाद क्रमानुसार ऊपर से ऊँचे नीचे होता है परन्तु छोटे बड़े पन को नाद में उसका स्थान परिवर्तित नहीं होता केवल अपने ही स्थान पर वह धीमा वा ऊँचा बोला जाता है जबकि ऊँचे नीचेपन में नाद का स्थान परिवर्तित होना आवश्यक है।

नाद की जाति—किसी भी वाद्य, पशु पक्षी या मानव की आवाज़ को हम बिना देखे ही कानों द्वारा श्रवण करके पहिचान लेते हैं कि सुनाई पड़ने वाली ध्वनि किस वाद्य, किस पशु, किस पक्षी या किस मानव की है। यही नाद का विशेष गुण है अथवा दूसरे शब्दों में हम इसे नाद की जाति कहते हैं।

इस संगीतोपयोगी नाद के अतिरिक्त वह ध्वनि जो कर्कश हो अथवा जिस ध्वनि में स्थिरता न हो वह संगीतानुपयोगी कहलाती है। यह ध्वनि राव के नाम से सम्बोधित की जाती है। परन्तु इसका यह अर्थ न समझा जाय कि ऐसी ध्वनियाँ निरर्थक वा व्यर्थ है। संसार का कोई भी नाद निरर्थक या व्यर्थ नहीं है। प्रत्येक नाद में उसका अर्थ निहित होता है। प्रत्येक नाद किसी न किसी ओर सकेत करता है। यह हमारे प्रत्यक्ष अनुभव की बात है कि किसी भी व्यक्ति के आने पर उसकी पदचाप द्वारा हम बिना देखे ही यह जान जाते हैं कि कोई आ रहा है। केवल यही नहीं, ऐसे व्यक्ति को जिससे हमें भली प्रकार से परिचित हों उसकी चाल से ही हमें भली प्रकार बोध हो जाता है कि अमुक व्यक्ति आ रहा है। इसी प्रकार प्रत्येक नाद किसी न किसी सूचना का बोधक होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब रात्रि के समय सब लोग सोये हुये होते हैं और यदि कोई अपरिचित पुरुष अथवा चोर किसी घर वा मोहल्ले में आने का प्रयत्न करता है तो उसकी आहट पाकर कुत्ते भौंकने लगते हैं तब उनके भौंकने पर तत्काल सबको विदित हो जाता है कि कोई अपरिचित घर या मौहल्ले में घुस आया है। और—अपने मालिक के घर आने पर कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ भौंकता है तो इस आवाज़ में और रात्रि के समय कुत्ते के भौंकने में पर्याप्त अन्तर होता है। मालिक के आगमन पर कुत्ते का भौंकना प्रेम को दर्शाता है और अपरिचित के आगमन पर उसकी आवाज़ से क्रोध का परिचय मिलता है। तद्वत चिड़ियों का प्रातः सायं चहचहाना अथवा भयातुर हो चूँ चूँ करने में अत्यन्त अन्तर परिलक्षित होता है। प्रातः काल चिड़ियों का चहचहाना भोर को दर्शाता है और सायं काल के समय उनका चहचहाना अपने अन्य साथियों को अपने-अपने नीड़ों की ओर आने का सूचक होता है जबकि बिल्ली इत्यादि के उनके घोंसले पर आक्रमण करने पर उनका चीत्कार भय को दर्शाता है। इसी प्रकार आंधी, तूफान, बादलों की गड़गड़ाहट, मोर, पपीहा कोकिल आदि का बोलना, ये सब वर्षा के आगमन की सूचना देते हैं। अतः इन उक्त उल्लिखित उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी प्रकार का नाद क्यों न हो वह निरर्थक नहीं हो सकता।

प्रस्तुत ग्रथ में मैंने क्रियात्मक पक्ष पर ही अधिक ध्यान दिया है और संगीत के शास्त्रीय पक्ष की चर्चा अत्यन्त संक्षेप में की है। मेरा 'अभिनव सगीत प्रकाश' ग्रंथ जो कि विशुद्ध शास्त्र पक्ष से ही सम्बन्धित होगा, लिखा जा रहा है, जिसमें मैंने अपनी बुद्धि एवं अनुभव के आधार पर अनेक अस्पष्ट समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया है। आशा है, थोड़े ही समय में प्रकाशित होकर वह संगीत जिज्ञासुओं के सन्मुख उपस्थित होगा।

इस परिवर्तनशील संसार का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ सगीत भी बदलतारहा परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि संसार के कतिपय मूल सिद्धान्त सदैव स्थिर रहते हैं उदाहरणतया, सूर्योदय, रात्रि आगमन, ऋतु परिवर्तन आदि। ये सब सदैव समान रूप से गतिमान रहते हैं जिनमें परिवर्तन हो ही नहीं सकता। तद्वत हमारे धर्म एवं संस्कृति के मूल सिद्धान्त भी कभी नहीं बदलते। समय के प्रभाव से भले ही हम अपनी संस्कृति के अनुकूल न चलें, परन्तु फिर भी कुछ सिद्धान्त ऐसे होते हैं, जिन्हें हम त्याग भी नहीं सकते। उन्हीं मूल सिद्धान्तों के आधार पर हम वा हमारी संस्कृति जीवित हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि संगीत कला के भी कुछ मूल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धान्त दृढ़ अपरिवर्तित तथा स्थिर रहते हैं। उदाहरण के लिए स्वर सम्वाद चतुश्चतुश्चतुश्चैव का सिद्धान्त आदि। हाँ, संगीत का बाह्य पक्ष समय-समय पर बदलता रहा। औरंगजेब के युग के पश्चात् ब्रिटिश शासन काल में जबकि भारत छोटी-छोटी रियासतों में बँट चुका था, वहाँ पर आश्रित कलाकार अपनी उदर पूर्ति के लिए अपने गायन द्वारा राजाओं, को प्रसन्न करना ही अपना लक्ष्य समझते थे। राजाओं को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने अनेक रसिक एवं अश्लील पदों की, रचना की जो कि उस समय अनुकूल थे परन्तु अब नहीं। वर्तमान युग में उन पदों का कोई स्थान नहीं है।

अतः स्वतन्त्र भारत के नव निर्माण में जहाँ अनेक अनुभवी एवं योग्य व्यक्ति जुटे हुए हैं। वहाँ कलाकारों का भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वे भी कला द्वारा भारत की उन्नति में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

इसी लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुये मैंने अपने (प्रस्तुत) 'अभिनव संगीत रत्न' में भक्तिमय पदों को ही अधिकतर स्थान दिया है। इसका कारण यह है कि बालकों के हृदय में शुभ सात्विक भावनाओं को जागृत करने में वे सहायक सिद्ध होंगे। बाल्यकाल से ही बालकों के हृदय में जिस प्रकार के भाव अंकित कर दिये जायेंगे, वे ही भाव युवावस्था एवं वृद्धावस्था तक उनके साथ रहेंगे जब बालकों का मन शुद्ध, पवित्र, सात्विक होगा तभी वे आने वाले भविष्य में अपने हित की, दूसरों के हित की, देश व धर्म के हित की, कल्पना को साक्षात् कर सकेंगे।

भक्तिपूर्ण पदों को ग्रंथ में स्थान देने का दूसरा कारण यह भी है कि संगीत में जितना महत्व स्वर को प्राप्त है उतना ही शब्द को भी, क्योंकि स्वर का आश्रय लेकर हम शब्दों के भावों को प्रकट करने में पूर्णतया समर्थ होते है। यदि शब्दों के भाव ही अश्लील होंगे तो उनके भावों को प्रकट करने में गायक कलाकार संकोच करेंगे जिससे उनका गायन नीरस हो जायगा। अतः संगीत में पद रचना का भी विशेष महत्व है यह हमें विस्मृत नहीं होना चाहिए।

'अभिनव संगीत रत्न' में मैंने प्रारम्भिक विद्यार्थियों की सुविधा के लिये पं० भातखण्डे जी की स्वर लिपि को स्थान दिया है। मैं जानता हूँ कि यह स्वर लिपि इतनी सूक्ष्म नहीं, फिर भी मैंने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए अथवा इस ग्रंथ के प्रचार के हेतु इसके प्रथम छः भागों में इसी स्वर लिपि का प्रयोग किया है। तदतिरिक्त आगामी श्रेणी के विद्यार्थियों के लिये इसके अगले चार भागों में गुरुदेव विष्णु दिगम्बर पलुस्कर गायनाचार्य जी की सूक्ष्म स्वर-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिपि में पदों को निबद्ध किया जायगा जिससे आगामी श्रेणी के विद्यार्थियों को कोई असुविधा न होगी । वे भली प्रकार से इन ग्रंथों से सहायता ले सकेंगे, ऐसी मुझे आशा है। इसी प्रकार राग वर्गीकरण में भी हम अनेक कठिनाइयों का अनुभव करते हैं, परन्तु जब तक कोई उचित अथवा वैज्ञानिक मार्ग दृष्टि गोचर नहीं होता तब तक वर्तमान प्रचलित थाट पद्धति का ही अनुकरण किया जाना चाहिए। थाट पद्धति भी इस दृष्टि से अपूर्ण है फिर भी अन्य पद्धति के अभाव के कारण मैंने रागों के लक्षण गीतों को थाट पद्धति के अनुरूप ही स्वर निबद्ध किया है।

अनेक अप्रचलित रागों के प्रचार रूप में न आने का मुख्य कारण एक यह भी है कि उन रागों का शास्त्रीय परिचय तो यत्र तत्र ग्रंथों में मिल जाता है, परन्तु उन रागों की प्रकृति अथवा उसके चलन के अनुसार उचित बंदिशें प्राप्त नहीं होतीं। जब तक किसी राग में उसके चलन के अनुसार पद रचना ठीक नहीं होगी तब तक उस राग को गाने में सुविधा प्रतीत नहीं होती। अनेक प्रचलित रागों की सम्पूर्ण गायन शैलियों की बंदिशों का अभाव है एवं वे अनुपलब्ध हैं जिस कारण उनको कलाकार गाने में अथवा प्रचार रूप में लाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसी अभाव की पूर्ति के लिये मैंने अपने 'अभिनव संगीत रत्न' के दस भागों में लगभग दो सौ रागों की नवीन पद रचनायें स्वरबद्ध करने का संकल्प किया है । अभी इस ग्रंथ के दो भाग ही प्रकाशित होकर जनता के समक्ष आ रहे हैं। प्रत्येक राग में स्वरमालिका, लक्षणगीत, विलम्बित ख्याल, तराना, ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियों को अपनाया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पुस्तक में प्रयुक्त चिन्हों का परिचय

रें, ग, ध, नि,	इन स्वरों के नीचे (—) इस प्रकार आड़ी रेखा लगी हो तो उन स्वरों को कोमल स्वर समझना चाहिये अन्यथा शुद्ध।
मं	इस प्रकार लिखा हुआ मध्यम, कोमल अथवा शुद्ध मध्यम समझना चाहिये। तीव्र मध्यम के लिये स्वर के ऊपर खड़ी लकीर होगी। जैसे –मं।
	स्वर के ऊपर विन्दु होने से उस स्वर को तार सप्तक का समझना चाहिये। यही विन्दु जब स्वर के नीचे हो तब वह स्वर मन्द्र सप्तक का होगा। जब स्वर बिना बिन्दु के हो तब वह मध्य सप्तक का स्वर समझना चाहिये। जैसे- रें—तार सप्तक का स्वर। ध़—मंद्र सप्तक का स्वर। म—मध्य सप्तक का स्वर।
◡	इस प्रकार के चिन्ह के अन्तर्गत आये हुए स्वरों का एक ही मात्रा में उच्चारण करना चाहिये। जैसे—रेगमप यह स्वर समूह एक ही मात्रा में उच्चारण किया जाना चाहिये।
ـ̇	इस प्रकार के चिन्ह में दिये गये स्वरों का उच्चारण एक मात्रा के विभागानुसार उसी मात्रा में होना चाहिये। जैसे (सा, रेम) इसका अभिप्राय यह कि सा, स्वर आधी मात्रा का है और रेम, स्वर आधी मात्रा के—अतएव एक मात्रा में सा, रेम कहते हुए सा पर आधी मात्रा विश्राम करने के पश्चात रेम स्वर उच्चरित हों।
⁀	यह चिन्ह मींड दिखाने के हेतु एक स्वर के ऊपर से दूसरे स्वर तक प्रयुक्त है जैसे सां⁀प।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—	एक स्वर को एक या एक से अधिक बार आकार द्वारा बोलने के लिए स्वर के आगे लम्बी लकीर का प्रयोग किया गया है। जैसे सा——इसका अभिप्राय है कि सा स्वर बोलकर उसी को दो मात्रा आगे बढ़ाया जाय।
ऽ	अवग्रह का प्रयोग शब्द के वर्ण को बड़ाने के हेतु किया गया हैं। जैसे (श्याऽऽम) अभिप्राय यह कि श्याम शब्द का उच्चारण चार मात्राओं में करना है। तान में भी अवग्रह प्रयुक्त है।
नि सा	कहीं कहीं स्वर के ऊपर छोटे टाइप में स्वर दिया गया है। यह कण स्वर कहलाता है। इसका प्रयोग गायन में रंजकता का वर्धक होता है।
×	यह चिन्ह गायन में तान का सम दिखाता है। सम को पहली ताली मान कर शेष तालियों के नम्बर दिये हैं जैसे २, ३, या ४।
०	यह चिन्ह ताल के खाली स्थान का सूचक है।

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पुस्तक में प्रयुक्त तालों का पूर्ण परिचय

ताल दादरा—मात्रा ६। ३, ३ मात्राओं के दो विभाग।
१, पर ताली और ४ पर खाली।

१	२	३	४	५	६
धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
×			०		

ताल झपताल—मात्रा १०। २ ३, २ ३ मात्राओं के चार विभाग।
१, ३ ८ पर ताली और ६ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		२			०		३		

ताल एकताल—मात्रा १२। २, २, मात्राओं के ६ विभाग। १, ५ ९
११ पर ताली और ३, ७, पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धिं	धिं	धागि	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागि	तिरकिट	धी	ना
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

ताल चारताल—मात्रा १२। २. २, मात्राओं के ६ विभाग १, ५, ६ ११ पर ताली और ३, ७ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दि	ता	तिट	कत	ग दि	गन।
×		०		२		०		३		४	

ताल आड़चारताल— मात्रा १४। २ २, मात्राओं के ७ विभाग। १, ३, ७, ११ पर ताली और ५, ९, १३ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धी	तिरकिट	धी	ना	तू	ना	क	त्ता	तिरकिट	धी	ना	धी	धी	ना
×		२		०		३		०		४		०	

ताल धमार—मात्रा १४। ५, २, ३, ४, मात्राओं के ४ विभाग। १, ६, ११ पर ताली और ८ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	त	ऽ
×					२		०			३			

ताल तीनताल अथवा (त्रिताल)—मात्रा १६। ४, ४, मात्राओं के चार विभाग। १, ५, १३ पर ताली और ९ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१५	१६
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				२				०				३			

ताल तिलवाड़ा—मात्रा १६। ४, ४ मात्राओं के ४ विभाग १, ५, १३ पर ताली और ९ पर खाली।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं
×				२				०				३			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी

परिचय

इस राग में गंधार निषाद कोमल व अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। यह काफ़ी थाट का राग है। इस राग का वादी स्वर मध्यम और सम्वादी स्वर षड़ज है। आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं अतः इसकी जाति औढ़व सम्पूर्ण है। गायन समय दिन का तीसरा प्रहर है। इस राग को काफ़ी, धनाश्री, धानी, सिंधुरा, इत्यादि रागों से बचाने के लिए विशेष स्वर समुदाय का प्रयोग करना चाहिए जिससे अन्य रागों से पृथक रहे इस राग के अवरोह में 'सां नि ध प म ग रे सा', लेने से राग काफ़ी का आभास होने लगेगा। इसलिए ऐसा न करके अवरोह में 'सां नि ध प म प ग म ग रे सा'. इस प्रकार से अवरोह दिखाना चाहिए। इसके अतिरिक्त रिषभ, धैवत पर अधिक ठहराव न देना चाहिये। इससे भी अन्य राग की छाया आने की संभावना होती है अतएव दोनों स्वरों को दुर्बल रूप में प्रयोग करना चाहिये। इस राग में 'म ग रे सा,' यह स्वरसमूह उच्चारण करते समय रिषभ को षड़ज का कण देकर लेना चाहिये। ऐसा करने से सिंधुरा आदि रागों से यह राग पृथक हो जायेगा भीमपलासी के आरोहावरोह से धैवत को वर्जित कर देने से राग धानी बन जाता है। इसी प्रकार से धनाश्री राग जो कि इसके बिल्कुल समान है उसमें पंचम पर अधिक ठहराव देने से, एवं वादी संवादी के अन्तर करने से यह राग धनाश्री से भी पृथक हो जाता है। यह राग दिन के तृतीय प्रहर का प्रमुख, प्रचलित और लोकप्रिय राग है। इसका प्रारम्भ निषाद से किया जाता है। यानी इसका ग्रह स्वर निषाद को मानना चाहिये। इस राग का आलाप एवं तान लेते समय निषाद से ही प्रारम्भ करना अधिक उचित होगा।

आरोह—नि सा ग म प नि सां।

अवरोह— सां नि ध प म प ग म ग रे सा।

पकड़

नि सा म प ग म ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी

आलाप

नि सा ग रे सा, नि सा नि ध प, प नि सा ग र सा, नि सा ग म प,
म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प, नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग
म प नि सां, सां नि ध प म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा, नि सा ग म
प ग म ग रे सा, नि सा नि ध प, प नि सा, ग रे सा, नि सा ग म प ध म
प नि ध प म प म ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां, प नि सां रें सां रें
नि सां, नि ध प, म प ग म प, ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां, प नि
सां गं रें सां नि सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा, नि सा म
ग रे सा, नि सा ग म प, प म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि ध प, ग
म प नि सां, सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां, प नि
सां गं रें सां, नि सां मं गं रें सां, नि सां गं रें सां, नि सां मं गं रें सां, नि
सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा, म ग रे सा, नि सा ग म
प, प म प ग म ग, सा ग म प नि ध प, सां नि ध प, म प ग म प नि ध प,
म प ग म प नि प नि सां, सां रें सां रें नि सां नि ध प ध म प नि ध प, ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प नि सां गं रें सां, मं ग रें सां, नि सां नि ध प, म प ग म प नि सां, सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा, नि सा ग म ग रे सा, नि सा ग म प, म प ग म ग रे सा. नि सा ग म प, नि ध प म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां, सां नि ध प म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां. गं रें सां, नि सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि सां, मं गं रें सां, नि प नि सां, गं रें सां नि प नि सां, रें सां नि, प नि सां नि ध प, ध म प नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा, नि सा म ग रे सा, नि सा म प ग, म ग रे सा, नि सा म प ग म, प नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग म प, ग म प, नि ध प, म प नि सां, नि ध प म प नि सां, गं रें सां, नि ध प, म प नि सां, मं गं रें सां, नि सां नि ध प, म प ग म ग रे सा, नि सा ग रे सा. नि सा ग म ग रे सा, नि सा ग म प नि ध प, सां नि ध प, म प ग म, ग, सा ग म प, नि सां गं रें सां, नि ध प, म प ग म ग रे सा, ग म ग रे सा, म प ग म ग रे सा, प नि ध प म प ग म ग रे सा, सां नि ध प म प ग म ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी तानें

१- निसा गम पम गम पम गम गरे साऽ ।

२- निसा गम पम गम पनि धप मग रेसा ।

३- निसा गम पनि सांरें सांनि धप मग रेसा ।

४- निसा गम पनि सांगं रेंसां निध पम गरे साऽ ।

५- गम पनि सांनि धप गम पम गरे साऽ ।

६- गम पनि सांगं रेंसा निध पम गरे साऽ ।

७- पनि सांगं रेंसां निध पम गम गरे साऽ ।

८- सांनि धप मग रेसा निसा गम पनि सांऽ ।

९- सांनि पनि सांगं रेंसां निध पम गरे साऽ ।

१०- सांनि धप मग रेसा निसा गम पम गम पनि सांगं रेंसां निध पम गम गरे साऽ ।

११- निसा गम पम गम पनि धप मप गम पनि सांरें सांनि धप निध पम गरे साऽ ।

१२- सांगं रेंसां निध पम पनि धप मग रेसा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३- सांनि पनि गम पनि सांगं रेंसां निध पऽ।

१४- मप निसां पनि सांरें सांनि धप मग रेसा।

१५- निसा गम पम गम पनि सांगं रेंसां निध पम गम पनि सांनि धप मग
रेसा निसा।

१६- निसा गम पम गम गग रेसा निनि धप मप गम गग रेसा सांनि धप
गम पनि सांगं रेंसां निध पम पनि धप मग रेसा।

१७- साम गम पम पनि सांनि पनि सांगं रेंसां निध पम पनि सांरें सांनि धप
मग रेसा।

१८- निसा गम पनि सांमं गंरें सांनि धप मग मप निसां गंरें सांनि धप
निसां रेंसां निध पम गम पनि सांगं रेंसां निध पम गम पनि सांरें सांनि
धप निध पम गरे साऽ।

१९- मप गम गग रेसा निनि धप मग रेसा सांनि पनि सांगं रेंसां निध पम
गरे साऽ।

२०- निसा गम पम गम पनि धप मप निसां निध पनि सांरे सांनि सांगं
रेंसां निध पम गम पनि सांगं रेंसां निध पम गरे साऽ।

२१- निसा गग साग मम गम पप मप निनि पनि सांसां मंगं रेंसां निनि धप
मग रेसा।

२२- निसा गम गग रेसा निसा गम पम गम गग रेसा निसा गम पनि धप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मप गम गग रेसा निसा गम पनि सांरें सांनि धप गम पनि सांगं रेंसां

निध पम गरे साऽ।

२३- पनि धप मग रेसा। निसा गम पनि सांगं रेंसां निध पम गम पम गम

गरे साऽ।

२४- गम पम गम पनि धप गम पनि सांनि धप गम पनि सांरें सांनि धप

गम पनि सांगं रेंसां निध पम पनि सांरें सांनि धप गम पनि सांगं रेंसां

निध पम गरे साऽ।

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी स्वर मालिका

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

म	ग॒	रे	सा	नि॒	सा	ग॒	म	प	—	ग॒	म	ग॒	रे	सा	—
०				३				×				२			
प़	नि॒	सा	ग॒	रे	सा	नि॒	सा	नि॒	ध	प	म	ग॒	रे	सा	—
०				३				×				२			

अन्तरा

प	—	प	प	म	प	ग॒	म	प	प	नि॒	नि॒	सां	—	सां	—
०				३				×				२			
नि॒	सां	गं॒	रें	सां	नि॒	ध	प	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा	—
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी लक्षणगीत

××

रागनी भीमपलासी कहावत ।
धैवत रिषभ वरज आरोहन ।
अवरोहन सम्पूरण दिखावत ।
मध्यम वादी षड्ज सम्वादी ।
थाट काफी सब गुनिजन मानत ।
ग नी सुर दोऊ को कोमल कर तब ।
तृतीय प्रहर दिन समय सुहावत ॥

——

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

गम	पनि	ध	प	म	ग	रे	सा	नि	सा	ग	म	प	—	प	प
राऽ	ऽऽ	ग	नी	भी	ऽ	म	प	ला	ऽ	सी	क	हा	ऽ	व	त
०				३				×				२			
ग	—	ग	म	ग	रे	सा	सा	नि	नि	सा	ग	रे	—	सा	सा
धै	ऽ	व	त	रि	ष	भ	व	र	ज	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न
०				३				×				२			
नि	सा	ग	म	प	नि	सां	—	नि	प	ग	म	ग	रे	सा	सा
अ	व	रो	ऽ	ह	न	स	ऽ	पू	र	न	दि	खा	ऽ	व	त
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	प	प	नि	प	ग	सा	ग	म	प	नि	पनि	सां	सां	·–
म	ऽ	ध्यं	म	वा	ऽ	दी	ष	ड़	ज	सं	ऽ	वाऽ	ऽ	दी	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	सां	गं	रें	सां	सां	सां	प	प	नि	सां	नि	ध	प	प
धा	ऽ	ट	का	ऽ	फ़ी	स	व	गु	नि	ज	न	मा	ऽ	न	त
०				३				×				२			
ग	नि	ध	प	म	प	ग	म	प	—	म	म	ग	रे	सा	सा
ग	नी	सु	र	दो	ऊ	को	ऽ	को	ऽ	म	ल	क	र	त	ब
०				३				×				२			
नि	नि	प	नि	सां	नि	ध	प	ग	म	प	प	गम	गरे	सा	सा
तृ	ती	य	प्र	ह	र	दि	न	स	म	य	सु	हाऽ	ऽऽ	व	त
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपालसी विलम्बित ख्याल १

काहे गुमान करे तू इतनो यौवन को।
यह तन है मिथ्या क्षण भंगुर।
झूठा जग झूठी माया।
देखि देखि काहे भरमाया।
त्याग सकल हरि को सुमिरन कर॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

										गरेसारे	निसा
										काऽऽऽ	हेगु
										४	
म	—	—	ग	गम,प	ग	म	गग	रे	सा	निध,प	निनि
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	ऽ	नक	रे	ऽ	तूऽ,ऽ	इत
×		०		२		०		३		४	
सा	म	—	प	ग	म	ग	ग	रे	सा	सां	नि
ना	ऽ	ऽ	यौ	ऽ	ऽ	ब	न	को	ऽ	य	ह
×		०		२		०		३		४	
प	नि	ध	प	नि	पनि	सां	सां	निसां,रें	नि	सां	नि
त	ऽ	ऽ	न	है	ऽऽ	ऽ	ऽ	मिऽ,ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३			
ध	प	गम	प	नि	ध	प	ग	म	गरेसा		
ध्या	ऽ	क्षण	भं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गुऽर		
×		०		२		०		३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

					प गम
					झू ठाऽ
					४
प नि	पनि सां सां	नि सांगं	रें सां	नि सां	निध,प प
ज ऽ	ऽऽ,ऽ ग	झू ठीऽ	मा ऽ	ऽ ऽ	ऽऽ,ऽ या
×	०	२	०	३	४
ग म	प नि	पनि सां	सां सां	मं गंगं	रें सां
दे ऽ	खि दे	ऽऽ ऽ	खि का	हे भर	मा या
×	०	२	०	३	४
प नि	सां सां	रें नि	सां सां	नि ध	प गम
त्या ऽ	ऽ ग	स ऽ	ऽ ऽ	क ऽ	ल हरि
×	०	२	०	३	४
प नि	ध प	ग म	प ग	रे सा,	गरेसारे निसा
को सु	मि र	न ऽ	ऽ क	ऽ र,	काऽऽऽ हेगु
×	०	२	०	३	४

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी बिलंबित ख्याल १

सहज तरे भव मांहि, जो गुरु कृपा करे ।
जाकी महिमा बरनी नहीं जाए ।
थके वेद ब्रह्मा मुनि गाए ।
करूणामय करूणा के सागर ।
कोटि विघन हरे ॥

स्थायी तिलवाड़ा मात्रा १६

										सां	नि	ध	प	धपमध	गम
										स	ह	ऽ	ज	ऽऽऽऽ	ऽत
												३			
प	नि	सां	नि	ध	प	मप	ग	रे	सा	प़	नि	सा	ग	रे	सासा
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भव	मां	ऽ	हि	जो	ऽ	ऽ	गु	ऽ	रुकृ
×				२				०				३			
म	ग	प	सां	नि	धप	म	म	गरे	सा,	सां	नि				
पा	ऽ	क	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ,	स	ह				
×				२				०							

— :o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

		गम पनि	सां सां सां —
		जाऽ कीऽ	म हि मा ऽ
			×
नि नि सां सां	रें नि सां नि	ध प नि पनि	सां गं रें सां
व र नी न	जा ऽ ऽ ऽ	ए ऽ थ केऽ	वे ऽ ऽ द
२	०	३	×
सां मं गं रें	सां सां नि सां	निध प गम म	प नि ध पप
ब्र ऽ ह्मा ऽ	मु नि गा ऽ	ऽऽ ए क रू	णा ऽ ऽ मय
२	०	३	×
सां नि ध प	धपमप ग म ग	रे सा नि सा	ग ग प प
क रू णा के	साऽऽऽ ऽ ऽ ग	ऽ र को ऽ	टि वि घ न
२	०	३	×
नि पनि सां —	निधपम गरेसाऽ, सां नि		
ह ऽऽ ऽ ऽ	रेऽऽऽ ऽऽ,ऽऽ, स ह		
२	०		

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी द्रुत ख्याल १

आई ऋतु बरसन को प्यारी ।
रुम झुम बूंदरियाँ झर लाई ।
शीतल पवन चलत मतवारी ।
कारी रैन अंधेरी छाई ।
उमड़ घुमड़ घन गरजत माई ।
दामिनी दमकत बिजुरिया चमकत ।
अजहू न आए सखि बनवारी ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

प	नि	ध	प	म	प	ग	म	प	प	ग	म	ग	रे	सा	—
आ	ऽ	ई	ऽ	ऋ	तु	ब	र	स	न	को	ऽ	प्या	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	सा	सा	म	—	म	म	ग	—	ग	म	ग	रे	सा	—
रू	म	झु	म	बूं	ऽ	द	रि	याँ	ऽ	झ	र	ला	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
नि	—	प	नि	सां	सां	सां	सां	नि	ध	प	प	गम	गरे	सा	—
शी	ऽ	त	ल	प	व	न	च	ल	त	म	त	वाऽ	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	प	—	म	प	ग	म	प	—	नि	—	सां	—	सा	—
का	ऽ	री	ऽ	रै	ऽ	न	अं	धे	ऽ	री	ऽ	छा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	सां	सां	रें	रें	सां	सां	नि	नि	सां	सां	नि	ध	प	—
उ	म	ड़	घु	म	ड़	घ	न	ग	र	ज	त	मा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
ग	—	ग	ग	म	म	म	म	ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	सा
दा	ऽ	मि	नी	द	म	क	त	बि	जु	रि	या	च	म	क	त
०				३				×				२			
नि	नि	प	नि	सां	—	सां	—	नि	ध	प	प	गम	ग	रे	सा
अ	ज	हु	न	आ	ऽ	ए	ऽ	स	खि	ब	न	वाऽ	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपालसी द्रुत ख्याल १

पिया घर आए, रचहुं मैं हार सिंगार ।
केसर चंदन तिलक लगाऊँ, गरवा डारूँ फूलन के हार ।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

											नि	प	ग	—	रे
											पि	या	घ	ऽ	र
												३			
नि	—	सा	—	ग	—	म	—	नि	प	प	नि	प	नि	सां	सां
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	र	च	हुँ	ऽ	मैं
×				२				०				३			
सां	—	—	—	नि	ध	प	सां	निसां	निध	प,	नि				
हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	सिं	गाऽ	ऽऽ	र,	पि				
×				२				०							

– :o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	प	म	म	प	ग	म	प	प	नि	नि	पनि	सां	सां	—
के	ऽ	स	र	चं	ऽ	द	न	ति	ल	क	ल	गाऽ	ऽ	ऊँ	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	सां	मं	गं	रें	सां	—	प	—	नि	नि	सां	—	सां	—
ग	र	वा	ऽ	डा	ऽ	रूं	ऽ	फू	ऽ	ल	न	के	ऽ	हा	ऽ
२				३				×				२			
निसां	निध	प	नि												
ऽऽ	ऽऽ	र,	पि												

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी द्रुत ख्याल ३

—:०:—

बीती जात उमरिया तोरि।
मान मान मन कही को मोरि ॥
धन दौलत कछु काम न आए
काहे मानुष जनम गँवाए।
घरि घरि औसर बीतो जाए।
बहुत गई अब रह गई थोरि ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पनि	सां	निध	प	ग	—	म	प	ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	—
बीऽ	ऽ	तीऽ	ऽ	जा	ऽ	त	उ	म	रि	या	ऽ	तो	ऽ	रि	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ग	म	प	नि	पनि	सां	प	नि	सां	रें	सांनि	धप	मग	रेसा
मा	ऽ	न	मा	ऽ	न	मऽ	न	क	हि	को	ऽ	मोऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

— :०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	म	प	—	म	प	ग	म	प	—	नि	नि	सां	—	सां	—
ध	न	दौ	ऽ	ल	त	क	छु	का	ऽ	म	न	आ	ऽ	ए	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	सां	मं	गं	रें	सां	सां	नि	नि	सां	सां	नि	ध	प	—
का	ऽ	हे	ऽ	मा	ऽ	नु	प	ज	न	म	गँ	वा	ऽ	ए	ऽ
				३				×				२			
—	ग	ग	म	ग	रे	सा	सां	नि	—	सा	ग	रे	—	सा	—
घ	रि	घ	रि	औ	ऽ	स	र	बी	ऽ	तो	ऽ	जा	ऽ	ए	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ग	म	प	नि	पनि	सां	प	नि	सां	रें	सांनि	धप	मग	रेसा
व	हु	त	ग	ई	ऽ	अऽ	ब	र	ह	ग	ई	थोऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी द्रुत ख्याल ४

—:०:—

शंकर शिव महादेव, शंभु त्रिपुरारी।
राजन को महाराज, देवन को नाथ लाज।
भक्तन के करत काज, शीश गंग धारी।

स्थायी एकताल मात्रा १२

सां	—	निसां	निध	प	प	म	ग	म	ग	रे	सा
शं	ऽ	कऽ	रऽ	शि	व	म	हा	ऽ	दे	ऽ	व
०		×		३		०		२		४	
नि	—	सा	—	ग	म	प	—	मप	मग	रे	सा
शं	ऽ	भु	ऽ	त्रि	पु	रा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ
०		×		३		०		२		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	म	प	ग	म	प	नि	—	नि	सां	सां
रा	ऽ	ज	न	को	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ज
०		×		३		०		२		४	
प	नि	सां	मं	गंरें	सां	प	नि	सां	निध	प	प
दे	ऽ	व	न	कीऽ	ऽ	ना	ऽ	थ	लाऽ	ऽ	ज
०		×		३		०		२		४	
ग	म	प	नि	सां	—	निसां	निध	पनि	सांरें	सां	सां
भ	ऽ	क्त	न	के	ऽ	कऽ	रऽ	तऽ	काऽ	ऽ	ज
०		×		३		०		२		४	
नि	—	सा	सा	ग	म	प	—	मप	मग	रे	सा
शी	ऽ	श	गं	ऽ	ग	धा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ
०		×		३		०		२		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी तराना

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

प	नि	ध	प	म	प	ग	म	प	प	ग	म	ग	रे	सा	—
त	न	न	त	न	न	त	न	दी	म्	त	न	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
निनि	निनि	सा	म	ग	रेरे	सा	सा	निनि	पप	नि	सां	नि	ध	म	प
दिर	दिर	दा	नि	तु	दिर	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			

——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नि	पप	पप	प	प	प	ग	म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	—
ना	दिर	दिर	दी	म्	त	न	न	त	न	न	न	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	सां	सां	गं	रें	सां	सां	निनि	पप	नि	सां	नि	ध	प	—
ओ	दा	दा	नि	ओ	दा	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
गग	म	प	ग	म	प	पप	नि	प	नि	सां	सां	प	नि	सांसां	गंगं
तक	धी	ना	धी	न	क	तक	धी	ना	धी	न	क	धा	तिर	किट	तक
०				३				×				२			
रें	रें	सांसां	सांसां	निनि	सांसां	निध	प	पप	निनि	सांसां	मंमं	गंगं	रेंरें	सां	—
धा	धा	किड़	नग	तिर	किट	धाऽ	ती	धुम्	किट	तिट	कत	गदि	गन	धा	ऽ
०				३				×				२			
पप	निनि	सांसां	सांसां	निनि	धध	प	—	गग	मम	पप	मम	गग	रेरे	सा	—
धुम्	किट	तिट	कत	गदि	गन	धा	ऽ	धुम्	किट	तिट	कत	गदि	गन	धा	ऽ
०				३				×				२			

——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी ध्रुपद

नमन करो गुरु चरना,
सकल व्याधि भव हरना।
जोहि जोहि चरण पखारे,
सोई सोई नाथ तारे,
जाऊँ वापे वारे वारे,
विघन हरना सुख करना।

स्थायी ध्रुपदताल एकताल मात्रा १२

प	प	नि	ध	प	ग	म	प	गम	ग	रे	सा
न	म	न	क	रो	गु	रू	च	रऽ	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
निनि	सा	म	—	म	प	प	ग	म	ग	रे	सा
सक	ल	व्या	ऽ	धि	भ	व	ह	र	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	प	म	ग	म	पप	नि	प	नि	सां	सां
जो	ऽ	हि	जो	ऽ	हि	चर	न	प	खा	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	मं	गं	रें	सां	नि	—	सां	नि	प	प
सो	ऽ	ई	सो	ऽ	ई	ना	ऽ	थ	ता	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
प	—	सां	नि	ध	प	ग	ग	म	ग	रे	सा
ज	ऽ	ॐ	वा	ऽ	पे	वा	ऽ	रे	वा	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
निनि	सा	म	म	म	प	प	ग	म	ग	रे	सा
विघ	न	ह	र	न	सु	ख	क	र	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी धमार

फागुन आयो री आज,
ग्वालबाल मिल सखिन्ह संग,
खेलत धमार ब्रजराज ।
आई ऋतु अति ही प्यारी, हुलसावत नर नारी,
उड़ावत केसर गुलाल, गाय गाय नाच नाच ।।

स्थायी धमार मात्रा १४

प	नि	ध	प	प	धधधपम	प	—	ग	—	म	ग	रे	सा
फा	ऽ	गु	ऽ	न	आऽऽऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	री	आ	ऽ	ज
×					२		०			३			
नि	—	सा	नि	ध़	प़	प़	नि	सा	म	ग	रे	—	सा
ग्वा	ऽ	ल	वा	ऽ	ल	मि	ल	स	खि	न्ह	सं	ऽ	ग
×					२		०			३			
म	ग	प	म	नि	प	सां	सां	प	नि	सां	सांनि,ध	म	प
खे	ल	त	ध	मा	ऽ	ऽ	र	ब्र	ऽ	ज	राऽ,ऽ	ऽ	ज
×					२		०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	ग	म	प	नि	सां	सां	सां	पनि	सां	गं	रें	रें	सां
आ	ऽ	ई	ऋ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	आऽ	ति	ही	का	ऽ	री
×					२		०			३			
नि	नि	—	सां	—	सां	सां	म	मं	गं	—	रें	—	सां
हु	ल	ऽ	सा	ऽ	व	त	ऽ	न	र	ऽ	ना	ऽ	री
×					२		०			३			
रें	नि	—	—	ध	प	प	ग	ग	म	प	ग	रे	सा
उ	ड़ा	ऽ	ऽ	ब	ऽ	त	के	स	र	गु	ला	ऽ	ल
×					२		०			३			
नि	सा	ग	म	प	नि	सां	सां	गं	रें	सां	निध	पम	प
गा	ऽ	ऽ	य	गा	ऽ	य	ऽ	ना	ऽ	च	नाऽ	ऽऽ	च
×					२		०			३			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग

परिचय

इस राग में मध्यम दोनों, अन्य शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है। इसके आरोह में रिषभ व धैवत वर्जित हैं। अवरोह में भी इन दोनों स्वरों को दुर्बल अंग से ही लेना चाहिये। इस राग का वादी स्वर गंधार और सम्वादी स्वर निषाद है। यह कल्याण थाट का सुमधुर और स्वतन्त्र राग है। इसका गायन समय रात्रि के प्रथम प्रहर का अंतिम भाग और जाति औढ़व सम्पूरन है। इस का प्रारम्भ निषाद से करना चाहिये, और गंधार पर अधिक ठहराव। निषाद को ग्रह स्वर और गंधार को न्यास मानना चाहिये।

पकड़

नि़ सा ग म प म॑ ग म ग रे नि़ सा।

इस राग में 'प म॑ ग म ग, नि ध म॑ प, म॑ ग म ग रे नि़ सा', 'नि सा ग म॑ ग रे नि़ सा', ये स्वर समूह बार बार दिखाने से राग का संपूर्ण स्वरूप प्रत्यक्ष हो जाता है। कई विद्वान इसे बिलावल थाट का भी मानते हैं। परन्तु कल्याण थाट से मानना ही अधिक उचित है। क्योंकि यदि अवरोह में शुद्ध मध्यम को छोड़ दिया जाय, जैसे सां नि ध प म॑ ग रे सा तो सम्पूर्णतया कल्याण का आभास हो जाता है। इसलिए इसे कल्याण अंग से ही मानना उचित होगा।

आरोह – नि़ सा ग म प नि सां।

अवरोह – सां नि ध प म॑ ग, म ग रे नि़ सा।

कई लोग इसका अवरोह 'सां नि ध प म ग रे सा' इस प्रकार भी कहते हैं परन्तु ऐसा उचित नहीं। केवल सुविधा के लिये तानों को लेते समय गायक इस प्रकार से उच्चारण कर जाते हैं जिससे राग अंग भंग होने की हानि तो नहीं परन्तु फिर भी प्रयत्न यही होना चाहिये कि 'प म॑ ग म ग रे नि़ सा' इसी प्रकार से इसके अवरोह में विस्तार करना चाहिये। ग रे नि़ सा, नि ध म॑ प,' यह स्वर समूह उच्चारण करते समय धैवत और रिषभ को कुशलता पूर्वक लेने की आवश्यकता हो जैसे उपरोक्त वर्णन कर चुके हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग

आलाप

सा रे नि़ सा, नि़ प़ नि सा, प़ नि़ सा, नि़ सा ग, रे सा, रे नि़ सा, नि़ प़, नि़ सा, सा ग, म ग, रे नि़, सा, नि़ प़ नि़ सा, ग रे नि़ सा, नि़ सा म ग प, म ग गमप, ग म ग, रे नि़ सा, नि़ प़ नि़ सा, ग. म ग, रे नि़ सा, सा ग म प, म॑ प ग म ग, गम प ध प, प ध म॑ प म॑ ग म ग, गम प, ग म ग, रे नि़ सा, सा ग म प, ध प, ध म॑ प म॑ ग म ग, प म॑ ग म ग, रे नि़ सा, नि़ सा ग म प नि ध प, ध़ म॑ प, म॑ ग, म ग, गम प ग म ग रे नि़ सा सा ग म प नि सां, नि ध प, म॑ प ग म, ध प, ध म॑ प, म॑ ग म ग, रे नि़ सा, नि़ सा ग म प. ध म प, म॑ ग म ग, ग म प नि सां, सां नि ध प, नि, प, ध म॑ प, म॑ ग म ग रे नि़ सा, नि़ सा ग म प नि सां, सां रें नि सां, नि ध प, सां नि ध प ध म॑ प, म॑ ग म ग रे सा, सा ग म प नि सां, गं रें सां रें नि सां, नि ध प, नि प ध म॑ प, ग म ग, ग म ध प, नि ध सां, सां नि ध प, ध म॑ प, म॑ ग म ग रे नि़ सा, नि़ सा ग म प नि सां, गं मं गं रें नि सां, नि ध प, ध म॑ ग म ग रे नि़ सा, नि़ प़, नि़ सा, ग, ग म प, नि सां, प नि सां, गं म गं, पं म॑ गं, मं गं, गंम पं, गं मं गं रें नि सां, नि ध प, सां नि ध प, नि प ध म॑ प, म॑ ग म ग प, म ग रे नि़ सा, सा म ग, म॑ प, म॑ प ग म ग, ग म ध प, ध म॑ प, म॑ ग म ग, ग म प, नि ध प, ध म॑ प, ग म ग. ग म प नि सां, गं मं गं, रें नि सां, गं रें सां, नि ध प, ध म॑ प, ग म ग, ग म प नि सां, गं मं, गं रें नि सां, नि ध प, ध म॑ प ग म ग, ग म प नि सां, गं मं पं, म॑ पं, गं मं गं रें नि सां, नि ध प, ध म॑ प, ग म ग, ग म प नि सां, गं मं पं गं मं गं, रें नि सां, गं मं ग, रें नि सां, रें नि सां, नि ध प. नि सां नि ध प, नि ध प, ध म॑ प, प म॑ ग म ग रे नि़ सा, ग म ग रे नि़ सा, ग म॑ ग म ग रे नि़ सा नि ध प ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म॑ प, प म॑ ग, म ग, रे नि सा, सां नि़ ध प ध म॑ प, म ग म ग रे नि़ सा, गं मं गं रें नि सां, नि ध प, ध म॑ प म॑ ग म ग रे नि़ सा. गं मं पं मं॑ गं मं गं रें नि सां, नि सां मं गं रें नि सां, गं रें नि ध, नि ध प ध म॑ प; ग म ग रे नि़ सा, सा ग म ग रे नि़ सा, प ग म ग रे नि़ सा, नि ध प. ग म ग रे नि़ सा, सां नि ध प, नि ध प, ध म॑ प, म॑ ग, म ग, गम प, ग म ग, ग नि ध प, ग म ग, सां नि ध प ग म ग, रे नि़ सा, प म॑ ग म ग, नि ध प, म॑ ग म ग, सां नि ध प, नि सां, रें सां नि ध प, नि सां गं रें सां, नि ध प, नि सां, गं मं गं रें नि सां, नि ध प, नि सां गं मं पं म॑ गं मं गं, रें नि सां, नि ध प, ध म॑ प, ग म ग, रे नि़ सा ।

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग तानें

१- निसा गम पनि धप मंप गम गरे साऽ।

२- निसा गम पनि सांनि धप मंप गम गऽ।

३- निसा गम पनि सांरें सांनि धप गम गऽ।

४- गम पनि मंप निसां निध पमं गम गऽ।

५- गम पनि सांरें सांनि धप मंप गम गऽ।

६- गम पनि सांगं रेंसां निध पमं गम गऽ।

७- निसा गम पमं गम पनि धप मंप गम पनि सांरें सांनि धप मंप गम गरे साऽ।

८- निसा गम पनि सांगं रेंसां निध पमं गऽ।

९- गम पनि मप निसां निध पमं गम गऽ।

१०- सांरें सांनि धप मंप मंग मग रेसा निसा।

११- सांगं रेंसां निध पमं गम गरे सानि साऽ।

१२- सांरें सांनि धप मंप निध पमं गम गऽ।

१३- गंमं गंरें सांनि धप मंप मंग मग रेसा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४- सांनि धप निध पर्म गम पर्म गम गऽ।

१५- निनि धप सांनि धप मंप गम पनि सांऽ।

१६- सांरें सांनि धप मंप गम पनि सांरें सांऽ।

१७- सांगं रेंसां निध पर्म गम पनि सांरें सांऽ।

१८- गंमं गंरें निनि धप मंप गम पनि सांऽ।

१९- गंगं रेंसां निनि धप मंप गम पनि सांऽ।

२०- निसा गम पर्म गम पनि धप गम पनि सांनि धप गम पनि सांरें सांनि
धप मंग।

२१- निसा गम पनि सांगं मंगं रेंसां निध पर्म गम पनि सांगं रेंसां निध पर्म
गम पनि सांरें सांनि धप मंप गम पनि सांनि धप मंप गम पनि धप मंप
गम गरे साऽ।

२२- सांनि धप मग रेसा निसा गम पनि सांऽ।

२३- निसा गम पर्म गम पनि धप मंप गम पनि सांनि धप मंप गम पनि सांरें
सांनि धप मंप गम पनि सांगं रेंसां निनि धप मंप गम पनि सांगं मंगं
रेंसां निनि धप मंप गम पनि सांनि धप मंप गम गऽ।

२४- गम पर्म गम पनि धप मंप गम पनि सांनि धप मंप गम पनि सांरें सांनि
धप मंप गम पनि सांगं रेंसां निध पर्म गम पनि सांगं मंगं रेंसां निध पर्म
गम गऽ।

२५ -पर्म गम गरे साऽ धप मंप गम गरे साऽ निनि धप मंप गम गरे साऽ
सांनि रेंसां गंमं गंरें सांनि धप मंप गम गऽ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग स्वर मालिका

स्थायी त्रिताल मात्रा १६.

सा ग म प	प मं ग म	ग — ग म	ग रे सा नि़
०	३	×	२
प़ नि़ सा सा	नि़ सा ग ग	सा ग म म	ग म प नि
०	३	×	२
ध प मं प	ग म ग —	प मं ग म	ग रे सा नि़
०	३	×	२

अन्तरा

ग म प नि	सां — नि सां	नि सां गं मं	गं रें सां निं
×	२	०	२
नि नि ध प	मं प ग म	प नि ध प	ग म प नि
×	२	०	२
प मं ग म	ग रे सा नि़		
×	२		

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग लक्षणगीत

शुद्ध सुरन को मेल मिलायें,
धैवत रिषभ वरज आरोहन,
मध्यम दोनों अति मन भायें।

ग वादी और नी सम्वादी,
प्रथम प्रहर निशि समय सुहाये,
थाट कल्यान औढ़व सम्पूरन,
राग बिहाग मेरो मन गाये ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सा	ग	—	म	प	प	नि	—	सां	नि	ध	प	ग	म	ग	—
शु	ऽ	द्ध	सु	र	न	को	ऽ	मे	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	यें	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	नि़	प़	नि़	सा	सा	सा	प	मं	ग	म	ग	रे	सा	मा
धैं	ऽ	व	त	रि	ष	भ	व	र	ज	आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न
०				३				×				०			
सा	—	ग	म	प	—	नि	नि	सा	नि	ध	प	ग	म	ग	—
म	ऽ	ध्य	म	दो	ऽ	नों	ऽ	अ	ति	म	न	भा	ऽ	यें	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	—	नि	नि	नि	—	सां	—	सां	—	मां	—
ग	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	औ	र	नि	ऽ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ
०				३				×				२			
सां	गं	गं	मं	गं	रें	नि	सां	नि	ध	प	प	ग	म	ग	ग
प्र	थ	म	प्र	ह	र	नि	शि	स	म	य	सु	हा	ऽ	व	त
				३				×				२			
सा	नि़	प़	नि़	सा	—	सा	सा	प	म॑	ग	म	ग	रे	सा	सा
धा	ऽ	ट	क	ल्या	ऽ	ण	औ	ढ़	व	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न
०				३				×				२			
सा	—	ग	म	प	—	नि	नि	सां	नि	ध	प	ग	म	ग	—
रा	ऽ	ग	वि	हा	ऽ	ग	मे	रो	ऽ	म	न	गा	ऽ	यें	ऽ
०				३				×				२			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग विलंबित ख्याल १

बन वन ढूंढ फिरी मनमोहन,
अजहू न पायो सखि री हरि दरशन।
शंख गदा चक्र सुदर्शन,
माधुरी मूरत बसी मोरे नैनन ॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

								प	प	धपमॅप	गम
								ब	न	वऽऽ,ऽ	ऽन
								३		४	
ग	—	रे	नि़	सा	सा	नि़	सा	सारे,सा	नि़	प़	नि़सा
ढूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ढ	फि	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽ	ऽ	रीऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	म	प	प	धमॅ	प	ग	गम,प	गम	ग	रे	सा
म	ऽ	ऽ	न	मोऽ	ऽ	ह	ऽऽ,ऽ	ऽऽ	न	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								ग	म	प	निनि
								शं	ऽ	ख	ऽग
								३		४	
सां	—	—	सांरेंसांनि	नि	—	सां	सांसां	नि	निध	प	प
हा	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	च	ऽ	क	ऽसु	द	रऽ	श	न
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सांरेंसांनि	नि	सां	गं	गंमं	गं	गंरेंसां	सां	सां	निसां
मा	धु	रीऽऽऽ	मू	र	त	बऽ	सी	ऽ,ऽऽ	मो	रे	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	धमप	गम	ग	रे	सा				
नै	ऽ	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽऽ	न	ऽ	न				
×		०		२		०					

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग विलम्बित ख्याल १

बेर भई सखि री अजहुँ पिया नहीं आये।
जब सों विदेस गये, भेजी ना पाती कोऊ,
आप नाहीं आये, न संदेस पठाये ।।

स्थायी ताल तिलवाड़ा मात्रा १६

			निध प धपमप गम
			बेऽ ऽ ऽऽऽऽ रभ
			३
ग — गम,प गम	ग रे सा सारे,सा	नि़ — सा सा	नि़ प़ नि़ नि़
ई ऽ ऽऽ,ऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ सऽ,ऽ	खि ऽ री ऽ	अ ज हु ऽ
×	२	०	३
ग म ग गम,प	निसां नि–ध प धमे	प गम ग —	
प्रि_ऽ ऽ याऽ,ऽ	नाऽ हिंऽऽऽ ऽ आऽ	ऽ ऽऽ ये ऽ	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म प धपमंप	नि — — नि	सां सां सां गं	रें नि सां निसां
ज व सों ऽऽऽवि	दे ऽ ऽ स	ग म न की	ऽ ऽ नो ऽऽ
३	×	२	०
सां — गं गंमं	गं — रें सां	सांरें सां नि ध पनि	नि धप गम ग
भे ऽ ऽ ऽऽ	जी ऽ ऽ ना	पाऽ ऽ ऽ ऽ तीऽ	को ऽऽ ऽऽ ऊ
३	×	२	०
सा नि़ सा गभ	ग म प पप	सां नि धमंप ग	गम,प गम ग सा
आ ऽ प नाहीं	आ ऽ ऽ येन	सं दे ऽ,सप ठा	ऽऽ,ऽ ऽऽ ऽ ये
३	×	२	०

+:०:+

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग द्रुत ख़्याल १

नैंना मोरे नीर भरे,
घरि घरि पल पल छिन छिन निसदिन,
जियरा नाहीं धीर धरे।
हरि दरशन को तरसत अँखियाँ
व्याकुल गोकुल ब्रज की सखियाँ,
ग्वाल बाल सब सखा पुकारें
शरण तिहारी आन परे।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ग	म	प	सां	निसां	निध	प	—	पर्म	प	ग	म	ग	—	सा	—
नै	ऽ	ना	ऽ	मोऽ	ऽऽ	रे	ऽ	नीऽ	ऽ	र	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
नि़	प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	प	प	मं	प	ग	म	ग	ग
घ	रि	घ	रि	प	ल	प	ल	छि	न	छि	न	नि	स	दि	न
०				३				×				२			
ग	म	प	सां	निसां	निध	प	—	पर्म	प	ग	म	ग	—	सा	—
जि	य	रा	ऽ	नाऽ	ऽऽ	हीं	ऽ	धीऽ	ऽ	र	ध	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म ग म	प प नि —	सां सां सां सां	सां रें सां —
ह रि द र	श न को ऽ	त र स त	अ खि यां
०	३	×	२
सां गं गं मं	गं रें नि सां	निध नि धप मप	ग म ग —
व्या ऽ कु ल	गो ऽ कु ल	ब्रऽ ज कीऽ,ऽ ऽ	स खि यां ऽ
०	३	×	२
मा नि़ प़ नि़	सा सा सा सा	प म ग म	ग रे सा —
ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल स ब	स खा ऽ पु	का ऽ रें ऽ
०	३	×	२
ग म प सां	निसां निध प —	पमं प ग म	ग — सा —
श र ण ति	हाऽ ऽऽ री ऽ	आऽ ऽ न प	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग द्रुत ख्याल २

पिया बिन परत न चैन सखि मोरी,
इत उत बैठत दिन बीतत मोहे,
तारे गिन गिन रैन सखि मोरी।
जब से पिया परदेश गमन कीनो,
नाहीं परत मोहे चैन सखि मोरी॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

गम	प	प	प	मं	प	ग	म	ग	—	—	प	गम	गरे	सानि़	सा
पिऽ	या	वि	न	प	र	त	न	चै	ऽ	ऽ	न	सऽ	खिऽ	मोऽ	री
०				३				×				२			
नि़	प़	नि़	नि़	सा	—	सा	सा	गम	प	ग	म	ग	ग	नि़	सा
इ	त	उ	त	बैं	ऽ	ठ	त	दिऽ	न	बी	ऽ	त	त	मो	हे
०				३				×				२			
ग	म	प	नि	सां	नि	ध	प	प	ग	—	म	गम	गरे	सानि़	सा
ता	ऽ	रे	ऽ	गि	न	गि	न	रै	ऽ	ऽ	न	सऽ	खिऽ	मोऽ	री
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	प	नि	सां	—	सां	सां	गंरें	गं	रें	सां	निध	निध	पर्म	प
ज	व	से	पि	या	ऽ	प	र	देऽ	ऽ	स	ग	मऽ	नऽ	कीऽ	नो
०				३				×				२			
ग	म	प	सां	नि	प	प	प	ग	—	—	प	गम	गरे	सानि	सा
ना	ऽ	ही	प	र	त	मो	हे	चैं	ऽ	ऽ	न	सऽ	खिऽ	मोऽ	री
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग विहाग द्रुत ख्याल ३

विरथा जनम गयो भजन बिन,
तनिक सोच न की मन मांहि,
जग में मगन भयो भजन बिन !
बालापन खेलत ही खोयो,
युवती संग सुन्दर तरूनी,
वृद्ध भयो कछु बन नहीं आवे,
सर पर काल खरो भजन बिन ।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सा	सा	ग	म	प	प	नि	सां	नि	ध	प	प	ग	म	ग	ग
बि	र	था	ऽ	ज	न	म	ग	यो	ऽ	ऽ	भ	ज	न	बि	न
०				३				×				२			
प	प	मं	प	ग	ग	ग	—	प	—	ग	म	ग	रे	सा	—
त	नि	क	सो	ऽ	च	न	ऽ	की	ऽ	म	न	मां	ऽ	हि	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	ग	म	प	प	नि	नि	सां	नि	ध	प	ग	म	गं	ग
ज	ग	में	ऽ	म		न	भ	यो	ऽ	ऽ	भ	ज	न	बि	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	प	नि	—	सां	सां	सां	—	सां	रें	सां	—
बा	ऽ	ला	ऽ	प	न	खे	ऽ	ल	त	ही	ऽ	खो	ऽ	यो	ऽ
०				३				×				२			
सां	गं	गं	मं	गं	रें	नि	सां	नि	ध	प	प	ग	म	ग	—
यु	व	ती	ऽ	स	न	मुं	ऽ	द	र	त	रु	नी	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
सा	नि़	प़	नि़	सा	—	सा	सा	प	प	म॑	प	ग	म	ग	—
वृ	ऽ	द्ध	भ	यो	ऽ	क	छु	ब	न	न	हीं	आ	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
सा	सां	ग	म	प	—	निं	नि	सां	नि	ध	प	ग	म	ग	सा
न	र	प	र	का	ऽ	ल	ख	रो	ऽ	ऽ	भ	ज	न	बि	न
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग द्रुत ख्याल ४

××·

टेर सुनो ब्रज राज दुलारे,
तुम संतन के हो रखवारे,
सूर अजामिल सदन कसाई,
तार दीन्ही हरि मीरा बाई,
जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर,
चक्र सुदर्शन तहाँ सँवारे ।।

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

गम	पसां	नि	ध	ध	—	मं	प	प	ग़	ग़	म	ग	रे	सा	—
टेऽ	ऽऽ	र	सु	नो	ऽ	ब्र	ज	रा	ऽ	ज	दु	ला	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			
नि	प़	नि़	सा	सा	सा	सा	-	प	—	ग	म	ग	रे	सा	सा
तु	म	सं	ऽ	त	न	के	ऽ	हो	ऽ	र	ख	वा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	—	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सांरें	सांनि	सां	—
मू	ऽ	र	अ	जा	ऽ	मि	ल	स	द	न	क	साऽ	ऽऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
सां	गं	गं	मं	गं	रें	नि	सां	नि	ध	पमं	प	ग	म	ग	—
ता	ऽ	र	दी	ऽ	न्ही	ह	रि	मी	ऽ	राऽ	ऽ	बा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	नि़	नि़	सा	—	सा	सा	गम	प	मं	मं	ग	म	ग	ग
ज	हँ	ज	हँ	भी	ऽ	र	प	रीऽ	ऽ	भ	ऽ	क्त	न	प	र
०				३				×				२			
ग	म	प	नि	सांनि	धप	मं	प	गम	प	मं	प	ग	म	ग	—
च	ऽ	रु	सु	दऽ	रऽ	श	न	त	हाँ	ऽ	सं	वा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२.			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग तराना

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सा	गग	मम	प	प	नि	नि	नि	सां	नि	ध	प	ग	म	ग	—
ना	दिर	दिर	दी	म्	त	न	न	दी	म्	त	न	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
नि	पप	निनि	निनि	सासा	सासा	सासा	सासा	पप	पप	ग	म	ग	रे	सा	—
ना	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			

– :०: –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा :

ग म ग म	प प नि नि	सां सां सां सां	सां सां सां सां
त न न त	न न तो म्	त न न न	न न न न
०	३	×	२
सां सां गं मं	गं रें नि सां	नि ध मं प	ग म ग ग
ओ दा नि ओ	दा नि दा नि	दी म् त न	न न न न
०	३	×	२
सा सासा गग गग	म म पप पप	निनि निनि निनि निनि	सां -- गंगं मंमं
धा तिर किट तक	धा धा तिर किट	घुम् किट तिट कत	धा ऽ तिट कत
०	३	×	२
गंगं रेंरें सां —	निनि सांसां निनि धध	प — गग मम	गग रेरे सा ऽ
गदि गन धा ऽ	तिट कत गदि गन	धा ऽ तिट कत	गदि गन धा ऽ
०	३	×	२

——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग ध्रुपद

नैनन में आन बसो,
मदन मोहन नंद लाल,
शीश मुकुट कानन कुण्डर,
मुरली अधर गले माल।
नरसिंह के किये काज,
द्रोपदी की राखी लाज,
देहु दरस मोहे आज,
संग लिये ग्वाल बाल ॥

स्थायी चारताल मात्रा १२

गम	प	प	प	प	—	प	ग	ग	म	ग	—
नैऽ	ऽ	न	न	में	ऽ	आ	ऽ	न	ब	सो	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	सा	नि़	प़	नि़	सा	प	ग	म	ग	-	सा
म	द	न	मो	ह	न	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
ग	म	प	नि	सां	सां	नि	ध	प	नि	नि	प
शी	ऽ	श	मु	कु	ट	का	न	न	कुं	ड	र
×		०		२		०		३		४	
पम	ग	म	ग	रे	सा	नि	ध	पम,प	ग	म	ग
मुर	ली	अ	ध	ऽ	र	ग	ले	ऽऽ,ऽ	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

ग	म	प	प	नि	—	सां	—	सां	सां	रें	सां
न	र	सि	ह	के	ऽ	कि	ऽ	ये	का	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
मांमां	गं	मं	गं	रें	सां	नि	ध	प	नि	—	प
द्रोऽ	ऽ	प	दी	ऽ	की	रा	ऽ	खी	ला	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
प	—	ग	म	ग	सा	गम	पग	म	ग	—	सा
दे	ऽ	हू	द	र	स	मोऽ	ऽऽ	हे	आ	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
सां	नि	ध	पम	प	—	प	ग	म	ग	रे	सा
सं	ऽ	गं	लिऽ	ये	ऽ	ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

—:०:—

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग विहाग धमार

आयो री आली फागुन मास ।
संग की सहेलरी पिया सन खेलत,
मैं किन संग खेलू फाग,
मोरे पिया नाहिं पास ।
नैनन की नींद गई,
वैरन रैंन भई,
कछु ना सुहावे भावे,
उन बिन जिया भयो निरास ।।

स्थायी धमार मात्रा १४

									सा	ग	म	प	प
									आ	ऽ	ऽ	यो	री
										३			
निसां	नि	धप	प	प	गम	ग	—	सा	नि़	प़	नि़	सा	सा
आऽ	ऽ	ऽली	फा	गु	नऽ	मा	ऽ	स	सं	ग	की	स	हे
×					२		०			३			
सा	सा	पप	ग	म	ग	गरे	सा	सा	ग	म	प	नि	नि
ल	री	पिया	स	न	खे	ऽऽ	ल	त	मैं	ऽ	ऽ	कि	न
×					२		०			३			
सां	–	सां	सां	—	सां	सा	—	सां	गं	सां	सांरें,सां	नि	ध
सं	ऽ	ग	खे	ऽ	लूँ	फा	ऽ	ग	मो	रे	पिऽ,ऽ	या	ऽ
×					२		०			३			
पं	नि	—	प	मंप	गम	ग	—	सा,	सा				
ऽ	ना	ऽ	हिं	ऽऽ	ऽऽ	पा	ऽ	स,	फा				
×					२		०						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

		ग	म प नि —
		नै	ऽ ऽ न ऽ
			३
नि नि — सां —	सां रेंसां	नि — सां	— — गं —
न की ऽ नीं ऽ	द गऽ	ई ऽ वै	ऽ ऽ र ऽ
×	२	०	३
— मं गं रें सां	सां सां	नि — सां	नि ध प —
ऽ न रै ऽ न	ऽ भ	ई ऽ क	ऽ ऽ छु ऽ
×	२	०	३
प -- ध पर्म प	गम ग	रे सा सां	सां गं मं गं
ना ऽ सु हाऽ ऽ	वेऽ भा	ऽ वे उ	न बि न जि
×	२	०	३
-गंरें सां -- नि प	मंप ग	म ग, सा	
ऽऽ या ऽ भ यो	निऽ रा	ऽ स, आ	
×	२	०	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा

परिचय

इस राग में गंधार निषाद वर्जित बाकी सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह बिलावल थाट का राग है। इसकी जाति औढ़व औढ़व है। इसका वादी धैवत तथा सम्वादी स्वर रिषभ है। गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर। इसके आरोह में धैवत, औ रअवरोह में रिषभ पर ठहराव करने से राग का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। वैसे भी इन दोनों स्वरों के वादी सम्वादी होने के नाते, इन दोनों स्वरों

सां म

पर ठहराव उचित ही है। 'सां ध ध म प ध म रे,' अथवा म प ध म रे ध़ सा। इसके अतिरिक्त षड़ज और पर भी ठहराव करने से अर्थात इन दोनों स्वरों पर आलाप या तान की समाप्ति करने राग में रंजकता उत्पन्न होती है। कई विद्वान मध्यम और षड़ज को वादी संवादी मानते हैं। परन्तु धैवत रिषभ को वादी संवादी मानना ही उचित है।

आरोह--सा रे म प ध सां।

अवरोह—सां ध म प ध, म रे, ध़ सा।

पकड़

म प ध, म रे, ध़ सा।

राग दुर्गा का दूसरा रूप खमाज थाट से भी मानते हैं। परन्तु वह दुर्गा इस दुर्गा से बिल्कुल पृथक है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा

आलाप

सा ध़ ध़ सा, सा रे म रे प, म रे, ध़ सा, सा रे म प, ध म रे, ध़ सा, सा रे म प, मप ध म रे प, म प ध ध म रे प, मप ध म रे, ध़ सा, सा ध़ ध़ सा, सा रे रे ध़ सा, सा रे म प, म रे प, म प ध म प म रे ध़ सा, सा रे म प, ध ध, म प, ध म रे, प, मप ध, ध सां, सां ध, म प ध सां, रें सां, ध सां रें ध सां, सां ध म प ध म रे, प मप ध म रे ध़ सा, सारे मप ध म प, ध म रे, प, म प ध सां, रें सां रें, ध सां, सां ध, रें सां, सां ध, म प ध सां, सां ध म प ध, म रे, ध़ सा, सा रे म प ध, म प ध सां, सां रें मं रें सां रें ध सां, सां ध, म प ध, म रे प, म प ध, प ध सां, ध सां, मं रें पं मं रें सां, सां ध, सां, रें सां, सां ध, ध म, मप ध, म रे ध़ सा, सा रे म, रे म प, म प ध, प ध सां, सां ध म प ध सां, रें मं, रें सां, ध सां ध म प, ध सां, ध म प, म रे, प, म प, ध सां, ध रें, सां ध, म प, म प ध सां, ध म प, ध म रे, ध़ सा, सा रे रे सा, रे म रे प, प म प ध, ध म रे, रे प, म प ध, ध सां सां, सां ध, रें सां, रें ध सां, सां ध, म प ध, सां सां ध म प मप ध म रे, ध़ सा, सा रे म प ध सां, रें सां, ध, सां, रें मं रें, पं मं रें ध सां, सां ध, म प ध सां, सां ध, म प ध सां, सां ध, म प ध, म रे, प म ध, म रे, ध़ सा, सा रे रे सा, म म रे प, म रे प, म प ध, ध म रे, म प ध सां, ध, म, प ध सां, रें सां ध, सां रें मं, रें सां, ध सां ध प, म प ध, सां ध म प ध म रे प, प, म प ध प ध सां, ध सां रें, सां रें मं, रें मं पं, पं मं रें, ध सां, सां ध प, म प ध म रे ध़ सा ।

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा तानें

१- सारे मरे मप धप धसां धप मरे साऽ ।

२- सारे मप धप मप धसां धप मरे साऽ ।

३- सारे मप धसां रेंसां धसां धप मरे साऽ ।

४- मप धसां रेंसां धसां धप मप मरे साऽ ।

५- मप धसां रेंमं रेंसां धसां धप मरे साऽ ।

६- सांसां धप मप धसां धप मप मरे साऽ ।

७- सांसां धप मप मरे सारे मप धसां रेंसां ।

८- सांरें मंमं रेंसां धसां धप मप मरे साऽ ।

९- सारे मम रेम पप मप धध पध सांसां धसां रेंम रेंसां धसां धप मप मरे साऽ ।

१०- सारे मप रेम पध मप धसां पध सांरें मंमं रेंसां धसां धप मप मरे साध साऽ ।

११- सारे मरे मप धप धसां रेंसां मंमं रेंसां धसां धप मप धप मप मरे साध साऽ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२- सारे मम रेसा रेम पप मरे मप धध पम पध सांसां धप धसां रेंरें सांध
सांरें मंमं रेंसां धसां धप मप धप मरे साऽ।

१३- सारे मप मरे रेम पध पम मप धसां धप पध सांरें सांध धसां रेंमं रेंसां
धसां धप मप धसां धप मप धप मरे साऽ।

१४- सारे मप धसां रेंमं रेंसां धप मप मरे सारे मप धसां रेंसां धसां धप मप
मरे सारे मप धसां धप मप मरे सारे मप मरे साऽ, धप मप मरे सारे
मप मरे साऽ।

१५- रेम रेसा मप मरे पध पम धसां धप सांरें सांध रेंमं रेंसां धसां धप मरे
साऽ।

१६ सारे मप मरे मप धसां धप धसां रेंमं रेंसां धसां धप मप धप मप मरे
साऽ।

१७- सारे मरे सारे मप मरे सारे मप धप मरे सारे मप धसां धप मरे सारे मप
धसां रेंसां धप मरे सारे मप धसां रेंमं रेंसां धसां धप मप धप मप मरे
साऽ।

१८- सारे मम रेम रेसा रेम पप मप मरे मप धध पध पम पध सांसां धसां धप
धसां रेंरें सांरें सांध सांरें मंमं रेंमं रेंसां धसां धप मप धप मप मरे साध
साऽ।

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा स्वर मालिका

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सा	रे	म	प	ध	—	ध	ध	म	प	ध	ध	म	रे	मा	—
३				×				२				०			
ध़	ध़	सा	रे	म	प	ध	सां	ध	सां	ध	प	म	रे	सा	—
३				×				२				०			

अन्तरा

म	प	ध	ध	सां	—	सां	सां	ध	रें	ध	सां	ध	ध	म	प
३				×				२				०			
रें	मं	रें	सां	ध	प	म	प	ध	सां	ध	प	म	रे	सा	—
३				×				२				०			

—।०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा लक्षण गीत

दुर्गा थाट बिलावल मानी,
धैवत वादी रिषभ सम्वादी,
ग नी दोनों वरज कर जानी।
द्वितीय प्रहर निशि समय सुहावत,
औड़व औढ़व गुनि भेद बतावत,
म प ध ग रे ध़ सा सुर सगत,
अति सबके मन भानी।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सांध	सां	ध	ध	प	—	प	प	मप	ध	म	रे	प	—	प	—
दुऽ	र	गा	ऽ	था	ऽ	ट	बि	लाऽ	ऽ	व	ल	मा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
ध	ध	ध	ध	म	प	प	प	म	म	रे	सा	ध़	—	सा	—
धै	ऽ	व	त	वा	ऽ	दी	रि	ष	भ	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ
०				३				×				२			
सा	—	म	रे	प	—	प	प	सांध	सां	सां	सां	धसां	धप	मरे	साऽ
ग	ऽ	नी	ऽ	दो	ऽ	नो	व	रऽ	ज	क	र	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नीऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	म	प	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
द्वि	ती	य	प्र	ह	र	नि	शि	स	म	य	सु	हा	ऽ	व	त
०				३				×				२			
सां	सां	सां	मं	रें	रें	सां	सां	ध	—	ध	म	प	—	प	प
औ	ढ़	व	औ	ढ़	व	गु	नि	भे	ऽ	द	व	ता	ऽ	व	त
०				३				×				२			
म	प	ध	म	रे	रे	ध़	सा	सा	सा	म	रे	प	म	सां	ध
म	प	ध	म	रे	ऽ	ध़	सा	सु	र	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ग	त
०				३				×				२			
सां	सां	ध	ध	म	—	प	प	सांध	सांरें	सांध	सांसां	धसां	धप	मरे	साऽ
अ	ति	स	ब	के	ऽ	म	न	भाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नीऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा विलंबित ख्याल १

—:०:—

सीता पति राम सुमिर, अवध पुरी के बसैया ।
मंगल करन अमंगल हारी, करत भव हू सो पार नैया ॥

——

स्थायी एकताल मात्रा १२

								सांध,सां	ध	मप	मरे
								सीऽ,ऽ	ता	ऽऽ	पति
								३		४	
प	—	मप,ध	—	म	म	रे	सा	ध़	ध़	सा	सा
रा	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽ	म	सु	मि	र	अ	व	ध	पु
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	मप,ध	ध	म	रे	सा				
री	ऽ	ऽ	केऽ,ऽ	ब	सै	ऽ	या				
×		०		२		०					

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								म	—	प	सांध
								मं	ऽ	ग	लऽ
								३		४	
सां	—	सां	सांसां	ध	—	सां	सांरें	सां	ध	म	प
क	ऽ	र	नग्र	मं	ऽ	ग	लऽ	हा	ऽ	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
मप,ध	म	प	प	सां	ध	—	सां	सां	सां	रें	सांसां
कऽ,ऽ	ऽ	र	त	भ	ऽ	ऽ	ऽ	व	हू	ऽ	सोंऽ
×		०		२		०		३		४	
मं	रें	सांध	सां	धपमप	म	रे	सा				
पा	ऽ	ऽऽ	र	,नैऽऽऽ	ऽ	ऽ	या				
×		०		२		०					

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा बिलम्बित ख्याल ?

——

बाजत बांसुरिया मधुबन में,
तान सुनत आईं सब सखियाँ।
सुधि बिसराई राधा डोलत,
कहत बनत नाहीं नेह की बतियाँ।

—:o:—

स्थायी तिलवाडा मात्रा १६

			मपधसां धप,म प धपमप
			बाऽऽऽ ऽऽ ऽ ज तऽऽऽ
			३
ध — म म	प — मपध ध	म रे साध़ सा	ध़ — सा सारे
बां ऽ सु रि	या ऽ मऽऽ धु	ब न मेंऽ ऽ	ता ऽ न सुऽ
×	२	०	३
प प धमप ध	— सां सां ध	म — धपम,प मरेसारे	
न त आऽऽ ईं	ऽ स ब स	खि ऽ याँऽऽ,ऽ ऽऽऽऽ	
×	२	०	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			म प सां ध
			सु धि वि स
			३
सां — — सां	धसां,रें सां — ध	म प प सां	ध सां रें मं
रा ऽ ऽ ई	राऽ,ऽ धा ऽ डो	ऽ ल त क	ह त ऽ ब
×	२	०	३
रें रें सां सां	ध म प सांध,सां	ध म धपम,प मरे,सा	
न त ना ही	ने ह की ऽऽ ऽ	ब ति याँऽऽ,ऽ ऽऽ,ऽ	
×	२	०	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा द्रुत ख्याल १

हरि को नाम सुमिर मन मोरे,
जासों पाप कटें सब तोरे।
आन परो जो शरण प्रभु की,
भव सागर सों सहज तरो रे।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

मप	ध	म	रे	मप	धसां	ध	ध	म	म	रे	सा	ध़	सा	सा	—
हS	रि	को	S	नाS	SS	म	सु	मि	र	म	न	मो	S	रे	S
०				३				×				२			
ध़	—	सा	—	म	रे	म	प	सां	ध	सां	सां	धसां	धप	मरे	मप
जा	S	सों	S	पा	S	प	क	टे	S	स	ब	तोS	SS	SS	रेS
०				३				×				२			

अन्तरा

म	—	म	म	म	—	सां	ध	सां	सां	सां	सां	रें	ध	सां	—
आ	S	न	प	रो	S	जो	S	श	र	ण	प्र	भू	S	की	S
०				३				×				२			
ध	सां	रें	मं	रें	रें	सां	—	ध	सां	रें	सां	धसां	धप	मरे	मप
भ	व	सा	S	ग	र	सों	S	स	ह	ज	त	रोS	SS	SS	रेS
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा द्रुत ख्याल २

सांवरिया सुनो विनती हमारी,
आन परो मैं शरण तिहारी।
मो सम नीच पतित नाहीं कोऊ,
मोहे नाथ अब लेहू उबारी॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

मप	धसां	धप	म	प	—	मप	ध	म	म	रें	सा	ध़	सा	सा	—
सांऽ	ऽऽ	वऽ	रि	या	ऽ	सुऽ	नो	वि	न	ती	ह	मा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
ध़	सा	सा	सा	म	रें	प	प	सांअ	सां	सां	सां	धसां	धप	मप	प
आ	ऽ	न	प	रो	ऽ	मैं	ऽ	शऽ	र	न	ति	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
०				३				×				२			

अन्तरा

म	—	म	म	प	—	ध	पध	सां	सां	सा	सां	सां	ध़	सां	—
मो	ऽ	स	म	नी	ऽ	च	पऽ	ति	त	ना	हीं	को	ऽ	ऊ	ऽ
०				३				×				२			
धसां	रेंम	रें	मं	रें	रें	सां	सां	धं	सां	सां	सां	धसां	धप	मप	प
मोऽ	ऽऽ	हे	ना	ऽ	थ	अ	ब	ले	ऽ	हू	उ	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा द्रुत ख्याल ३

आई ऋतु बरसन को प्यारी।
उमड़ घुमड़ नव बादल छाये।
शीतल पवन चले मतवारी॥
गरज गरज घन घोर डरावे।
चमके बिजुरिया जिया घबरावे।
हूक उठत जब कूक सुनावे।
अम्बुआ डार पर कोयल कारी॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

मप	धसां	ध	—	म	रे	सा	रे	प	प	प	—	धध	पम	प	—
आऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ऋ	तु	ब	र	स	न	को	ऽ	प्याऽ	ऽऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
म	म	म	म	मप	ध	ध	ध	म	—	रे	सा	ध़	—	सा	—
उ	म	ड़	घु	मऽ	ड़	न	व	बा	ऽ	द	ल	छा	ऽ	ये	ऽ
०				३				×				२			
सा	—	म	रे	प	म	ध	प	पध	सां	सां	सां	ध	म	प	—
शी	ऽ	त	ल	प	व	न	च	लेऽ	ऽ	म	त	वा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	म	प	प	सां	ध	पध	सां	सां	सां	रें	ध	सां	—
ग	र	ज	ग	र	ज	घ	न	घोऽ	ऽ	र	ड	रा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
सां	सां	मं	मं	रें	रें	सां	—	ध	सां	ध	ध	म	प	प	—
च	म	के	बि	जु	रि	या	ऽ	जि	या	घ	ब	रा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
म	—	म	प	मप	ध	ध	ध	म	—	रे	सा	ध़	—	सा	—
हू़	ऽ	क	उ	ठऽ	त	ज	ब	कू	ऽ	क	सु	ना	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
र	म	प	मप	धसां	ध	सां	सां	रें	मं	रें	सां	धसां	रेंसां	धप	मप
अं	बु	आ	डाऽ	ऽऽ	र	प	र	को	ऽ	य	ल	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ
०				३				×							

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा द्रुत ख्याल ४

पिया नाही सखि आये, छिन छिन निसदिन, मोहे विरह सताये।
जब सों पिया परदेस गयो री आली,
विकुल जिया मोरा, चैन न पाए।

स्थायी झपताल मात्रा १०

प	प	धपम	पधसां	ध	म	रे	प	—	प
पि	या	नाऽऽ	ऽऽऽ	हीं	स	खि	आ	ऽ	ए
×		२			०		३		
रे	म	रेम	प	प	मरे	सा	ध़	सा	सा
छि	न	छिऽ	ऽ	न	निऽ	स	दि	ऽ	न
×		२			०		३		
ध	सां	मरे	प	प	सांध	सां	धसां	धप	म
मो	हे	विऽ	ऽ	र	हऽ	स	ताऽ	ऽऽ	ए
×		२			०		३		

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	प	—	ध	सां	ध	सां	—	सां
ज	ब	सों	ऽ	पि	या	ऽ	प	ऽ	र
×		२			०		३		
ध	ध	सां	—	रें	सां	ध	धध	पम	प
दे	ऽ	स	ऽ	ग	गो	री	आऽ	ऽऽ	ली
×		२			०		३		
म	प	सांध	सां	सां	मंरें	मं	रें	सां	सां
वि	कु	लऽ	ऽ	जि	याऽ	ऽ	मो	ऽ	रा
×		२			०		३		
धसां	धप	म	प	प	रेम	रेसा	ध़	सा	सा
चैंऽ	ऽऽ	न	ऽ	न	पाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ए
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा द्रुत ख्याल ५

बोलन लागे मोर सखि री आज,
छाई घटा घन घोर सखि री आज ।
नन्हीं नन्हीं नन्हीं बूंदनियां बरसें,
कोयल कर रही शोर सखि री आज ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पध	सां	ध	प	म	रे	सा	रे	प	—	प	प	ध	म	प	प
बोऽ	ऽ	ल	न	ला	ऽ	गे	ऽ	मो	ऽ	र	स	खि	री	आ	ज
०				३				×				२			
म	—	प	ध	सां	ध	सां	सां	सां	ध	सां	रें	सां	ध	म	प
छा	ऽ	ई	घ	टा	ऽ	घ	न	घो	ऽ	र	स	खि	री	आ	ज
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	म	म	प	प	सां	ध	सां	सां	सां	—	सां	रें	सां	—
न	न्हीं	न	न्हीं	न	न्हीं	बूं	ऽ	द	नि	यां	ऽ	ब	र	सें	ऽ
०				३				×				२			
(सां) ध	—	ध	ध	सां	सां	रें	रें	सां	—	ध	रें	सां	ध	म	प
को	ऽ	य	ल	क	र	र	ही	शो	ऽ	र	स	खि	री	आ	ज
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा तराना

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सां	सां	ध	प	म	रे	सा	रे	प	—	—	प	ध	म	प	प
दी	म्	त	न	न	न	दि	र	ना	ऽ	ऽ	त	दा	रे	दा	नि
०				३				×				२			
ध	ध	ध	म	प	प	प	प	मप	ध	म	रे	सा	ध़	सा	--
त	दा	रे	त	दा	रे	रे	नि	दीऽ	म्	त	न	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	म	रे	प	प	ध	ध	सांसां	सांसां	ध	प	म	रे	सा	—
ओ	दा	दा	नि	ओ	दा	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	मम	मम	मम	प	पप	पप	पप	सांसां	सांसां	धध	ध	सां	सां	सां	—
ना	दिर	दिर	दिर	तु	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
सांसां	मं	मं	रें	सांसां	धध	मम	पप	धध	सांसां	ध	प	म	रे	सा	—
धित्	लां	ग	ना	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा ध्रुपद

गरजन लागे बादर कारे,
दादुर मोर पपीहा बोले,
रूमझुम बरसे मेहरवा रे ।

सावन की ऋतु आई प्यारी,
झूलत वन बन डारी डारी,
गावत नाचत ब्रज की नारी,
झूला झूला नंद द्वारे ॥

स्थायी ध्रुपद मात्रा १२

पप	प	प	धमप	पधसां	ध	मम	रे	रे	प	—	प
गर	ज	न	लाऽऽ	ऽऽऽ	गे	बाऽ	द	र	का	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
मपध	ध	ध	म	म	मं	रे	—	सा	ध॒	सा	सा
दाऽऽ	दु	र	मो	र	प	पी	ऽ	हा	बो	ऽ	ले
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	सांध	सां	सां	सांध	ध	म	म	प	प
रूम	झू	म	बऽ	र	से	मेंऽ	ह	र	वा	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	प	ध	ध	सां	—	ध	सां	—	सां
सा	व	न	की	ऋ	तु	आ	ऽ	ई	व्या	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	मं	रेंरें	सां	सां	ध	—	म	म	प	प
झू	म	त	बन	ब	न	डा	ऽ	री	डा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
प	प	प	मपध	ध	ध	म	म	रे	साध्	सा	सा
गा	व	त	नाऽऽ	च	त	ब्र	ज	की	नाऽ	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	सांध	सां	सां	रें	मं	रें	सांध	पम	प
झू	ल	त	झूऽ	ऽ	ला	नं	ऽ	द	द्वाऽ	ऽऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गा धमार

व्रज में आज फाग मच्यो री,
ग्वाल बाल संग धूम मचाई,
खेलत नंद कुमार होरी ।
इत मोहन उत राधा सोहत,
अति मन भाई रंग भरी जोरी ।।

स्थायी ताल धमार मात्रा १४

प	प	धधरमप	सां	ध	म	प	मप,ध	ध	म	रे	प	—	प
व्र	ज	मेंSSSS	आ	S	S	ज	फाSSS	S	ग	म	च्यो	S	री
×					२		०			३			
म	—	प	सां	ध	ध	सां	सां	ध	म	प	म	रे	सा
ग्वा	S	ल	बा	S	ल	सं	ग	धू	म	म	चा	S	ई
×					२		०			३			
ध़	-	सा	सा	म	रे	म	प	मपध	—	म	रे	—	सा
खे	S	ल	त	नं	S	द	कु	माSS	S	र	हो	S	री
×					२		०			३			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	प	प	सां	ध	सां	—	सां	सां	रें	सां	सां
इ	त	मो	ह	न	उ	त	रा	ऽ	धा	सो	ऽ	ह	त
×					२		०			३			
सां	सां	मं	मं	रें	—	सां	ध	सां	ध	म	रे	—	सा
अ	ति	मं	न	भा	ऽ	ई	रं	ग	भ	री	जो	ऽ	री
×					२		०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू

परिचय

इस राग में गंधार, निषाद तथा धैवत दोनों, अन्य शुद्ध स्वरों का प्रयोग करते हैं। वैसे तो यह राग संकीर्ण प्रकृति का होने के कारण सब स्वरों का प्रयोग किया जा सकता है और ऐसा करने से राग की रंजकता व स्वरूप नष्ट होने की सम्भावना नहीं होती। प्रायः आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल स्वरों का प्रयोग किया जाता है। इसका वादी स्वर कोमल गंधार और सम्वादी तीव्र निषाद है। यह काफ़ी थाट का राग है। गायन समय दिन का तीसरा पहर है। 'ग म ध प ग रे सा नि़ सा' अथवा 'सा नि़ ध़ प़ म़ प़ नि़ सा ग रे सा नि़ सा,' ये स्वर समूह अधिक सुन्दर प्रतीत होते हैं। यह राग संकीर्ण प्रकृति का होने के कारण ठुमरी अंग की गायकी की प्रधानता रहती है। इसमें करुण श्रृंगार रस के पद अधिक प्रिय प्रतीत होते हैं।

आरोह:—नि़ सा ग रे सा नि़ सा ग म प नि सां।

अवरोह—सां नि ध प, ग म ध प, ग रे सा नि़ सा।

पकड़

ग म ध प ग रे सा नि़ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू

आलाप

सा नि़ सा ग रे सा, नि़ सा ध़ प़ म़ प़ नि़ सा, ग रे सा नि़ सा, ध़ प
नि़ सा, ग रे नि़ सा, सा नि़ सा ग म ग रे सा, नि सा ध़ प़ म़ प़. नि़ सा
ग रे सा, नि़ सा ग म प ग प ग रे, नि़ सा, सा ग म प, ग रे सा, सा ग म
प ध प, ग म ध प ग म ग रे सा, नि़ सा ग म प, ग मं ध प, ग म प ग रें,
नि़ सा, ध़ प़ म़ प़ नि़ सा, नि़ सा ध प, ग म प ग म ध प, ग म ग रे नि़
सा, सा ग म प, ध प ग म प, ग म ध प, म प नि सां, सां नि ध प, म प
नि सा. रें नि सां, नि ध प, ग म ध प, ग रे सा, नि़ ध़ प़, म़ प़ नि़ सा, ग
रे नि़ सा, नि़ सा ग म प, नि सां गं रें सां, ध प, म प नि सां गं रें सां,
नि ध प, ग म ध प, सां नि ध प, ग म प, ग म ग रे, नि़ सा, सा ग म प,
ग म ध प, ग रे नि़ सा, सा ग म प, ग म ध प, म प नि सां, गं रें सां,
रें नि सां ध प, सां नि ध प, रें सां, नि ध प, गं रें सां, नि सां ध प, ग म
ध प, ग रे सा, नि़ सा ग म ग, म प; ध म प नि सां, गं रें सां, नि सां. गं मं
गं रें सां, नि सां गं मं गं रें सां, नि सां गं मं गं रे सा, नि सां गं मं प गं
रें नि सां, गं रें सां, नि सां ध प, म प नि सां, गं रें सां, नि सां ध प, ग म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध प, नि ध प, सां नि ध प, म प ध प, म प नि सां, रें सां, रें नि सां, गं रें सां, गं मं गं रें सां, गं मं पं, गं रें सां, नि सां गं रें सां, गं मं पं गं रें सां, नि सां ध प, ग म ध प, ग म प ग म ग रे, नि़ सा, ध़ प़, म़ प़ नि़ सा, ग सा, ग म ग रे सा, प म ग म ग रे सा, ध प म प, ग म प म ग रे सा, नि सां ध प, ग म ध प ग रे सा, खां नि ध प, रें सां, गं रें सां, नि सां ध प, ग म प म ग म ग रे सा।

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू तानें

१- साग रेसा निसा गम पम गम गरे साऽ ।

२- निसा गग रेसा गम पम गग रेसा निसा ।

३- सानि धप मप निसा गग रेसा रेनि साऽ ।

४- निसा गम पम गम गग रेसा रेनि साऽ ।

५- निसा गम पध पम गम गरे सानि साऽ ।

६- साग मग मप धप गम गरे सानि साऽ ।

७- साग मप गम पध पम गम गरे साऽ ।

८- गम पम गम पध पम गम गग रेसा ।

९- पम गम पध पम गम गरे सानि साऽ ।

१०- पध पम पनि सांनि धप मप गम पऽ ।

११- मप निसां धप मप गम गरे सानि साऽ ।

१२- मप निसां रेंसां निध पम गम पध पऽ ।

१३- मप निसां रेंगं रेंसां निध पम गम पऽ ।

१४- सांनि धप मप गम पम गम गरे साऽ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५- सांरें सांनि धप मप गम गरे सानि़ साऽ ।

१६- सांगं रेंसां निध पम गम गरे सानि़ साऽ ।

१७- निसा गग रेसा निसा गम गग रेसा निसा गम पम गम गग रेसा निसा
गम पध पम गम गग रेसा निसा गम पध निसां निध पम गम पम गम
गग रेसा निसा ।

१८- साग मग मप धप मप निसां गंगं रेंसां निनि धप गम पम गम गग रेसा
निसा ।

१९- साग रेसा निसा गम गग रेसा निसा पम गम गग रेसा निसा निनि धप
मप निसां रेंसा निध पम गम पम गग रेसा निसा ।

२०- गम गग रेसा धप मप गम गग रेसा निनि धप मप निसां गंगं रेंसां निध
पम पनि सांरें सांनि धप गम गरे सांनि़ साऽ ।

२१- पध पम गम गग रेसा निसा गम पनि सांगं रेंसां निध पम पनि सांरें सांनि
धप मप निसां निध पम गम गरे सानि़ साऽ ।

२२- सांगं रेंसां निध पम पनि सांरें सांनि धप मप निसां निध पम गम गर
सानि़ साऽ ।

२३- साग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां निसां गंगं रेंसां निध
पम पनि सांरें सांनि धप गम पम गम गग रेसा ।

२४- सांनि धप गम गग रेसा निसा गम पम गम पध पम गम पध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निध पम गम पम गम पध निसां रेंसां निध पम गम पध निसा रेंगं रेंसां निध पम गम पध पम गम गग रेसा ।

२५- सांनि धप मप निसां गगं रेंसां निसां गमं गंगं रेंसां निसां गम पम गमं गंगं रेंसा निसां निध पध पम गम गरे सानि साऽ।

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू स्वर मालिका

स्थायी तीनताल मात्रा १६

नि़	सा	ग	म	प	—	ध̱	प	ग	म	प	म	ग̱	रे	नि़	सा
३				×				२				०			
सा	नि़	ध़̱	प़	म़	प़	नि़	सा	ग	म	प	प	ग̱	रे	नि़	सा
३				×				२				०			

अन्तरा

म	प	नि	नि	सां	—	सां	सां	गं	मं	पं	मं	ग̱ं	रें	नि	सां
३				×				२				०			
सां	नि̱	ध̱	प	प	ध̱	प	म	ग	म	प	प	ग̱	रे	नि़	सां
३				×				२				०			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू लक्षण गीत

पीलू राग मेरो मन लीनो ।
दोऊ गंधार धैवत नि दोंनो ।
आरोहन धैवत रिषभ तज दीनो ।
सब कोऊ मानत थाट सों काफ़ी
संकीरण कर अंत ही सुहावे ।
तृतीय प्रहर दिन गायन कीनो ।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

गम	धप	ग	रे	सा	—	नि	सा	ध	—	नि	नि	सा	-	सा	—
पीऽ	ऽऽ	लू	ऽ	रा	ऽ	ग	मे	रो	ऽ	म	न	ली	ऽ	नो	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	ग	रे	सानि	सा	ध	—	ध	प	नि	—	सा	—	सा	—
दो	ऊ	गं	धा	ऽऽ	र	धै	ऽ	व	त	नि	ऽ	दों	ऽ	नो	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	ग	म	ध	ध	प	प	ग	म	ध	प	ग	—	रे	सा
आ	रो	ह	न	धै	व	त	रि	ष	भ	त	ज	दी	ऽ	नो	ऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म प नि	सां — सां सां	सां ग॒ रें सां	नि — सां —
स ब को ऊ	मा ऽ न त	था ऽ ट सों	का ऽ फ़ी ऽ
०	३	×	२
नि सां नि सां	ध॒ ध॒ प प	सां नि सां सां	ध॒ — प —
सं ऽ की ऽ	र न क र	अ त ही सु	हा ऽ वे ऽ
०	३	×	२
ग म ध॒ प	ग॒ ग॒ रे सा	नि॒ सा ध॒ प॒	नि॒ — सा सा
तृ ती य प्र	ह॒ र दि न	गा ऽ य न	की ऽ नो ऽ
०	३	×	२

×०:×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू विलम्बित ख्याल १

नाद भेद अपरम्पार, थके वेद योगी मुनि सिद्ध गाये ।
सुर सागर असार पार ना कोउ पाये ॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

							ग	म	ग	रेसा	रेसा
							ना	ऽ	द	भेऽ	दऽ
								३		४	
नि़	ध़	पनि़	सा	गरे	नि़	सा	सा	ग	म	गम.प	पप
अ	प	रंऽ	पा	ऽऽ	ऽ	र	थ	के	ऽ	वेऽ,ऽ	ऽद
×				२		०		३		४	
नि	—	सां	सां	गं	रेंसां,रें	नि	सां	नि	सां	ध	प
यो	ऽ	ऽ	गी	मु	ऽऽ,ऽ	ऽ	नि	सि	ऽ	ऽ	द्ध
×		०		२		०		६		४	
ग	म	प	—	गरे	सानि़	सा					
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ए					
×		०		२		०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								ग	म	प	पनि
								सु	ऽ	र	साऽ
								३		४	
सां	—	निसां	गं	रें	सारें	नि	सां	नि	सां	ध	प
ग	ऽ	रऽ	म्र	ऽ	साऽ	ऽ	र	पा	ऽ	र	ना
×		०		२		०		३		४	
गम,प	—	प	ग	म	गरे	निसा					
कोऽ,ऽ	ऽ	ऊ	पा	ऽ	ऽऽ	येऽ					

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू विलम्बित ख्याल १

जिया नाहि लागे इक घरी पल छिन।
निसदिन रटत राधा मन मोहन।
वैरन रैन नैन नहीं निंदिया।
अजहु न पायो हरि दरशन॥

स्थायी तिलवाड़ा मात्रा १६

			ग म ध॒ प
			जि या ना ही
			३
ग॒ — रे सा	नि़ सा ध़॒ प़	नि़ नि़ सा सा	सा सा ग म
ला ऽ गे ऽ	इ क घ रि	प ल छि न	नि स दि न
×	२		३
प प म प	नि सां नि सां	ध॒ — प प	
र ट त रा	धा ऽ म न	मो ऽ ह न	
×	२	०	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			म — प नि
			वै ऽ र न
			३
सां — सां नि	सां गं रें सा	रें सांनि सां —	नि सां ध —
रैं ऽ न नैं	ऽ न न हीं	निं दिऽ या ऽ	अ ज हू ऽ
×	२	०	३
प — ग म	ध प ग म	ग रे नि सा	
न ऽ पा ऽ	यो ऽ ह रि	द र श न	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू द्रुत ख्याल १

मंगल गावत सखियाँ सारी, प्रगट भये आज कृष्ण मुरारी।
नंद बाबा घर कृष्ण बाजत बधाई, हरिषत डोलत सब नर नारी।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ग	म	ध	प	ग	—	रे	सा	नि़	सा	ध	प	नि़	-	सा	—
मं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	व	त	स	खि	याँ	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
सा	सा	म	म	प	—	प	प	ग	म	ध	प	ग	रे	सानि	सा
प्र	ग	ट	भ	ये	ऽ	आ	ज	कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	रीऽ	ऽ
०				०				×				२			

अन्तरा

पध	पम	ग	म	प	ध	प	म	प	नि	सां	गं	रें	सांनि	सां	—
नंऽ	दऽ	बा	ऽ	बा	ऽ	घ	र	बं	ज	त	ब	धा	ऽऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
नि	सां	ध	प	पध	पम	ग	म	ग	म	ध	प	ग	गरे	सानि	सा
ह	र	षि	त	डोऽ	ऽऽ	ल	त	स	ब	न	र	ना	ऽऽ	रीऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू द्रुत ख्याल २

गोरी छम छम नीर भरे हो।
गोरी-गोरी बहियाँ हरी-हरी चूरियाँ।
पग पायल झनकार करे॥
नवली नवेली यौवन मदमाती।
पिया मन भावन प्रेम रंग राती।
अधरन मुस्कान अति ही सुहावे।
नैनन माही लाज धरे॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सारे गरे सा नि़	— ग म धप	ग रे सा नि़	सा — — सा
गोऽ ऽऽ री ऽ	ऽ छ म छम	नी ऽ र भ	रे ऽ ऽ हो
२	०	३	×
नि़ध़ नि़ नि़ सा	सा सा — ग	ग गरे सा नि़	सा सा सा —
गोरी गो री ब	हि याँ ऽ ऽ	ऽ हरी ह री	चू रि याँ ऽ
२	०	३	×
सा सा ग म	प प प ध	पनि सां ध प	गम गरे सानि़ सा
प ग पा ऽ	य ल झ न	काऽ र क	रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म प नि	सां — सां सां	सांरें गं रें सां	रें सांनि सा —
न व ली न	वे ऽ ली यौ	वऽ न म द	मा ऽऽ ती ऽ
०	३	×	२
नि सां सां सां	ध — प नि	सां सां नि सां	ध — प —
पि या म न	भा ऽ व न	प्रे म रं ,ग	रा ऽ ती ऽ
०	३	×	२
ग म ध प	ग रे सा नि़	ध़ ध नि़ नि़	सा — सा —
अ ध र न	मु स का न	अ ति ही सु	हा ऽ वे ऽ
०	३	×	२
सा सा ग म	प प ध ध	पनि सां ध प	गम गरे सानि़ सा
नै ऽ न न	मा ऽ हीं ऽ	लाऽ ऽ ज व	रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू द्रुत ख्याल ३

काहे करत निठुराई श्याम मोसे।
हूँ जल यमुना भरत जात थी।
लपक झपक मोरी गगरी गिराई ।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ग	म	ध़	प	ग़	रे	सा	नि़	सा	—	सा	ग	—	म	प	प
का	ऽ	हे	क	र	त	नि	ठु	रा	ऽ	ई	श्या	ऽ	म	मो	से
०				३				×				२			

अन्तरा

प	—	प	नि	सां	सां	सां	—	सांरें	गं	रें	सां	रें	सांनि	सां	—
हूँ	ऽ	ज	ल	य	मु	ना	ऽ	भऽ	र	न	जा	ऽ	तऽ	थी	ऽ
०				३				×				२			
प	ध़	प	नि	सां	सां	ध़	प	ग	म	ध़	प	गम	गरे	सानि़	सा
ल	प	क	झ	प	क	मो	री	ग	ग	री	गि	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू द्रुत ख्याल ४

हरि को सुमिरन निसदिन करिये।
जासों कटत पाप सब तोरे।
भव सागर सों सहज ही तरिये।।
कृपा सिंधु करूणा मय स्वामी।
घट-घट वासी अंतर यामी।
शरण लेत भव व्याधि हरिये।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ग	म	ध॒	प	गम	गरे	सानि॒	सा	नि॒	ध॒	नि॒	नि॒	सा	सा	सा	—
ह	रि	को	ऽ	सुऽ	मिऽ	रऽ	न	नि	स	दि	न	क	रि	ये	ऽ
०				३				×				२			
नि॒	ध॒	नि॒	सा	सा	सा	सा	सा	ग	ग	ग	म	प	—	प	—
जा	ऽ	सों	ऽ	क	ट	त	पा	ऽ	प	स	ब	तो	ऽ	रे	ऽ
०				६				×				२			
म	प	नि	सा	ध॒	ध॒	प	—	ग	म	ध॒	प	गम	गरे	सानि॒	सा
भ	व	सा	ऽ	ग	र	सों	ऽ	स	ह	ज	ही	तऽ	रिऽ	येऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	—	म	प	प	नि	नि	सां	—	सां	गं	रें	सांनि	सां	सां
कृ	पा	ऽ	सिं	ऽ	धु	क	रू	णा	ऽ	म	य	स्वा	ऽऽ	मी	ऽ
०				३				×				२			
सां	गं	रें	सा	नि	—	सां	—	नि	—	सां	सां	ध	—	प	—
घ	ट	घ	ट	वा	ऽ	सी	ऽ	अ	ऽ	त	र	या	ऽ	मी	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	ध	ध	प	म	गम	प	धप	मप	म	प	गम	गरे	सानि	सा
श	र	णा	ले	ऽ	त	भऽ	व	व्याऽ	ऽऽ	धि	ऽ	हृऽ	रि	येऽ	ऽ
०				३				×				२			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू तराना

स्थायी त्रिताल मत्रा १६

ग म ध प	ग ग रे सा	नि़ ध निं़ नि़	सा सा सा —
ओ दा दा ति	ओ दा दा नि	ता रे दा नि	दि र ना ऽ
०	३	×	२
सा सा ग म	प प प प	ग म ध प	ग रे सा —
ल दा रे त	दा रे दा नि	ता रे दा नि	दि र ना ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ग म	प ध प नि	सां सां सां गं	रें नि सां सां
दी म् दी म्	तो म् तो म्	त न न न	दि र ना ऽ
०	३	×	२
नि सां — ध	— ध प प	ग म ध प	ग रे सा —
त दि ऽ या	ऽ रे तो म्	त न न न	दि र ना ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू ध्रुपद

आद सुमिर महादेव, भक्तन हितकारी ।
रुंड मुंड गले माल, जटा जट शीश भाल ।
भूतन को महाराज शंकर त्रिपुरारी ।।

स्थायी ध्रुपद चारताल मात्रा १२

प	—	ग	म	ध	प	ग	रे	सा	नि़	सा	सा
आ	ऽ	दं	सु	मि	र	म	हा	ऽ	दे	ऽ	व
×		०		२		२		३		४	
ध	नि़	सा	सा	ग	म	धप	मग	म	गरे	सानि़	सा
भ	ऽ	क्त	न	हि	त	काऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
×		०		२		०		३		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अन्तरा

म	—	म	प	—	नि	सां	सां	गं	रेंसां	नि	सां
हं	ऽ	ड	मुं	ऽ	ड	ग	ले	ऽ	माऽ	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	—	नि	सां	सां	गं	रें	सां	गंरें	सांनि	सां
ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	शी	ऽ	श	माऽ	ऽऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	सां	गंरें	सां	सां	गं	मं	गं	रें	सां
भू	ऽ	त	न	कोऽ	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	ध	प	ग	म	धप	मग	म	गरे	सानि	सा
शं	ऽ	क	र	त्रि	पु	राऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
×		०		२		०		३		४	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू धमार

—:o:—

फगवा खेलत कृष्ण मुरारी,
संग राधिका सोहत प्यारी।
ग्वालन के संग नाचत गावत,
लाल गुलाल अबीर उडावत,
गल माहीं फूलन के हरवा,
कर धारी कंचन पिचकारी॥

स्थायी ताल धमार मात्रा १४

ग म प ग रे	सा नि्	ध नि् नि्	सा — सा —
फ ग वा खे ल	त कृ	ऽ ष्ण मु	रा ऽ री ऽ
×	२	०	३
सा — ग म ग	म प	ध सां नि	सां ध — प
स ग ऽ रा ऽ	धि का	ऽ सो ह	त प्या ऽ री
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म प नि सां	सां सां	ग॒ रें सां	रें नि सां सां
ग्वा ल न के सं	ग ना	ऽ च त	गा ऽ व त
×	२	०	३
नि सां गं मं —	मं गंमं	ग॒ रें सां	रें नि सां सां
ला ल गु ला ऽ	ल अऽ	वी र न	डा ऽ व त
×	२	०	२
सां ग॒ रें सां रें	नि सां	— नि सां	सां ध॒ ध॒ प
ग ल मां ऽ हीं	ऽ फू	ऽ ल न	के ह र वा
×	२	०	३
ग म ध॒ प नि	सां ध॒	प ध॒ प	ग — रे सा
क र धा री कं	ऽ च	न पि च	का ऽ री ऽ
×	२	०	३

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

—:o:—

परिचय—इस राग में रिषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल तथा अन्य सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह भैरवी थाट का जनक राग है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड़ज है। कोई-कोई विद्वान मध्यम वादी और षड़ज सम्वादी भी मानते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन समय प्रातः काल सर्वमान्य है।

आरोह—सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह—सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़

सा ग म प ध प म ग रे सा।

आजकल इस राग में अन्य स्वरों का प्रयोग करते हुए भी कलाकार दिखाई देते हैं। परन्तु ऐसा करना उचित नहीं है। इसमें मधुरता के लिए दोनों मध्यम, दोनों रिषभ का कुशलता से प्रयोग करने पर राग का स्वरूप बिगड़ने की सम्भावना न रहकर उसमें आकर्षक एवं माधुर्य उत्पन्न होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

सा रे सा, ग रे सा, ध नि सा ग रे सा, नि सा ग म, ग रे सा,
नि सा ग रे सा, सा नि सा ग म प, प म ग म ग रे, ग रे सा,
नि सा ग म ग रे सा, ग म प, ध प, ध म ग, म. ग रे सा, नि
ध नि सा रे, सा ग रे सा, म ग रे सा, नि सा ग म प, नि ध प,
म, ग, प, नि ध प म, ग म ग रे सा, रे नि सा, ग म प,
नि ध प, ग म ध प, ध म ग, म ग रे सा, सा रे ग म प,
ध नि ध प, ग म नि ध प, म, ग म ग रे सा, नि सा ग
म प नि ध प, ग म ध नि सां, सां, नि ध प, नि ध प, ध
प म, ग म ग रे सा, ग म प ध नि सां, नि सा रें सां, नि
ध प, ग म ध प, नि ध प, सां नि ध प, म ग रे सा, नि
ध प, ग म ध प, नि ध प, सां नि ध प, म ग रे सा, नि
सा ग म प ध नि सां, रें सां, नि ध प, सां नि ध, प, ध नि
सां, नि ध प ग म, नि ध प, म ग रे म ग रे सा, नि सा ग म प ध नि
नि सां रें गं सां, नि सां नि ध प, ग म, ध नि सा, नि सां गं मं गं रें सां,
रें सां, नि ध प, सां नि ध प, नि ध प, म ग म ग रे सा, सा ग रे सा,
म ग रे सा, प म ग रे सा, ध प म ग रे सा, नि ध प म ग रे सा, सां नि
ध प म ग रे सा, ग म ग रे सा. प म ग म ग रे सा, नि सा ग म प,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ध प, सां नि ध प, रें सां, नि ध प, सां, नि ध प, नि ध प म, ध प

म ग, म ग रे सा, सा रे सा, ग रे ग, म ग म, प म प, ध नि ध, नि सां,

रें सां, गं रें सां, मं गं रें सां, पं मं गं रें सां, नि ध प, ग प नि

ध प, म ग रे सा. सा रे सा, नि सा ग, रे सा, म ग रे सा, प म ग रे सा,

नि ध प म ग रे सा, सां नि ध प, म ग रे सा. रें सां नि ध प म ग रे सा,

गं रें सां नि ध प म ग रे सा, सा रे ग म प ध नि सां रें गं, मं गं रें सां,

नि ध प म ध नि सां, रें सां, गं रें सां, रें सां नि ध प, ग म ध नि सां,

ध नि ध प म ग रे सा, सा ग रे सा, ग म, ग प, म ग, म ग रे सा, स ग म प,

ध प, म ग, नि ध प, म ग, प म ग, म ग रे सा सां सां नि ध प, रें सां

नि ध प, नि ध प म, ग म ग रे सा, ग म ग रे सा, प म ग म ग रे सा, ध प,

म ग म ग रे सा, नि ध प म, ग म ग रे सा सां नि रें सां, गं रें सां

नि ध प, म ग रे सा।

XX

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी तानें

१- निसां गम पध पम गम पम गरे साऽ।

२- निसा गम पध निसां निध पम गरे साऽ।

३- निसा गम पध निसां रेंगं रेंसां निध पम पध निसां निध पम पनि धप मग रेसा।

४- पध निसां रेंगं रेंसां निध पम गरे साऽ।

५- गंरें सांनि धप मग रेसा निसा गम पध निसां रेंसां निध पम पनि धप मग रेसा।

६- सांनि धप मप निध पम गरे सानि साऽ।

७- सांरें गंमं गंरें सांनि धप मग रेसा निसा।

८- सारे गरे गम पम पध निध निसां रेंसा रेंगं मंगं रेंसां निध पम गरे सानि साऽ।

९- सांरें गंरें सांनि धप निध पम गरे साऽ।

१०- निसा गम पध निसां रेंगं मंगं रेंसां निध पम गम पध निसां रेंगं रेंसां निध पम गम पध निसां रेंसां निध पम गम पध निसां निध पम गम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध निध पम गम पध पम गम पम गम गरे सानि साऽ।

११- सारें गरें सांनि धनि सानि धप मप धप मग रेग मग रेसा निसा गम

पध निसां धनि सारें गंमं गरें सांनि धप मग रेसा।

१२- निसा गम पध निसां रेंगं मंगं रेंसां निध पम पध निसां निध पम गरे

सानि साऽ।

१३- सारें गंमं गरें सांनि धनि सारें गरें सांनि धनि सारें सांनि धनि सांनि

धप मग रेसा।

१४- सारे गम रेग मप गम पध मप धनि पध निसां धनि सारें गंगं रेंसां

निध पम पनि धप मग रेसा निसा गम धनि साऽ।

१५- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां गंगं रेंस

निध पम पध निसां रेंसां निध पनि धप मग रेसा।

१६- सारे गम मग रेसा रेग मप पम गरे गम पध धप मग मप धनि निध

पम पध निसां सांनि धप धनि सारें रेंसां निध निसां रेंगं गरें सांनि

सारें गंमं गरें सांनि धनि सारें सांनि धप मग रेसा निनि सांऽ।

१७- पम गम गरे सांऽ धप मप मग रेसा निनि धप मग रेसा सांनि धप

रेंसां निध गरें सारें सांनि धप निनि धप मग रेसा।

१८- सानि धनि साग रेसां निसा मम रेसा निसा धप मग रेंसां निनि

धनि सारें गरें स धप मग रेसा सा गम पध निसां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९- निसा गम गग रेसा पम गम गग रेसा निनि धनि सांरें गंरें सांनि
धप मग रेसा ।

२०- रेसा गरे मग पम धप निध सांनि रेंसां गंरें सांनि धप निनि धप
मग रेसा निसा ।

२१- सांनि धनि सागं रेसा पम गम पनि धप सांनि धनि सांगं रेंसां
निध पम गरे साऽ ।

२२ निसा गम धनि सारें गंगं रेंसां निसां रेंरें सांनि धनि सांसां निध
पध निनि धप मप धध पम गम पप मग रेग मम गरे सांरे गग
रेसा निसां गम पध निसां रेंगं मंगं रेंसां निध पम पनि धप मग
रेसा ।

२२- साग मग रेसा गम पम गरे मप धप मग पध निध पम धनि सांनि
धप गंगं रेंसां रेंसां निध सांनि धप मग रेसा निसा ।

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी स्वर मालिका

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ध — ध प	प ध म प	ग म प म	ग रे सा —
×	२	०	३
ध नि सा ग	रे सा नि सा	ग म प म	ग रे सा —
×	२	०	३

अन्तरा

ग म ध नि	सां — ध नि	सां — सां सां	नि रे सां —
×	२	०	३
गं मं पं मं	गं रें सां —	नि रें सां, प	नि ध, म ध
×	२	०	३
प — ग प	म, सा ग रे	नि रें सा —	नि ग म ध
×	२	०	३

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवीं लक्षण गीत

—:o:—

प्रात: गाइये मिल राग भैरवी,
सब सुर कोमल सम्पूरन करि।
पंचम वादी षड्ज सम्वादी,
मेल भैरवी सब कोई जानत,
रीझत सब जब तान लेत गुनि,
सा नि ध नि सा ग रे सा, प म ग म प नि ध प,
सां नि ध नि सा गं रें सां, नि ध प म ग रे सा ॥

—:o:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

प	—	प	निध	पम	प	ग	म	नि	ध	प	म	ग	रे	सानि	सा
प्रा	ऽ	त	गाऽ	ऽऽ	इये	मि	ल	रा	ऽ	ग	भै	ऽ	र	वीऽ	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	सा	ग	रे	—	सा	सा	सारे	गम	पध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ
स	ब	सु	र	को	ऽ	म	ल	संऽ	ऽऽ	पूऽ	ऽऽ	रऽ	नऽ	कऽ	रिऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	म	म	ध	—	नि	सां	सां	सां	सां	—	निसां	रें	सां	—
पं	ऽ	च	म	वा	ऽ	दी	ष	ड़	ज	सं	ऽ	वाऽ	ऽ	दी	ऽ
०				३				×				२			
नि	—	नि	नि	सां	सां	सां	—	सां	गं	रें	सां	सांनि	धप	प	प
मे	ऽ	ल	भै	ऽ	र	वी	ऽ	स	ब	को	ई	जाऽ	ऽऽ	न	त
०				३				×				२			
ग	—	प	प	प	नि	ध	प	म	ग	म	पम	गग	म	गरे	सा
री	ऽ	ऋ	त	स	ब	ज	ब	ता	ऽ	न	लेऽ	ऽऽ	त	गुऽ	नि
०				३				×				२			
सांनि	धनि	सांग	रेंसा	पम	गम	पनि	धप	सांनि	धनि	सांग	रेंसा	निध	पम	गरे	सा
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी विलंबित ख्याल १

शिव शिव रट रे मना तू, जासों होवे भवपार ।
सकल जगत को है रखवारो, तीन लोक पालन हार ॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

								सा	रे	ग	म
								शि	व	शि	व
								३		४	
प	—	—	ध	गम	प	प	प	प	नि	ध	पध
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ट	रे	ऽ	ऽ	ऽम
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	—	रें	नि	ध	प	प	पध,नि	ध	प
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तू	जा	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽ	सों
×		०		२		०		३		४	
पधनिसां	रें	नि	ध	म	ग	रे	सा				
होऽऽऽ	ऽ	वे	भ	व	पा	ऽ	र				
×		०		२		०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								ग	प	निध	नि
								स	क	लऽ	ज
								३		४	
सां	—	सां	—	रें	नि	सां	निसां	नि	—	सां	सांसां
ग	ऽ	त	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽऽ	है	ऽ	ऽ	रख
×		०		२		०		३		४	
गं	—	रें	गं	रें	—	सां	—	रें	—	नि	ध
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ती	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
पधनिसां	सां	निध	पम	गम	ग	रे	सा				
लोऽऽऽ	क	पाऽ	लऽ	नऽ	हा	ऽ	र				
×		०		२		०					

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी विलंबित ख्याल २

—:०:—

आज बलम आए मोरे ढिगवा, सज धज ए मैंरीशीश गुंदाऊँ ।
कर सोलह सिंगार सखिन्ह संग, हरखि हरखि हिय मंगल गाऊँ ।।

स्थायी तिलवाड़ा मात्रा १६

			सा रे ग मपमग,प
			आ ऽ ज बऽऽऽ ऽ
			३
रे म रे —	सा — ध नि	सा सा सा —	सा प प प
ल म आ ऽ	ए ऽ मो रे	ढि ग वा ऽ	स ज ध ज
×	२	०	३
पध,नि ध प ग	म प नि ध	प गम गमपम गरेसानि	
एऽ,ॅ री मैं शी	ऽ श गुं दा	ऽ ऽऽ ऽऽऽऽ ऊँऽऽऽ	
×	२		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			ग म ध॒ नि॒
			क र सो ऽ
			३
सां सां सां —	सारें गं रें निनि	ध॒ प प प	ग॒ ग॒ प प
ल ह सिं ऽ	गाऽ ऽ र सखि	न्ह स ऽ न	ह र खि ह
×	२	०	३
नि॒ ध॒ प म	ग॒ म प म	ग॒ रे॒ रेसा नि॒सा	
र खि हिं य	मं ऽ ग ल	गा ऽ ऽऽ ऊंऽ	
×	२	०	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी द्रुत ख्याल १

जिया नाहीं लागे हरि दरशन बिन, नैनन नीर बहे घरि पल छिन ।
बाट निहारत दिन बीतत मोहे, रैन बिहाऊँ तारे गिन गिन ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

नि	सा	ग	म	गम	पध	पम	प	ग	म	प	म	ग	रे	सा	सा
जि	या	ना	हीं	लाऽ	ऽऽ	गेऽ	ऽ	ह	रि	द	र	श	न	बि	न
०				३				×				२			
प	ध	नि	नि	ध	प	ग	म	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	सा
नै	ऽ	न	न	नी	ऽ	र	ब	हे	ऽ	घ	रि	प	ल	छि	न
०				३				×				२			

अन्तरा

मग	—	म	ध	धनि	सां	रें	सां	नि	नि	सां	रें	नि	ध	प	प
बाऽ	ऽ	ट	नि	हाऽ	ऽ	र	त	दि	न	बी	ऽ	त	त	मो	हे
०				३				×				२			
सां	—	सां	गं	रें	सां	निध	प	ग	म	प	म	ग	रे	सा	सा
रै	ऽ	न	बि	हा	ऽ	ऊँऽ	ऽ	ता	ऽ	रे	ऽ	गि	न	गि	न
२				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी द्रुत ख्याल २

कैसे करूं मैं आली, मानो न नंदलाल,
पनघट यमुना तट, रोक लियो ग्वाल।
लपक झपक मोरी, गगरी गिराए दीनी,
देखो सखि री मोरा, कीनी ऐसो हाल ॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

म	—	ग	—	प	म	ग	रे	सानि	सा
कैं	ऽ	से	ऽ	म	रूं	मैं	आ	ऽऽ	लि
×		२			०		३		
सा	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सानि	सा
मा	ऽ	ने	ऽ	न	नं	द	ला	ऽऽ	ल
×		२			०		३		
प	प	प	प	ध	नि	ध	प	ग	म
प	न	घ	ट	य	मु	ना	त	ऽ	ट
×		२			०		३		
नि	ध	प	ग	प	म	ग	रे	सांनि	सा
रो	ऽ	क	ऽ	लि	यो	ऽ	ग्वा	ऽऽ	ल
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	—	नि	सां	सां	सां	—	सा
ल	प	क	ऽ	झ	प	क	मो	ऽ	री
×		२			०		३		
नि	नि	सां	—	रें	सां	नि	ध	प	प
ग	ग	री	ऽ	गि	रा	ए	दी	ऽ	नी
×		२			०		३		
ग	—	प	—	नि	ध	प	ग	—	म
दे	ऽ	खो	ऽ	स	खि	री	मो	ऽ	रा
×		२			०		३		
नि	ध	प	ग	म	म	ग	रे	सानि	सा
की	ऽ	नो	ऽ	ऐ	ऽ	सो	हा	ऽऽ	ल
×		२			०		३		

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी द्रुत ख्याल ३

मदन मोहन आये, भारत फूली बसंत ।
केस पकड़ दुष्ट कंस, धरनी पटकाये ।।
मथुरा अवतार लीनो, गोकुल निवास कीनो ।
अरजुन के प्राण सदा कृष्ण कृष्ण गाये ।।

स्थायी एकताल मध्यलय मात्रा १०

म म	म ग	प म	रे —	— सा	— —
म द	न मो	ह न	आ ऽ	ऽ ये	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४
सारे ग	म म	ग प	म —	ग रे	— सा
भाऽ ऽ	र त	फू ऽ	ली ऽ	ब सं	ऽ त
×	०	२	०	३	४
प —	प प	प प	ध निं	ध प	ग म
के ऽ	स प	क ड़	दु ऽ	ष्ट कं	ऽ स
×	०	२	०	३	
ग ग	प —	प म	रे —	— सा	— —
ध र	नी ऽ	प ट	का ऽ	ऽ ए	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

अन्तरा

ग	ग	म	—	ध	नि	धनि	सां	नि	सां	—	सां
म	थु	रा	ऽ	अ	व	वाऽ	ऽ	र	ली	ऽ	नो
×		०		२		०		३		४	
नि	—	नि	सा	—	गं	रें	सां	नि	ध	प	प
गो	ऽ	कु	ल	ऽ	नि	वा	ऽ	स	की	ऽ	नो
×		०		२		०		३		४	
ग	ग	प	प	पध	निसां	नि	ध	प	ग	म	—
अ	र	जु	न	केऽ	ऽऽ	प्रा	ऽ	ण	स	खा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	ग	—	म	रे	—	—	सा	—	—
कृ	ऽ	ष्ण	कृ	ऽ	ष्ण	गा	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी द्रुत ख्याल ४

सुमिर-सुमिर हरि नाम मोरे मन ।
घरि-घरि पल-पल छिन-छिन निसदिन ।
रैन दिवस प्रति याम मोरे मन ।।
सत चित नित अपार स्वामी ।
घट-घट वासी अन्तर यामी
करूणा मय नाथ कृपालु ।
साँचो वाको धाम मोरे मन ।।

स्थायी तीनताल मात्रा १६

सां	नि॒	रें॒	सां	ध॒	प	ग॒	म	ध॒	—	—	नि॒	धनि	सांरें	सांनि	सां
सु	मि	र	सु	मि	र	ह	रि	ना	ऽ	ऽ	म	मोऽ	रेऽ	मऽ	न
०				३				×				२			
सां	सां	सां	सां	नि॒	ध॒	प	म	ग॒	म	प	प	ग॒	रे॒	सा	सा
घ	रि	घ	रि	प	ल	प	ल	छि	न	छि	न	नि	स	दि	न
०				३				×				२			
मग॒	—	म	म	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	—	ध॒	नि॒	धनि	सांरें	सांनि	सा
रैंऽ	ऽ	न	दि	व	स	प्र	ति	या	ऽ	ऽ	म	मोऽ	रेऽ	मऽ	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग ग म म	ध ध नि नि	धनि सां - सां	निसां रें सां --
स त चि त	नि त ग्र ऽ	पाऽ ऽ ऽ र	स्वा ऽ मी ऽ
०	३	×	२
गं गं गं गं	रें — सां —	ध — नि नि	धनि सांरें सांनि सां
घ ट घ ट	वा ऽ सी ऽ	अं ऽ त र	याऽ ऽऽ मीऽ ऽ
०	३	×	२
सां — — नि	सां रें सां सां	ग म प म	ग रे सा —
क ऽ ऽ रूं	णा ऽ म य	ना ऽ थ कृ	पा ऽ लु ऽ
०	३	×	२
ग — म —	ध — नि —	धनि सां — सां	धनि सांरें सांनि सा
सां ऽ चो ऽ	वा ऽ को ऽ	धाऽ ऽ ऽ म	मोऽ रेऽ, मऽ न
०	३	×	२

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी तराना

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

प	प	प	नि	ध	प	ग	म	प	प	ग	म	ग	रे	सा	—
त	न	न	त	न	न	त	न	दी	म्	त	न	दिं	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	सा	सा	ग	ग	म	म	गम	पम	प	म	ग	रे	सा	ऽ
ओ	दा	दां	नि	ओ	दा	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			
प	प	प	नि	ध	प	सां	सां	निनि	धध	प	म	ग	रे	सा	—
ता	दी	म्	त	दा	रे	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि	दि	र	ना	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग ग म म	ध ध नि नि	सां सां सां सां	सां रें सां —
दी म् दो म्	तो त म् म्	त न न न	दि र ना ऽ
०	३	×	२
सां गं — रें	— रें स सां	नि सां रें सां	नि ध प —
त दि ऽ या	ऽ रे तो म्	त न न न	दि र ना ऽ
०	३	×	२
ग गग पप पप	नि नि धध धध	सांसां गं गं रें	सांसां निनि धध पप
धा तिर किट तक	धा धा किड़ नग	धत् लां ग् ना	दिर दिर दिर दिर
०	३	×	२
पप सां सां नि	धध पप मम गग	गग प प म	गग रेरे सासा सासा
धित् लां ग् ना	दिर दिर दिर दिर	धित् लां ग् नां	दिर दिर दिर दिर
०	३	×	२

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी ध्रुपद

—:०:—

राजन को महाराज, करूणा मय करूणहारी
पूरन करन सकल काज।
दारूण दुःख हरत आप, शरण लेत कटत पाप,
दीना बन्धु दीना नाथ, तीन लोक तेरो राज ॥

—:०:—

स्थायी चारताल मात्रा १२

प	नि	ध	प	ग	म	प	म	ग	रे	सा	सा
रा	ऽ	ज	न	को	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	सा	ग	रे	सा	प	प	ध	प	—	प
क	रू	णा	ऽ	म	य	क	रू	ण	हा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	रें	नि	ध	प	ग	म	प	ग	रे	सा
पू	र	न	क	र	न	स	क	ल	क	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	—	म	म	ध	नि	सां	सां	रें	सां	—	(सां
दा	ऽ	रू	ण	दुः	ख	ह	र	न	आ	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
सां	गं	मं	रें	—	सां	गं	रें	सां	नि	सां	सां
श	र	ण	ले	ऽ	त	क	ट	त	पा	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
ग	—	प	नि	ध	प	सां	सां	गं	रें	सां	सां
दी	ऽ	गा	ऽ	वं	ऽ	धु	दी	ऽ	ना	ऽ	थ
×		०		०		०		३		४	
रें	सांनि	सां	नि	ध	प	ग	म	ग	रे	सा	सा
ती	ऽऽ	न	लो	ऽ	क	ते	ऽ	रो	रा	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी धमार

केसर चंदन तिलक विराजे,
गौरी अरधांगी साजे,
डिम-डिम कर डमरू बाजे,
खेलत महादेव देवन संग होरी।
जटा जूट शीश भाल,
रूंड मुंड गले माल,
सुंदर छवि अति ही प्यारी,
तीन लोक मोह लियो री॥

स्थायी धमार मात्रा १४

प	प	नि	ध	—	प	प	ग	ग	म	ग	रे	सा	सा
के	स	र	चं	ऽ	द	न	ति	ल	क	वि	रा	ऽ	जे
×					२		०			३			
नि	—	—	सा	—	ग	म	गम	पध	प	ग	म	गरे	सा
गौ	ऽ	ऽ	री	ऽ	अ	र	धांऽ	ऽऽ	गी	सा	ऽ	ऽऽ	जे
×					२		०			३			
प	—	नि	ध	—	प	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प	प
डि	ऽ	म	डि	ऽ	म	क	र	ड	म	रू	बा	ऽ	जे
×					२		०			३			
सां	मं	गं	रें	सां	—	सा	रें	नि	ध	प	ग	म	म
खे	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	त	म	हा	ऽ	ऽ	दे	ऽ	व
×					२		०			३			
प	—	—	नि	ध	—	प	—	ग	म	प	ग	रे	सा
दे	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	स	ऽ	न	हो	ऽ	री
×					२		०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म — ध —	नि धनि	सां — रें	नि ध — प
ज टा ऽ जू ऽ	ट शीऽ	ऽ ऽ ऽ	श भा ऽ ल
×	२	०	३
सां — रें सां मं	— गं	म गं रें	सां नि ध प
रूं ऽ ऽ ड मु	ऽ ऽ	ड ग ले	ऽ मा ऽ ल
×	२	०	३
ग — — म —	म प	प नि धध	म ग रे सा
सु ऽ ऽ द र	र छ	वि अति	ही प्या ऽ री
×	२	०	३
सां गं रें नि ध	प ध	म ग गम	प ग रेसा
ती ऽ न लो ऽ	क मो	ऽ हं लिऽ	ऽ यो ऽ री
×	२	२	३

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सांरग

—:o:—

परिचय—कई विद्वान इस राग को विन्द्राबनी सांरग भी कहते हैं। यह एक लोक प्रिय और प्राचीन राग है। इस में गंधार, धैवत स्वर वर्जित करके दोनों निषाद एवं अन्य शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया जाता है। आरोह मे निषाद शुद्ध, अवरोह में निषाद कोमल का प्रयोग करते हैं। इस राग में रिषभ वादी और पंचम सम्वादी है। यह काफ़ी थाट का राग है। इसका जाति औढ़व-औढ़व है। गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है।

आरोह – सा रे म प नि सां।

अवरोह—सां नि प म रे नि़ सा।

इस राग में 'रे म प, म नि प म रे,' 'रे म प रे, रे म रें, एवं 'नि प म रे म रे,' ये स्वर समूह बार-बार दिखाने से राग में माधुर्य एवं रंजकता उत्पन्न होती है।

पकड़

रे म रे म रे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग

आलाप

सा रे नि़ सा, नि़ सा नि प़ नि़ सा, रेनि़ सा नि़ प. म़ प़, नि प़, नि़ सा, सा रे म रे, नि़ नि़ सा, नि प, नि म प़ नि़ सा, रे सा, नि़ सा रे म, रे नि़ सा, सा रे म प, प म रे, म रे नि़ सा, नि प़ नि़ सा, रे म प, रे म रे नि़ सा, नि़ सा रे म प, नि प नि प म, रे म, रे प, म रे, प म रे, म रे नि़ नि़ सा, सा रे म प, नि प, नि म प, रे म प, निं प म रे, प म रे, म रे नि़ नि़ सा, सा रे म प. नि प, नि म प नि सां, नि सां नि प, म प नि प, म प नि सां, सां नि प म रे, म रे प म नि प, नि सा नि़ प, नि म प, नि सां नि प, म प नि प म रे, म रे प म रे नि़ नि़ सा, सा रे म प, नि प, म प नि सां, रें नि नि सा, नि प, नि म प, नि सां, नि प, म प नि प म रे, म रे प, म नि प, नि सां रें सां, नि सां, नि प, म प नि प म रे, म रे प, रे म रे नि़ नि़ सा, सा रे म प, रे म प नि, म प नि सां, प नि सां रें, रें नि नि सां, रें मं रें सां, रें नि सां, रें मं पं मं रें, मं रें पं, रें मं रें, नि नि सां, रें सां नि प, म प नि सां, रें मं रें सां, नि सां नि सां, नि प, म प नि सां, रें सां नि सां, म प नि सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ प, म प नि॒ प म रे. रे प म रे, म रे नि॒ नि॒ सा, नि॒ सा, रे म रे नि॒ सा,
नि॒ सा, रे म प म रे नि॒ सा, नि॒ सा रे म प नि॒ प म रे म रे नि॒ सां, नि॒ सा
रें म प नि सां, नि॒ प म रे, प म रे म रे नि॒ सा, नि॒ सा रे म प नि सां, रें
सां नि॒ प म रे, प म रे म रे नि॒ सा, नि॒ सा रे म प नि सां, रें मं रें सां, नि॒
सां नि॒ प, म प म रे, प रे म रे, नि॒ सा, सा रे म रे, प म रे म रे. रे म प
नि॒ प नि॒ म प, रे म रे प म रे, रे म प, नि॒ प, नि॒ म प नि सां, सां नि॒ प म
प म रे, प म रे म रे, रे म प नि सां, रें नि सां, नि॒ प, नि॒ म प प रे म रे,
प म रे म रे, रे म प नि सां रें मं रें सां नि सां नि॒ प, प प म रे, प म रे म
रे, नि॒ सा, सा रे म म रे, प म रे म रे सा, रे म प, नि॒ नि॒ प, नि॒ म प, रे
म रे, नि सां, म रे प, नि॒ प, नि॒ म प, रे म प, रे म रे, नि सा, रे प, नि॒ प,
म प. नि॒ प म रे, प ग रे, म रे नि सा, रे म प, नि सां, नि॒ प, नि॒ म प, रे
म प म रे म रे, नि॒ सा. सां नि॒ प, मप म रे, प म रे, म रे नि॒ सा, रें सां
रें, नि सां नि॒ प, म प म रे, प रे मरे, नि॒ सा, म रे रें पं, रें मं रें, नि सां,
नि॒ प, म प म रे, प म रे म रे नि॒ सा, सा रे म प, म प नि॒ प, म प नि॒ सां,
नि॒ प म प नि॒ सां रें सां, नि॒ प, म प नि सां रें मं रें सां, रे नि नि सां,
नि॒ प, म प नि सां, रें मं रें सां, रें नि नि सां, नि॒ प, म प नि सां, रें मं पं,
पं, मं रें मं नि नि सां, नि॒ प म प नि सा रें मं पं भं रें, नि सां नि॒ प, म प.
नि सां, रें मं रें नि सां, नि॒ प, म प नि सां, नि॒ प, म प नि सां, रें नि नि
सां, नि॒ प म प नि सां, नि॒ प, म प नि॒ प, म प म रे, प म रे म रे, नि॒
नि॒ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग तानें

१- निसा रेम पनि पम रेम पम रेम रेसा ।

२- निसा रेम पनि सांनि पनि पम रेम रेसा ।

३- निसा रेम पनि सांरें सांनि पम रेम रेसा ।

४- निसा रेम रेसा निसा रेम पम रेम रेसा ।

५- निसा रेम पम रेम पनि पम रेम पनि सांनि पम रेम पनि सांरें सांनि
पम रेसा ।

६- निसा रेम रेम पम पनि पम निसां रेंमं रेंसां निसां निप निप मप मरे
मरे साऽ ।

७- निसा रेम रेम रेसा रेम पनि पनि पम पनि सांरें सांरें निसां रेंमं रेंसां
निसां रेंमां निप निप मप मप मरे मरे सारे निसा रेम पनि सांरें सांनि
पम रेम रेसा निसा ।

८- मप निप मप निसां निप मप मरे साऽ ।

९- मप निसां रेंसां निसां निप मप मरे साऽ ।

१०- मप निसा रेंमं रेंसां निसां निप मरे साऽ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११- सांनि पनि पम रेम रेसा निसां रेम पनि मप निसां रेंमं रेंसां निसां निप मरे साऽ।

१२- निसां रेंमं रेंसां निसां निप मप निसां रेंसां निप मप निसां निप मप निप मरे साऽ।

१३- सांनि पम रेम रेसा निसा रेम पनि साऽ।

१४- सांनि पम पनि सांरें सानि पम रेम रेसा।

१५- सारे मम रेसा रेम पप मरे मप निनि पम पनि सांसां निप मप निसां रेंमं रेंसां निसां निप निप मप मरे मरे साऽ।

१६- सारे मप रेम पप निनि पनि सांसां रेंमं रेंसां निसां निप मप मरे मरे साऽ।

१७- निसा रेम पनि सांरें मंमं रेंसां निप मरे सारे मप निसां रेंरें सांनि पम रेसा रेम पनि सांसां निप मरे मप निसां निनि पम रेम पनि पम रेम पम रेम रेसा निसा।

१८- रेम पम रेम रेसा निनि पम रेम रेसा निसां निनि पम रेम रेसा रेंसां निनि पम पनि सारें मंमं रेंसां निनि पभ रेम रेसा।

१९- रेम पम रेम पनि पम रेम पनि सांनि पम रेम पनि सांरें सांनि पम रेम पनि सांरें मंमं रेंसां निनि पम रेम रेसा निसा।

२०- मम रेम रेसा निनि पम रेम रेसा निसां निनि पम रेम रेसा रेमं रेसां निनि पम पनि सांरें सांनि पम रेम पम रेम रेसा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग स्वर मालिका

—:०:—

स्थायी तिनताल मात्रा १६

सां सां नि प	म प रे म	प म रे म	रे — सा —
×	२	०	३
नि़ सा नि़ प	म़ प़ नि़ सा	रु म प म	रे म रे सा
×	२	०	३
नि़ सा रे म	रे म प म	प नि सां रे	सां निं — प
×	२	०	३

अन्तरा

म म नि प	नि नि सां सां	रे मं रें मं	रे नि सां —
×	२	०	३
नि सां रें सां	नि प म प	रे म प म	रे — सा —
×	२	०	३

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग लक्षण गीत

सारंग वृंदावन, धैवत गंधार तजत्त,
दोऊ निषाद लगत, औढ़व-औढ़व सुरन।
मेल काफ़ी को मान, द्वितीय प्रहर दिवस,
गुनि जन करत गान, प रे सम्वाद सोहत,
सारे मप निसां रेंमं रेसां,
निनि पम रेम रेसा निर्सा।
सुन्दर मोहन मन ॥

स्थायी झपताल मात्रा १०

सां	—	नि	प	नि	प	मप	मरे	सा	सा
सा	ऽ	र	ग	वृं	ऽ	दाऽ	ऽऽ	व	न
×		२			०		२		
नि़	सा	रे	म	प	—	प	नि	प	प
धै	व	त	गं	धा	ऽ	र	त	ज	त
×		२			०		३		
नि	सां	रें	—	नि	सा	नि	म	प	प
दो	उ	नि	ऽ	षा	ऽ	द	ल	ग	त
×		२			०		३		
सा	—	नि	प	नि	प	मप	मरे	सा	सा
औ	ऽ	ढ़	व	औ	ढ़	वऽ	सुऽ	र	न
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	प	निप	नि	सां	सां	सां	—	मं
मे	ऽ	ल	काऽ	ऽ	फ़ी	को	मा	ऽ	नं
×		२			०		३		
रें	मं	रें	सां	नि	सां	प	नि	प	प
द्वि	ती	य	प्र	ह	र	दि	ऽ	व	स
×		२			०		३		
म	रे	प	प	नि	प	नि	सां	—	सां
गु	नि	ज	न	क	र	न	गा	ऽ	न
×		२			०		३		
प	रे	म	नि	प	म	रे	रे	सा	सा
प	रे	सं	ऽ	वा	ऽ	द	सो	ह	त
×		२			०		३		
सारे	मप	निसां	रेंमं	रेंसां	निनि	पम	रेम	रेसा	निसा
×		२			०		३		
म	रे	प	प	नि	प	मप	मरे	सा	सा
सु	ऽ	द	र	मो	ऽ	हुऽ	त	म	न
×		२			०		३		

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग विलम्बित ख्याल १

आव महादेव सुमिर शंकर त्रिपुरारी।
गिरिजापति सींग अधर, नील कण्ठ डमरू कर,
करुणा मय करुण हार, दीनन दु:ख हारी ॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

								नि़	सा	रे	मम
								आ	ऽ	ऽ	दम
								३		४	
प	—	निनिपम		मरे	म	रे	सा	नि़	सा	नि़म़	प़
हा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	देऽ	ऽ	ऽ	व	सु	मि	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	रे	म	प	—	निनिपम	प	निं	म	प	निनि
शं	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽऽऽऽ	र	त्रि	ऽ	ऽ	पुऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	निसां,रें	नि	सां	नि	प	निपमप	मरे,सा				
रा	ऽऽ,ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽरी				
×		०		२		०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								म	प	निनिपम	पनि
								गि	रि	जाऽऽऽ	ऽऽ
								३		४	
सां	सां	रें	नि	सां	सां	सां	सां	रें	मं	रें	मं
प	ति	सी	ऽ	ग	अ	धं	र	नी	ऽ	ल	कं
X		०		२		०		३		४	
रें	सां	नि	सां	सां	नि	म	प	रे	म	रे	—
ऽ	ण्ठ	ड	म	रू	क	ऽ	र	क	रू	णा	ऽ
X		०		२		०		३		४	
प	प	नि	म	प	प	—	प	नि	सां	रेंमं	रें
म	य	क	रू	णा	हा	ऽ	र	दी	ऽ	नऽ	न
X		०		२		०		३		४	
नि	सां	निसां,रें	नि	सां	प	निपमप	मरे,सा				
दुः	ख	हाऽ,ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ,री				
X		०		२		०					

XX

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग विलंबित ख्याल २

नाद भेद अपरस्पार, पार नाहीं पायो कोउ.
गाय गाय नाथ सिद्ध, ब्रह्मा वेद गये हार ।
योगी यति ऋषि मुनि, गंधर्व किन्नर केते गुनि,
रच रच थके सारे, बार बार कर विचार ।।

स्थायी तीलवाड़ा मात्रा १६

			निनिपम प रेम रे
			नाSSS S SS द
			३
सा नि़ सा सा	रे म प पप	नि़ म प प	म रे म रेरे
भे S S द	अ प र मS	पा S S र	पा S र नाहीं
×	२	०	३
सा — रे म	प प निनिपम प	रे म रे सा	रे म प निपमप
पा S S S	S यो कोSSS S	S S S उ	गा S S यSSS
×	२	०	३
सां — सां —	नि सां नि प	नि म प प	म रेम प पप
गा S य S	ना S S थ	सि S S द्ध	ब्र SS S ह्माS
×	२	०	३
नि सां — सां	नि म प प	रे म रे सा	
वे S S द	ग S S ये	हा S S र	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			म प निप प नि
			यो ऽ ऽऽ गीऽ
			३
सां — — सां	रें नि सां सां	नि मप नि सां	रें रें रें मं
य ऽ ऽ ति	ऋ ऽ ऽ षि	मु ऽऽ ऽ नि	गं ध र्वं कि
×	२	०	३
रें रें रें सां	नि — सां —	सां नि — प	म प नि सा
न्न ऽ ऽ र	कें ऽ ऽ ऽ	ते गु ऽ नि	र च र च
×	२	०	३
रेंमं रें — सां	— सां प नि	नि म प —	प रे म रे
थऽ के ऽ सा	ऽ रे बा र	ऽ बा ऽ र	ऽ क र वि
×	२	०	३
स रे म प	निनिपम प रे म	रे — नि सा	
च ऽ ऽ ऽ	ऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र	
×	२	०	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल १

—:०:—

वन्सी वट यमुना तट
श्याम सुंदर मदन मोहन,
मुरलिया बजाये।
छांड सकल काम काज,
त्याग सखी लोक लाज,
धाई सब वृंदावन,
सुध बुध बिसराई।

स्थायी एकताल मात्र १२

प	नि̱	प	—	म	मं	रे	म	रे	—	सा	सा
ब	ऽ	न्सी	ऽ	व	ट	य	ग	ना	ऽ	त	ट
×		०		२		०		३		४	
म	रे	प	म	नि̱	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां
श्या	ऽ	म	सुं	द	र	म	द	न	मो	ह	न
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	रें	सां	ऽ	सां	पनि̱	सांरें	सांनि̱	पम	रे	सा
मु	र	लि	या	—	ब	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई	ऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	प	प	नि	प	नि	सां	नि	नि	सां	—
छां	ऽ	ड़	स	क	ल	का	ऽ	म	का	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	
निसां	रेंमं	रें	रें	सां	—	प	नि	म	प	—	प
त्याऽ	ऽऽ	ग	स	खि	ऽ	लो	ऽ	क	ला	ऽ	ज
×		०		२		०		०		४	
म	प	नि	प	म	म	रे	म	रे	—	सा	सा
धा	ऽ	ई	ऽ	स	ब	ब्र	ऽ	दा	ऽ	व	न
×		०		२		०		३		४	
म	रे	प	म	नि	प	पनि	सांरें	सांनि	पम	रे	सा
सु	ध	बु	ध	वि	स	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई	ऽ
×		०		२		०		३		४	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल १

मोहन आन बसो नैनन में,
घरि पल छिन मोहे चैन न आवे,
नाहीं धीर सखि मोरे मन में ।
इत उत डोलूँ जिया नाहीं लागे,
छिन भीतर छिन जाऊं आंगन में ।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पनि	सारें	सांनि	सां	नि॒	प	प	नि॒	प	म	रे	म	प	प	प	—
मोऽ	ऽऽ	हुऽ	न	आ	ऽ	न	ब	सो	ऽ	नै	ऽ	न	न	में	ऽ
०				३				×				२			
म	म	नि॒	प	म	प	म	रे	म	प	म	रे	नि़	—	सा	—
घ	रि	प	ल	छि	न	मो	हे	चै	ऽ	न	न	आ	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
म	रे	प	म	नि॒	प	नि	सां	पनि॒	सांरें	सानि	सां	निसां	सा	नि॒	प
ना	ऽ	हीं	ऽ	धी	ऽ	र	स	खिऽ	ऽऽ	मोऽ	रे	मऽ	न	में	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म म प	नि प नि —	सां सां सां सां	रें नि सां —
इ त उ त	डो ऽ लूं ऽ	जि या ना हीं	ला ऽ गे ऽ
०	३	×	२
रें मं रें —	सां सां सां सां	नि सां नि प	म रे सा —
छि न भी ऽ	त र छि न	जा ऽ ऊँ आं	ग न में ऽ
०	३	×	०

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल ३

दरशन दीजो नंद दुलारे,
तुम बिन तरसत नैन हमारे,
तुम बिन मेरो कौन जगत में,
तुम प्राणों से प्यारे ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सां	सां	नि	सां	नि̲	—	प	—	म	रे	म	म	प	—	प	—
द	र	श	न	दी	ऽ	जो	ऽ	नं	ऽ	द	दु	ला	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			
म	म	नि̲	प	म	रे	सा	सा	नि	सां	नि̲	प	मप	मरे	सानि̲	सा
तु	म	बि	न	त	र	स	त	नै	ऽ	न	ह	माऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	म	म	प	—	नि̲	प	नि	सां	सां	सां	रें	नि	सां	—
तु	म	बि	न	मे	ऽ	रो	ऽ	कौ	ऽ	न	ज	ग	त	में	
०				३				×				२			
नि	सां	रें	मं	रें	—	सां	—	मप	निसां	रेंमं	रेंसां	निसां	रेंसां	नि̲	प
तु	म	प्रा	ऽ	णों	ऽ	से	ऽ	प्या	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल ४

—:०:—

धेनु चरावत हरि वृन्दावन,
हरि बेलरियाँ बिरछ की छैयाँ,
ग्वारन संग सोहत मन मोहन ।

मुरलिया बाजी सुधा रस भीनी,
सकल सृष्टि ताही बस कीनी,
श्रवन सुनत सुधि बुध सब दीनी,
मगन भये सब पशु पक्षी गन ॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पनि	सांरें	सांनि	सा	प	नि	प	प	म	रे	म	प	मप	मरे	सा	सा
धेऽ	ऽऽ	नुऽ	च	रा	ऽ	व	त	ह	रि	वृं	ऽ	दाऽ	ऽऽ	व	न
०				३				×				२			
नि़	सां	रे	म	प	नि	प	नि	सां	सां	निसां	रेंसां	नि	—	प	—
ह	रि	वे	ल	रि	यॉं	ऽ	बि	र	छ	कीऽ	ऽऽ	छै	ऽ	यॉं	ऽ
०				३				×				२			
म	—	प	प	नि	प	नि	सां	नि	प	म	प	मप	मरे	सा	सा
ग्वा	ऽ	र	न	सं	ग	सो	ऽ	ह	त	म	न	मोऽ	ऽऽ	ह	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	म	प	—	नि	प	नि	सां	सां	सां	रें	नि	सां	—
मु	र	लि	या	वा	ऽ	जी	सु	धा	ऽ	र	स	भी	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
रें	मं	रें	सां	रें	रें	सां	—	नि	सां	रें	सां	नि	—	प	—
स	क	ल	सृ	ऽ	ष्टि	ता	ऽ	ही	ऽ	ब	स	की	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	प	म	रे	म	रे	सा	नि़	सा	रे	म	प	—	प	—
श्र	व	न	सु	न	त	सु	ध	बु	ध	स	ब	दी	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
म	प	नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	नि	प	मप	मरे	सा	सा
म	ग	न	भ	ये	ऽ	स	ब	प	शु	प	ऽ	क्षीऽ	ऽऽ	ग	न
०				३				×				२			

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल ५

—:o:—

झनन झनन पग पैंजनी बाजें,
आंगन डोलत श्याम अति साजे।
निरखि निरखि हरषित हिय माता,
सुन्दर वदन श्याम रंग गाता,
काजर कारे नयन मस्त रे,
सुंदर छवि देखत शशि लाजे॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पनि	पम	रे	म	रे	रे	नि॒	सा	रे	—	म	म	प	—	प	—
झऽ	नऽ	न	झ	न	न	प	ग	पैं	ऽ	ज	नी	बा	ऽ	जे	ऽ
०				०				×				२			
नि	म	प	नि	सां	सां	सां	प	नि	प	रे	म	पनि	पम	रेसा	नि॒सा
आं	ऽ	ग	न	डो	ल	त	श्या	ऽ	म	अ	ति	साऽ	ऽऽ	जेऽ	ऽऽ
०				०				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म म म	प प नि̱ प	नि नि सां पां	सां नि सां —
नि र खि नि	र खि ह र	षि त हि य	मा ऽ ता ऽ
०	३	×	२
नि सां रें मं	रें मं रें सां	नि सां रें सां	नि̱ — प —
सुं ऽ द र	व द न श्या	ऽ म र ग	गा ऽ ता ऽ
०	३	×	२
प सां नि सां	प नि̱ प सां	नि̱ प म प	म रे सा —
का ऽ ज र	का ऽ र न	यं न म त	वा ऽ रे ऽ
०	३	×	२
नि़ सा रे म	प नि̱ प म	नि सां नि̱ प	पनि̱ पम रेसा नि़स
सुं ऽ द र	छ वि दे ऽ	ख त श शि	लाऽ ऽऽ जेऽ ऽऽ
०	३	×	२

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग द्रुत ख्याल ६

—:०:—

देव पूजन को चली अलबेली,
मन्द मन्द मुस्कान अधर पुर,
निकसी भवन सों नवली नवेली।
धूप दीप कर आरती सोहे,
कुसुम सुगंधित जन मन मोहे,
चली जात लिये संग सहेली।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

पनि	पम	पनि	सां	प	नि	प	म	रे	रे	म	प	म	रे	सा	—
देऽ	ऽऽ	वऽ	पूं	ज	न	को	ऽ	च	ली	अ	ल	बे	ऽ	ली	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	रे	म	रे	रे	म	म	प	—	नि	नि	सां	सां	सां	सां
मं	ऽ	द	मं	ऽ	द	मु	स	का	ऽ	न	अ	ध	र	पु	र
०				३				×				२			
पनि	सांरें	सांनि	सां	प	नि	प	—	नि	प	म	प	म	रे	सा	—
निऽ	कऽ	सीऽ	भ	व	न	सों	ऽ	न	व	ली	न	वे	ऽ	ली	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	म	प	—	प	नि	प	नि	—	सां	सां	रें	नि	सां	—
धू	ऽ	प	दी	ऽ	प	क	र	आ	ऽ	र	ती	सो	ऽ	हे	ऽ
०				३				×				२			
रें	रें	मं	मं	रें	—	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	—	प	—
कु	सु	म	सु	गं	ऽ	धि	त	ज	न	म	न	मो	ऽ	हे	ऽ
०				३				×				२			
पनि	सांरें	सांनि	सां	प	नि	प	म	नि	प	म	प	म	रे	सा	—
चऽ	लीऽ	ऽऽ	जा	ऽ	त	लि	ये	सं	ऽ	ग	स	हे	ऽ	ली	ऽ
२				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग तराना

स्थायी एकताल मात्रा १२

						म	प	नि	सांसां	रेंरें	सां
						ओ	दा	ना	दिर	दिर	दी
						०		३		४	
नि	प	म	प	नि	—	नि	प	म	रे	सा	सा
म्	त	न	न	दी	ऽ	म्	त	न	न	दि	र
×		०		२		०		३		४	
रे	—	—	—	सा	—	नि़	नि़नि़	नि़नि़	नि़	सा	सा
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	दिर	दिर	दा	नी	ता
×		०		२		०		३		४	
रे	मप	रेंरे	म	प	प	नि	प	प	नि	सां	सां
तु	दिर	दिर	दा	नी	ता	ओ	दा	नि	ओ	दा	नि
×		०		२		०		३		४	
रेंरें	रें	रें	निनि	सां	सां	नि	सां	नि -	प	म	
दिरऽ	दा	नि	दिर	दा	नि	त	दि	या	रे	ता	रे
×		०		२		०		३		४	
रे	—	—	—	सा	—						
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
×		०		२							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

						म	म	म	म	प	प
							दा	रे	त	दा	रे
						०		३		४	
नि̱	प	नि	नि	सां	सां	रें	मं	रें	मं	रें	सां
त	दि	य	न	त	न	दी	म्	दी	म्	त	
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	नि	सां	प	नि̱	नि̱	प	म	रे	सा	सा
तो	म्	तो	म्	ता	दी	म्	त	न	न	दि	र
×		०		२		०		३		४	
रे	—	—	—	सा	—						
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
×		०		२							

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारंग ध्रुपद

—:०:—

गरजत घन घोर आये,
चहुं ओर बोले मोर,
अम्बुआ डार कोयल गाये।
झूम झूम झूम झूम मेहरवा बरसे,
पिया मिलन को जियरा तरसे।
ए री आली उन बिन मोहे,
यह पावस ऋतु नेक न भाये॥

स्थायी चारताल मात्रा १२

सां	सां	नि॒	प	नि॒	प	रे	म	प	म	रे	सा
ग	र	ज	त	घ	न	घो	ऽ	र	आ	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	
नि़	—	नि़	सा	—	सा	रे	म	म	प	—	प
च	ऽ	हुं	ओ	ऽ	र	वो	ऽ	ले	मो	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि॒	म	प	नि	सां	सां	प	नि॒	प	म	रे	सा
अं	ःबु	आ	डा	ऽ	र	को	य	ल	गा	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

मम	म	म	पप	नि	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां
रूम	झू	म	रूम	झू	म	मे	ह	रा	ब	र	से
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	मं	रें	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
पि	या	मि	ल	न	कौ	जि	य	रा	त	र	से
×		०		२		०		३		४	
म	प	नि	सां	—	सां	रेंरें	रें	म	रें	—	सां
ए	ऽ	री	आ	ऽ	ली	उन	बि	न	मो	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
प	नि	म	प	नि	प	रे	म	प	म	रे	सा
यह	पा	ऽ	वस	ऋ	तु	नं	क	न	भा	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सारँग धमार

—:०:—

खेलत हैं महादेव देवन सन होरी ।
कुनकुम अरू अबीर गुलाल,
केसर चंदन भरहिं थाल,
हिमाल कुंजन में आज,
रंग बरसो री ।।

स्थायी धमार मात्रा १४

रे	म	प	निनिपम	प	|	प	नि	|	सां	नि	प	|	म	रे	—	सा
खे	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ल	|	त	हैं	|	ऽ	म	हा	|	ऽ	दे	ऽ	व
×					|	२		|	०			|	३			
नि़	—	सा	—	सा	|	मरे	म	|	प	नि	प	|	म	रे	नि़	सा
दे	ऽ	व	ऽ	न	|	सऽ	ऽ	|	न	हो	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	री
×					|	२		|	०			|	३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म प — प	नि म	प नि नि	नि सां — सां
कु म कु ऽ म	अ रू	अ बी र	गु ला ऽ ल
×	२	०	३
रें रें मं रें —	सां —	सां नि सां	नि म प प
के स र चं ऽ	द ऽ	न भ र	हिं थां ऽ ल
×	२	०	३
म प निम प नि	सां रें	— मं रें	— सां — सां
हि मा ऽऽ ल कु	ऽ ज	ऽ न में	ऽ आ ऽ ज
×	२	०	०
नि सां रें सां —	सां प	नि म प	रे म रेनि सा
रं ऽ ग व ऽ	र सो	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ री
×	२	०	०

××

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री

परिचय—राग बागेश्री में गंधार, निषाद कोमल तथा अन्य शुद्ध स्वर लगते हैं। इसके आरोह में पंचम वर्जित है। अवरोह में पंचम का वक्र रूप में प्रयोग करना चाहिये। यदि अवरोह में पंचम को दिखाने का प्रयत्न करेंगे तो राग काफ़ी का स्वरूप दिखाई देने लगेगा। इसलिए पंचम का वक्र रूप से एवं अल्प मात्रा में ही प्रयोग करना चाहिए। यह काफ़ी थाट का राग है। इस राग के आरोह में 'नि़ सा ग_ म ग_ रे सा' यह स्वर समूह दिखाते समय भीमपलासी से पृथक करने के लिये 'नि़ सा ग_ म ग_ रे म ग_ रे सा, ऐसा करके षड़ज पर, न्यास करना चाहिये, या 'सा नि़ ध़ नि़ सा म ग_ म ग_ रे सा.' इस प्रकार से स्वरों को दिखाना अधिक उपयुक्त होगा। कभी-कभी रे ग_ म ग_ रे, इस प्रकार से इन स्वरों का प्रयोग करने से कोई हानि नहीं, परन्तु ऐसा करते समय रिषभ पर विश्रोति नहीं करनी चाहिये अन्यथा राग काफ़ी की छाया प्रतीत होगी। यह राग बड़ी लोक प्रियता, भावुकता एवं विनय को धारण किये हुए है। इस राग को रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाता है। बागेश्री में मध्यम एवं गंधार पर न्यास करने से हृदय की पीड़ा व्यक्त होती है। इसका वादी स्वर मध्यम और सम्वादी षड़ज है।

आरोह—सा नि़ ध़ नि़ सा म, ग_ म ध नि_ सां,

अवरोह—सां नि_ ध म प ध म ग_ म ग_ रे सा।

इस राग में 'म ग_ म ध नि_ नि_ ध नि_ ध म ग_,' इस प्रकार का स्वर समूह बार-बार दिखाना चाहिए।

पकड़

ध़ नि़ सा म, ग_ रे म ग_ रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

सा, रे सा, नि ध़ सा, सा नि ध़ म़ ध़ नि सा, सा रे सा. नि सा ध़ नि
सा म, ग म ग रे सा, नि ध़ नि सा म, ग रे म, म ग रे सा, नि ध़ सा, सा
नि ध़ म़ ग म़ ध़ नि ध़ सा, सा, ध़ नि सा म, ग म ग रे म ग रे सा,
नि सा ध़ नि सा म, ग म ध म, ग रे म ग रे सा, ध़ नि सा म, ग म ध,
नि ध म ग म ग रे सा, नि सा म, ग म ध, नि ध मप ध म ग, म ग रे सा,
रे सा नि ध़ नि सा म, ग म ध नि नि ध, म ग, नि ध म ग, रे म ग रे सा,
सा, ध़ नि सा, ग म ध म ध नि ध सां, सां नि ध म ध नि ध मप ध म ग
म ग रे सा, म. ग म ध नि सां, रें सां नि धं सां नि ध नि ध म ग, ग म ध
नि सां, गं रें सां, रें सां नि ध, सां नि ध, मप ध म ग रे म ग रे सा, ध़ नि
सा म, ग म ध़ म, ग म ध नि ध म, ग म ध नि सां, मं गं रें सां, रें सां नि
सा म, ग म ध म, ग म ध नि ध म, ग म ध नि सां मं गं रें सां, रें सां नि
ध, सां नि ध मप ध म ग, म ध नि ध सां, रें सां नि ध सां, गं रें सां, रें सां
नि ध सां, मं गं रें सां. रें सां, नि ध सां, सां नि ध मप ध म ग म ग रे सा,
नि सा ध नि सां, ग रे सा, रे सा नि सा, ध़ नि सा म ग रे सा, रे सा नि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ध़ नि सा म, ग म ग रे म ग रे सा, रे सा नि सा, ध़ नि सा म, ग म

ध म, ग म ध नि ध म, प ध म ग रे म ग रे सा, ध़ नि सा म, ग म नि ध

सां, सां नि ध, म प ध म ग रे म ग रे सा, नि सा ध़ नि सा म, ग म ध नि

ध म ग म ध नि सां, नि ध म, ग म ध नि सां रें सां नि ध म, ग म ध नि

ध म ग म ध नि सां, नि ध म, ग म ध नि सां रें सां नि ध म, ग म ध नि

सां गं रें सां, रें सां, नि ध सां नि ध नि ध, म प ध म ग, रे म ग रे सा,

ध़ नि सा म, ग म ध नि सां, मं गं रें सां, म ग रे सा, ध़ नि सा म, नि ध म,

सां नि ध म, रें सां, नि ध सां नि ध म प ध म ग म ग रे सा ।

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री तानें

१- निध मध निध निसां निध मग मग साऽ।

२- गम पम गम धनि सांनि धम गरे साऽ।

३- गम धनि सांरें सांनि धनि धम गरे साऽ।

४- सांनि धम गम धनि सांनि धम गरे साऽ।

५- सांनि धनि सांरें सांनि धनि धम गरे साऽ।

६- सांगं रेंसां निध मध सांनि धम गरे साऽ।

७- धनि सांध निसां धनि सांनि धम गरे साऽ।

८- सांनि धम गरे साऽ निसा गम धनि सांऽ।

९- गम धनि सांगं रेंसां निध मग मग रेसा।

१०- गम धनि सांमं गंरें सांनि धम धनि सांऽ।

११- गंरें सांनि रेंसां निध सांनि धम गरे साऽ।

१२- निसा गम गम धनि सांनि धम गरे साऽ।

१३- निसा गम धनि सांनि धम गम गरे साऽ।

१४- निसा गम धनि सांरें सांनि धम गरे साऽ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५- निसा गम धनि सांम गरें सांनि धनि साांऽ।

१६- धनि सांरें सांनि धनि धम गम गरे साऽ।

१७- सांनि धनि सांमं गंम सांनि धम गरे साऽ।

१८- सांनि धनि सांमं गरें सांनि धम गरे साऽ।

१९- सांनि धनि सांगं रेंसा निध मध मग रेसा।

२०- निनि धम गम धनि सांरें सांनि धनि सांऽ।

२१- निसा गम गम धम धनि सांनि सांगं रेंसा निध निसां रेंसां निध मग मध

निनि सांऽ।

२२- निसा गम गग रेसा धम गम गग रेसा निनि धम गम गग रेसा मां न

धम रेंसां निध गरें सांरें सांनि धम गम धनि सांऽ।

२३- गम गग रेसा धम गम गग रेसा निनि धम गम गग रेसा सांनि धम गम

धनि सांगं रेंसां निध मध सांनि धम गरे साऽ।

२४- निसा गम धनि सांम गरें सांनि धम गम धनि सांगं रेंसां निध मध

निसां रेंसां निध सांनि धम गम धनि सांनि धम गरे साऽ।

२५- सांनि धनि सांमं गरें सांनि धम गम धनि सांगं रेंसां निध मग मध

निसां रेंसां निध मध निसां निध मग रेसा गम धनि सांऽ।

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री स्वर मालिका

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

ग॒	म	ध	ध	नि॒	—	ध	—	म	ध	म	प	ग॒	रे	सा	—
३				×				२				०			
सा	नि॒	ध	नि॒	सा	म	ग॒	म	सा	नि॒	ध	म	ग॒	रे	सा	—
३				×				२				०			

अन्तरा

ध	नि॒	सां	मं	गं॒	रे	सां	नि॒	सां	सां	नि॒	ध	नि॒	नि॒	ध	म
३				×				२				०			
ग॒	म	ध	नि	सां	सां	नि॒	ध	म	प	ध	म	ग	रे	सा	—
३				×				२				०			

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री लक्षण गीत

सुन्दर तान सखि अति रस भरी, शुद्ध सुरन संग कोमल गनी,
मध्यम वादी सम्वादी सा मानो, तबहु बागेसरी नाम धरी।
काफी थाट को सब कोउ जानत, द्वितीय प्रहर निशि समय गुनि मानत,
पंचम रिषभ आरोहन वर्जित, अवरोहन सम्पूरन करी॥

स्थायी तित्राल मात्रा १६

धनि	सां	निध	पध	नि	—	ध	ध	म	म	ध	ध	म	ग	रे	सा
सुऽ	ऽ	दऽ	रऽ	ता	ऽ	न	स	खि	ऽ	अ	ति	र	स	भ	री
०				३				×				२			
नि	सा	ध	नि	सा	म	म	म	ग	म	ध	ध	मध	नि	ध	—
शु	ऽ	द्ध	सु	र	न	सं	ग	को	ऽ	म	ल	गऽ	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
म	—	ध	ध	मध	निध	ध	ध	ग	म	ध	सां	नि	ध	सां	सां
म	ऽ	ध्य	म	वाऽ	ऽऽ	दी	ऽ	सं	ऽ	वा	दी	सा	मा	ऽ	नी
०				३				×				२			
सां	सां	निध	पध	नि	नि	ध	ध	म	—	प	ध	म	ग	रे	सा
त	ब	हुऽ	बाऽ	गे	ऽ	स	री	ना	ऽ	म	ध	री	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म ध नि	धनि सां सां सां	सां नि ध नि	सां — सां सां
का ऽ फ़ी ऽ	थाऽ ऽ ट को	स ब को ऽ	जा ऽ न त
०	३	×	२
ध नि सां मं	गं रें सां सां	नि नि सां सां	नि नि ध ध
द्वि ती य प्र	ह र नि शि	स मै गु नि	मा ऽ न त
०	३	×	२
म — म म	प प ध ध	म ग म ग	रे रे सा सा
पं ऽ च म	सु ऽ र आ	रो ऽ ह न	व र जि त
०	३	×	२
नि ध़ नि —	सा सा म ग	म ध नि सां	निध पम गरे सा
अ व रो ऽ	ह न में ऽ	व ऽ क्र क	रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री बिलम्बित ख्याल १

—:o:—

कौन करे री ऐसो भक्तन को काज।
जब जब परी भीर, तब तब दियो धीर॥
वेगि हरो पीर अब मोरी हे ब्रजराज॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

								सां	नि	धध	धनि
								को		ऽऽ	नक
								३		४	
सां	—	—	नि	ध	म	पध	ग	—	रे	सा	रेसा
रें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रीऽ	ऐ	ऽ	ऽ	सो	भऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	धनि	सा	—	म	ग	रे	सा				
क्त	नऽ	के	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज				
×		०		२		०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								ग	म	ध	नि
								ज	ब	ज	ब
								३		४	
सां	—	—	सां	रें	सांनि	सां	सां	ध	नि	सां	मं
प	ऽ	ऽ	री	भी	ऽऽ	ऽ	र	त	ब	त	ब
×		०		२		०		३		४	
मं	—	मं	गं	रें	सां	—	सां	नि	—	ध	म
दी	ऽ	ऽ	यो	ऽ	धी		र	वे	ऽ	गि	
×		०		२		०		३		४	
म	धनि,सां	सां	सां	—	सां	मंगं	मं	—	गं	रें	सां
ह	रोऽ,ऽ	ऽ	पी	ऽ	र	भ्रऽ	ब		मो	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
नि	ध	म	पध	ग	म	गरे	सा				
हे	ऽ	ऽ	व्रज	रा	ऽ	ऽऽ	ज				
×		०		२		०					

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री विलंबित ख्याल १

भज रे भज मोरे मन तू,
निसदिन राम चरण,
भव भय हारी।
जाहि चरन केवट धोई लीनो,
गौतम नार अहिल्या तारी।।

स्थायी तीलवाड़ा मात्रा १६

		ध	पधनि ध म पध
		भ	ज रे ऽ भज
			३
ग — म ग	— रे रेग रे	— सा — नि	ध सा — सा
मो ऽ ऽ ऽ	ऽ रे ऽऽ म	ऽ न ऽ तू	ऽ ऽ ऽ नि
×	२	०	३
म — ग म	ग रेसा रे —	सा — म ग	म ध पध,नि धनि
स ऽ ऽ ऽ	दि ऽऽ ऽ ऽ	न ऽ रा ऽ	म च रऽ न
×	२	०	३
सां — — सां	नि — ध म	ग मग रेसा ध	
भ ऽ ऽ व	भ ऽ य हा	ऽ ऽऽ रीऽ, भ	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

		ग	ग म ध निनि
		जा	ऽ ऽ हि ऽच
			३
सां मं ग़ं रेंसां	रें नि सां निधपध	नि — ध म	ग म ग रे
र ऽ ऽ नऽ	के व ट घोईऽऽ	ली ऽ नो गो	ऽ ऽ त म
×	२	०	३
रे ग रे सासा	सां नि ध म	ग मग रेसा, ध	
ना ऽ ऽ रप्र	हि ल्या ऽ ता	ऽ ऽऽ रीऽ, भ	
×	२	०	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री विलम्बित ख्याल ३

—:०:—

इतनी विनती अब सुनहु मोरी,
गिरिजापति मुख चन्द्र चकोरी।
आयो हूँ मैं शरन तोरी,
राखो लाज हे गिरिराज किशोरी ॥

--:o:--

स्थायी तिलवाड़ा मात्रा १६

			सां सां नि धध.ध
			इ त नी ऽऽ.वी
			३
नि — ध म	पध ग ग —	म ग रे सा	नि ध सा निध
न ऽ ती ऽ	अब ;सु न ऽ	हू मो ऽ री	गि रि जा ऽऽ
×	२	०	३
सा म ग रेसा	नि धप,ध नि ध	म ग मग रेसा	
प ति मु खऽ	चं द्रऽ,च को ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽरी	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

												ग	म	ध	निनि
												ग्रा	ऽ	यो	हूँमैं
												३			
सां	मं	गं	मं	गं	रे	गं	रेंसां	नि	ध	सां	सां	सां	नि	ध	धनि
श	ऽ	ऽ	ऽ	र	न	ऽ	ऽऽ	तो	ऽ	ऽ	री	रा	ऽ	ऽ	खाऽ
×				२				०				३			
सां	सां	रें	नि	धप.ध	नि	ध	म	पध	ग	रे	सा				
ला	ज	हे	ऽ	गिऽ,रि	रा	ऽ	ज	किऽ	शो	ऽ	री				
×				२				०							

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री द्रुत ख्याल १

—:०:—

घोर घोर घन गरजत आली,
उमड़ घुमड़ घट छाई काली।
रिमझिम रिमझिम बरसे बूंदरियां,
झूलत हिंडोले सब मिल सखियाँ।
हरे हरे पतवा हरि बेलरिवाँ,
झूमत बन बन डाली डाली।

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

धनि	सां	सां	नि	ध	म	प	ध	म	ग	रे	सा	रे	—	सा	—
घोऽ	ऽ	र	घो	ऽ	र	घ	न	ग	र	ज	त	आ	ऽ	ली	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ध	नि	सा	सा	म	म	ग	म	धनि	सां	निध	धध	गरे	सा
उ	म	ड़	घु	म	ड़	घ	ड़	छा	ऽ	ईऽ	ऽ	काऽ	ऽऽ	लीऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	ग	म	म	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	नि	ध	नि	सां	—
रि	म	झि	म	रि	म	झि	म	ब	र	से	बूं	द	रि	या	ऽ
०				३				×				२			
ध	नि	सां	मं	गं	रें	सां	—	सां	सां	निध	पध	नि	नि	ध	—
झू	ऽ	ल	त	हिं	डो	ले	ऽ	स	ब	मिऽ	लऽ	स	खि	याँ	ऽ
०				३				×				२			
सां	सां	निध	पध	नि	नि	ध	—	ग	म	प	ध	ग	ग	रे	सा
ह	रे	हुऽ	रेऽ	प	त	वा	ऽ	ह	री	वे	ऽ	ल	रि	याँ	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ध	नि	सा	सा	म	म	ग	म	धनि	सा	निनि	धम	गरे	सा
झू	ऽ	म	त	व	न	ब	न	डा	ऽ	लीऽ	ऽ	डाऽ	ऽऽ	लीऽ	ऽ
०				३				×				२			

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री द्रुत ख्याल २

—:०:—

नैया करो मोरी पार कन्हैया,
तुम बिन ना कोई और खिवैया।
गहरी नदिया नाव पुरानी,
बाट न सूझत राह अनजानी,
कौन विधि वार परूँ भव सों हरि,
राखो लाज अब पीर हरैया॥

—:०:—

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सां	सां	नि	नि	ध	म	प	ध	ग	—	रे	सा	रे	—	सा	—
नैं	ऽ	या	क	रो	ऽ	मो	री	पा	ऽ	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ध	नि	सां	म	म	म	ग	म	ध	नि	सां	—	निध	मध
तु	म	बि	न	ना	ऽ	को	ई	औ	ऽ	रऽ	खि	वै	ऽ	यऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	ग	म	—	ध	ध	ध	नि	मध	निसां	सां	गं	रें	सा	धनि	सा
ग	ह	री	ऽ	न	दि	या	ऽ	नाऽ	ऽऽ	व	पू	रा	ऽ	नीऽ	ऽ
०				३				×				२			
ध	नि	सां	मं	गं	रें	सां	सां	नि	ध	म	ध	मध	नि	ध	—
बा	ऽ	ट	न	सू	ऽ	झ	त	रा	ह	अ	न	जाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
सां	सां	नि	ध	पध	नि	ध	ध	म	—	प	ध	म	ग	रे	सा
कौ	न	वि	धि	पाऽ	ऽ	र	प	रूं	ऽ	भ	व	सौं	-	ह	रि
०				३				×				२			
नि	सा	ध	नि	सां	सा	म	म	ग	म	ध	नि	सां	—	निध	मध
रां	ऽ	खो	ला	ऽ	ज	अ	ब	पी	ऽ	र	ह	रें	ऽ	याऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री द्रुत ख्याल ३

शरण गेह की लाज राखो हरि ।
मों सम नीच पतित नाहीं कोई ।
पाप कपट छल नाव भरी ॥

द्रुपद सुता की लाज बचाई ।
वेगि उबारी मीरा बाई ।
ग्रह सों गज को राख लियो प्रभु,
सुआ पढ़ावत गनिका तारी ॥

स्थायी तीनताल मात्रा १६

म	ग	रे	सा	नि	सा	ध़	नि	सा	—	सा	म	ग	रे	सा	सा
श	र	ण	ग	हे	ऽ	की	ऽ	रा	ऽ	खो	ला	ऽ	ज	ह	रि
०				३				×				२			
ध़	नि	सा	सा	म	—	म	म	ग	म	ध़	नि	ध	—	म	—
मों	ऽ	स	म	नी	ऽ	च	प	ति	त	ना	हीं	कों	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	ध	नि	धनि	सां	सां	सां	सां	नि	ध	म	गम	ग	रे	सा
पा	ऽ	प	क	पऽ	ट	छ	ल	ना	ऽ	व	भ	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	ग	ग	ग	म	—	ध	—	मध	निसां	सां	सां.	नि	ध	सां	—
द्रु	प	द	सु	ता	ऽ	की	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ज	ब	चा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
रें	रें	रें	रें	सांरें	गं	सां	सां	नि	—	ध	म	धनि	सां	सां	—
वे	ऽ	गि	उ	वाऽ	ऽ	री	ऽ	भी	ऽ	रा	ऽ	बाऽ	ऽ	ई	ऽ
×				३				×				२			
ध	ध	ध	म	ध	नि	ध	—	म	ग	ग	म	ग	रे	सा	सा
ग्र	ह	सों	ऽ	ग	ज	को	ऽ	रा	ऽ	ख	लि	यो	ऽ	प्र	भू
०				३				×				२			
ग	म	ध	नि	धनि	सां	सां	सां	सां	नि	ध	म	गम	ग	रे	सा
सु	ऽ	ग्रा	प	ढ़ाऽ	ऽ	व	त	ग	नि	का	त	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री द्रुत ख्याल ४

झनन झनन बाज रही,
पायल की झनकार।
मंद मंद मुसकान जात,
अलकन मुख भई रात।
गज गामिनि मन भावनी,
गर फूलन के हार॥

स्थायी एकताल मात्रा १२

म	ग	रे	सा	नि	ध	सा	—	सा	सा	सा	—
झ	न	न	झ	न	न	बा	ऽ	ज	र	ही	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ध	म	धनि	सां	नि	ध	सांनि	धम	गरे	सा
पा	ऽ	य	ल	कीऽ	ऽऽ	झ	न	काऽ	ऽऽ	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म	ध म	ध नि	धनि सा	सा सां	— सां
मं द	मं द	मु स	काऽ ऽ	त जा	ऽ त
×	०	२	०	३	४
ध नि	सां मं	गं रें	सां नि	ध सां	— सा
अ ल	क न	मु ख	भ ई	ऽ रा	ऽ त
×	०	२	०	३	४
निध पध	नि —	ध ध	म म	ग —	रे सा
गऽ जऽ	गा ऽ	मि नी	म न	भा ऽ	व नी
×	०	२	०	३	४
ग म	ध म	धनि सां	नि ध	सांनि धप	गरे सा
ग र	फू न	लऽ न	के ऽ	हाऽ ऽऽ	ऽऽ रं
×	०	२	०	३	४

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री तराना

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सां सां नि ध	ध म ध नि	सां सां नि ध	ग ग रे सा
ओ दा नि त	दा रे दा नि	दी म् त नं	दि र ना ऽ
०	३	×	२
नि सा ध़ नि	सा म म म	गग मम नि ध	म ग रे सा
ओ दा दा नि	ओ दा दा नि	दिर दिर दा नि	दि र ना ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग ग म म	ध ध नि नि	सां सां सां सां	सां सां सां सां
दी म् दी म्	तो म् तो म्	त न न न	न न न न
०	३	×	२
ध नि सां मं	गं रें सां सां	सां नि ध म	ग रे सा —
त दा रे त	दा रे दा नि	तो म् त न	दि र ना ऽ
०	३	×	२

— —

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री ध्रुपद

ठुनक ठुमक चलत चाल,
दसरथ के अंगना।
मधुर मधुर बोलत बैन,
सुंदर काजर कारे नैन।
बलि बलि जात मात कौशल्या,
युग युग जियो हे रघुनन्दना॥

स्थायी चारताल मात्रा १२

म	ग	रे	सा	नि	ध़	सा	सा	सा	सा	—	सा
ठु	म	क	ठु	म	क	च	ल	त	चा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ध	नि	सां	—	नि	ध	म	ग	रे	सा
द	स	र	थ	के	ऽ	अं	ग	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	म	ध	नि	धनि	सां	सां	रेंसां	नि	सां
म	धु	र	म	धु	र	बोऽ	ल	त	बैंऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		०	
धनि	सां	मं	गं	रें	सां	नि	ध	पध	नि	—	ध
सुंऽ	द	र	का	ज	र	का	ऽ	रे	नै	ऽ	न
×		०		२		०		३		०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

पम	ग	म	ग	रे	सा	ध	नि	सा	म	—	म
बलि	व्र	लि	जा	ऽ	त	मा	त	को	श	ऽ	ल्या
×		०		२		०		३		४	
गम	धि	नि	धनि	सां	सां	नि	ध	म	ग	रे	सा
युग	यु	ग	जिऽ	ऽ	यो	हे	र	घु	नं	द	ना
×		०		२		०		३		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री धमार

खेलत फाग आज बनवारी।
कुम-कुम केसर अबीर गुलाल।
अखियन में दीनों डाल।
सारी चूनरी रंग डारी।

ना जाइयो आलि वृन्दावन।
मग रोकत ठाड़ो है नन्द नंदन।
मानत नाहीं बार बार।
छांड़त रंग भर भर पिचकारी।

स्थायी धमार मात्रा १४

मग	ग	म	ग	रे	सा	नि	ध	नि	सा	म	ग	रे	सा
खेऽ	ल	त	फा	ऽ	ग	आ	ऽ	ज	ब	न	वा	ऽ	री
×					२		०			३			
गग	म	म	ध	ग	म	म	ध	नि	ध	नि	सां	—	सां
कुम	कु	म	के	ऽ	स	र	अ	बी	र	गु	ला	ऽ	ल
×					२		२			३			
सां	सां	नि	—	ध	—	म	—	म	ध	ध	मग	रे	सा
अ	खि	य	ऽ	न	ऽ	में	ऽ	दी	ऽ	नों	डाऽ	ऽ	ल
×					२		०			३			
ध	नि	सा	म	—	म	म	ध	नि	सां	नि	ध	मग	रेसा
स	ग	री	चू	ऽ	न	री	रं	ग	डा	ऽ	ऽ	ऽऽ	रीऽ
×					२		०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	ग॒	म	—	म	म	नि॒	सां	—	सां	—	सां	—	सां	
ना	ऽ	जा	ऽ	इयो	आ	लि	वृं	ऽ	दा	ऽ	व	ऽ	न	
×					२		०			३				
ध	नि॒	सा	मं	गं॒	रें	सां	सां	निध	म	ध	नि॒	सां	सां	
म	ग	रो	क	त	ठा	ऽ	ड़ो	हैऽ	नं	द	नं	द	न	
×					२		०			३				
ध	—	ध	नि॒	सां	—	प	रे	म	सा	ग	म	—	रे	
मा	ऽ	न	त	नां	ऽ	हीं	ऽ	बा	र	बा	र	ऽ	ऽ	
×					२		०			३				
धनि	सां	मं	गं॒	रें	सां	नि॒	ध	म	म	गम	ग॒	रे	सा	
छांऽ	ऽ	ड़	त	रं	ग॒	भ	र	भ	र	पिच	का	ऽ	री	
×					२		०			३				

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस

परिचय-इस राग में निषाद दोनों तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गंधार एवं धैवत दोनों वर्जित हैं। इस राग का वादी स्वर रिषभ और सम्वादी पचम है। कई विद्वान वादी पंचम और सम्वादी रिषभ मानते हैं किन्तु रिषभ स्वर को ही वादी मानना उचित है। कारण यह है कि इसका विस्तार करते हुए बार बार रिषभ पर न्यास एवं ठहराव करने से राग का स्वरूप स्पष्ट एव मधुर प्रतीत होता है। यह राग सोरठ से बहुत मिलता जुलता है। इस राग में 'रे म ग रे ग नि़ सा', 'म प नि ध प ध म ग रे नि सा', 'रें नि ध प ध म ग रे,' ऐसे स्वर समूह बार बार दिखाने चाहिये। इसके आरोह में निषाद शुद्ध, का और अवरोह में निषदकोमल का प्रयोग किया जाता है। यह राग आरोह में सारंग के समान दिखाई देता है परन्तु अवरोह में इसका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। यह खमाज थाट का प्रसिद्ध, लोक प्रिय एवं प्रचलित राग है। इस का गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। यह ओढ़व सम्पूर्ण जाति का राग है।

आरोह—नि़ सा रे म प नि सां।
अवरोह—रें नि ध प ध म ग रे ग नि़ सा।

दूसरा प्रकार

आरोह—सा रे म प नि सां।
अवरोह—सां नि ध प ध म ग रे ग नि़ सा।

तीसरा प्रकार

आरोह—सा रे म प नि सां।
अवरोह—सां नि ध प म ग रे नि़ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस

परिचय- सा नि़ सा, रे म ग रे, नि़ सा, नि ध़ प़ म़ प़ नि़ सा, रे म ग रे प नि़ सा, नि़ रे सा रे म प, प म ग रे, म ग रे म ग नि़ सा, रे म ग रे नि़ सा, नि़ सा, रे म प, ध म ग रे, ग सा, नि सां रे म ग रे, प म ग रे, म प, नि ध प, ध म ग रे, प म ग रे, ग, नि़ सा, रे म ग रे, म प, नि ध प, ध म ग रे, म ग रे, प म ग रे, नि ध प, म ग रे, नि सां, नि ध प, म ग रे, रें सां, रें नि ध प, ध म ग रे, ग नि़ सा, रे म ग रे, प म ग रे, रे म प ध म ग रे, रे म प नि ध प, ध म ग रे, रे म प नि सां, नि ध प ध म ग रे, रे म प नि सां, रें सां नि ध, प ध प म ग रे, रे म, प नि सां रें मं गं रें, गं नि सां, रें नि ध प, ध म ग रे, ग सा: नि़ सा, रे म प नि सां, रें मं गं रें, ग नि सां, रें नि ध प, म प नि सां नि ध प, म प ध म ग रे ग सा, नि़ सा, रे म ग रे, नि़ सा रे म प म ग रे, रे ग रे म ग रे, प म ग रे, रें नि ध प ध म ग रे, नि सां नि ध प, ध म ग रे, रे म प नि सां, प नि सां रें नि सां, रें मं गं रें पं मं गं रें मं गं रे, गं नि सां, प नि सां रें नि ध प, सां नि ध प, नि ध प, ध म ग रे, प म ग रे, म ग रे, ग़ नि़ सा, सा रे म ग रे ग, नि ध प ध म ग रे, म प, नि ध प, नि सां, रें सां, नि ध प, ध म प नि ध प, म प नि सा नि ध प, रें सां, रें सां, नि़ ध प म प नि ध प, म प नि सां नि ध प, म प नि सां, रें सां, नि ध प, म प नि सां, रें गं नि सां, रें नि ध प म प नि सां, रे मं गं रें, नि सां, रें नि ध प म प नि सां, रें मं गं रें, पं मं गं रें, म गं रे, गं नि सां, रें नि ध प, म प, नि ध प, सां नि ध प, रें सां, नि ध प, म प नि सां नि ध प, म प नि ध प, म प ध म ग रे नि़ सा, म ग रे नि़ सा, प म ग रे नि सा, नि ध प, ध म ग रे नि सा, म ग रे नि़ सा, नि ध प, ध म ग रे, नि़ सा, सां नि ध प ध म ग रे, नि़ सा, रे म ग रे, रें मं गं रें, गं नि सां, रें नि ध प, ध म ग रे, म ग रे, प म ग रे, नि ध प, ध म ग रे, नि सां, नि ध प, ध म ग रे, रें सां, नि ध प, ध म ग रे, नि़ सां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस तानें

१- सांनि धप मग रेसा रेम गरे ।

२- सांनि धप मप निध पम गरे ।

३- निसा रेम गरे मप धम गरे ।

४- निसा रेम पनि धप धम गरे ।

५- मप निसां रेंसां निसां निध पम गरे साऽ । ८ मात्रा

६- सांरें निसां रेंनि धप मप निध पम गरें ।

७- सांनि धप मप निसां रेंसां निध पम गरे ।

८- धनि धप मग रेसा निसा रेम पनि साऽ ।

९- निसा रेम पनि सांरें सांनि धप मग रेसा ।

१०- निसा रेम पनि धप धम गरे गनि साऽ ।

११- निसा रेम पनि सांनि धप गरे साऽ ।

१२- निसा रेम गरे मप निध पम गरे साऽ ।

१३- सारे मप निसां रेंसां निध पम गरे साऽ ।

१४- मप निसां रेंनि धप मप निध पम गरे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५- मप निसां रेंमं गंरें सांनि धप मग रेसा ।

१६- सांनि धप मग रेसा निसा रेम पनि सांऽ ।

१७- सांनि धप मप निसां रेंसां निध पम गरे ।

१८- सांरें मंगं रेंसां निसां निध पम गरे साऽ ।

१९- सांरें मंगं रेंसां निसां रेंसां निध पम गरे ।

२०- निसा रेम गरे मप धम गरे मप निध पम गर मप निसां निध पम गरे साऽ ।

२१- निसा रेम पनि धप धम गरें मप निसां निध पम गरे मप निसां रेंसां निध पम गरे पनि धप मग रेसा निसा रेम पनि सांऽ ।

२२- निसा रेम पनि सांरें मंगं रेंसां निध पम गरे निसा रेम पनि सांरें सांनि धप धम गरे मप निसां निध पम गरे सानि साऽ ।

२३- मप मग रेसा निनि धप मग रेसा निसां निनि धप मग रेसा रेंसां निसां रेंमं गरें सांनि धप मप निसां निध पम गरे साऽ ।

२४- निसा रेम गरे मप निध पम पनि सांरें निसां रेंमं गंरें सांनि धप मग रेसा निसा ।

२५- निसा रेम पनि सांरें मंगं रेंसां निनि धप मप निसां रेंसां निध पम पनि सांनि धप मप निध पम गरे सारें मप निनि सांऽ ।

२६- रेम गरे मप धम गरे मप निध पम गरे मप निसां निध पम गरे मप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निसां रेंसां निध पम गरे मप निसां रेंमं गंरें सांनि धप मप निसां निध

पम गरे साऽ।

२७- निसा रेम पनि धप मग रेसा रेम पनि सांनि धप मग रेंसा मप निसां

रेंसां निध पम पनि सारें सांनि धप मग रेसा निसा।

२८- सारे मम रेम पप मप निनि पनि सांसां रेंमं गंरें सांनि धप निनि धप

मग रेसा।

२९- मप मग रेसा निनि धप सांनि धप रेंसां निध पम पनि सांरें सांनि धप

मग रेसा।

३०- सारे मप गरे रेम पप मग मप निध पम पनि सांनि धप निसां रेंसां निध

पनि धप मग रेसा रेम पनि सांरें सांऽ।

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस स्वर मालिका

स्थायी आड़ा चारताल मात्रा १४

रे म	रे म	प प	म प	ध म	ग रे	ग सा
×	२	०	३	०	२	३
नि सा	रें रे	सा नि	ध़ प़	म़ प़	नि़ नि़	सा —
×	२	०	३	०	२	३
रे म	ग रे	म प	नि ध	प म	ग रे	ग सा
×	२	०	३	०	२	३

अन्तरा

प म	रें रें	सां —	नि सां	रें मं	गं रे	गं सां
×	२	०	३	०	२	३
नि सां	रें रें	सां नि	ध प	म प	नि नि	ध प
×	२	०	३	०	२	३
नि नि	सां –	रें सां	नि ध	प म	ग रे	ग सा
×	२	०	०	०	२	३

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस लक्षण गीत

सब मिल राग देस को गाइये,
रिषभ वादी पंचम सम्वादी,
धैवत गंधार आरोहन छुपाइये ।

थाट खमाज सकल गुनि जानत,
द्वितीय प्रहर निशि समैत सब मानत,
सब सुर शुद्ध अवरोह नी कोमल,
औढ़व सम्पूरन सां नि ध प म ग रे सा,
सोरट तिलक कामोद बचाइये ।।

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

सा	रे	म	प	नि	सां	सां	रें	नि	ध	प	ध	म	ग	रे	—
स	ब	मि	ल	रा	ऽ	ग	दे	ऽ	स	को	ऽ	गा	ऽ	इयें	ऽ
०				३				×				२			
रे	रे	म	म	प	प	प	—	मप	ध	म	—	ग	रे	रे	—
रि	ष	भ	वा	ऽ	दी	पं	ऽ	चऽ	म	सं	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ
०				३				×				२			
म	प	नि	नि	सां	—	सां	रे	नि	ध	प	ध	म	—	ग	रे
धै	व	त	गं	धा	ऽ	र	आ	रो	ह	न	छु	पा	ऽ	इये	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प — प म	प — नि नि	सां सां सां सां	सां नि सां सां
था ऽ ट ख	मा ऽ ज स	क ल गु नि	जा ऽ न त
०	३	×	२
नि सां रें मं	गंरें गं रें रें	गं गं नि नि	सां — सां सां
द्वि ती ये प्र	हुऽ र नि शि	स मै स व	गा ऽ न त
०	३	×	०
पनि सारें रे रें	निं न सां सां	नि ध प ध	म ग रे सा
सऽ बऽ सु र	शु द्ध भ्र व	रो ह नी ऽ	को ऽ म ल
०	३	×	२
सा रे म प	नि — सां सां	सां नि ध प	म ग रे सा
औ ढ़ व सं	पू ऽ र न	सां नि ध प	म ग रे सा
०	३	×	२
म रे म म	प प प प	मप ध म म	गरे ग रे —
सो ऽ र ठ	ति ल क का	मोऽ ऽ द व	चाऽ ऽ इये ऽ
०	३	×	२

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस विलंबित ख्याल १

पिया परदेस गयो री आली,
कासों कहूँ मैं जिया के बैन,
बरसत नैन चैन नाहीं पल छिन,
तरपत हूँ दिन रैन ।

स्थायी एकताल मात्रा १२

								मपध	म	गरे,ग	नि़नि़
								पिऽऽ	या	ऽऽ,ऽ	पर
								३		४	
भग,रे	रे	—	रेरे	प	पमप,ध	म	गरे	ग	नि़	सा	सा
देऽ,ऽ	ऽ	ऽ	सग	यो	रीऽऽ ऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	पम	पध,नि	धप	ध	म	गरे	ग	नि़	सा
का	ऽ	ऽ	सोंक	हूँऽ,ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	निर्सां	निध	पध	म	गरे				
जि	ऽ	या	केऽ	बैऽ	ऽऽ	ऽ	नऽ				
×		०		२		०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								म	प	नि	नि
								व	र	स	त
								३		४	
सां	—	—	सा	नि	सां	रें	मं	गंरें	ग	नि	सां
नै	ऽ	ऽ	न	चैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
रें	नि	ध	प	ध	म	ग	रे	म	प	—	प
ना	ऽ	ही	ऽ	प	ऽ	ल	ऽ	छि	ऽ	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
म	प	नि	सां	रें	मं	गंरें	गं	नि	सां	—	सां
त	र	प	त	हूँ	ऽ	ऽऽ	ऽ	दि	ऽ	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	
पनिसांरें	निध	धप	ध	म	गरे	ग	निसा				
रेंऽ,ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	नऽ				
×		०		२		०					

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस बिलम्बित ख्याल १

आन बसी हिया माधुरी मूरत।
चितवन चितवत नैंनन हारी।
पीत वसन तन अधर मुरलिया।
कानन कुंडरव की छवि न्यारी॥

स्थायी तिलवाड़ा मात्रा १६

												रे	म	प	निनि
												आ	ऽ	ऽ	नव
												३			
सां	—	पनिसांरे	नि	धप	ध	म	गरे	ग	नि़	सा	सा	रे	म	प	प
सो	ऽ	ऽऽऽऽ	हि	याऽ	मा	धु	रीऽ	मू	ऽ	र	त	चि	त	व	न
×				२				०				३			
मपध,नि	ध	प	प	ध	म	ग़	रे	ग	नि	सा	सा				
चिऽऽ,ऽ	त	व	त	नै	ऽ	न	न	हा	ऽ	री	ऽ				
×				२				०							

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			म — गरे म
			पी ऽ तऽ य
			३
प प नि नि	सां सां सां सां	नि नि सां सां	रें मं गं रे
स न त न	अ ध र मु	र लि या ऽ	का ऽ न न
×	२	×	३
रे म ग रे	म प नि सां	पनिसांरें सांनिधप निधमप गरेसा	
कु ऽ ड र	की ऽ छ वि	न्याऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ रीऽऽऽ	
×	२	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस द्रुत ख्याल १

बरसन लागी बूंदरियां,
गरजन लागे बादरवा।
उमड़ घुमड़ कारी घटा छाई,
सननन ननन चलत पुरवई।
अम्बुआ डार पर बैठी कोयलिया,
कूक कूक मोरा लेत जियरवा॥

स्थायी त्रिताल मात्रा १६

म	म	पध	नि	ध	नि	ध	प	—	ध	—	म	म	ग	रे	—
ब	र	सऽ	ऽ	न	ला	ऽ	गी	ऽ	बूं	ऽ	द	रि	या	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
म	ग	नि़	—	नि़	सा	—	सा	—	रे	म	प	प	धध	पम	प
ग	र	ज	ऽ	न	ला	ऽ	गे	ऽ	बा	ऽ	द	र	वाऽ	ऽऽ	ऽ
३				×				२				०			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	मं	म	म	प	प	नि	—	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	—
उ	म	ड़	घु	म	ड़	का	ऽ	री	ऽ	घ	टा	छा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
नि	सां	रें	मं	गरें	गं	रें	रें	नि	नि	नि	नि	सां	-	सां	—
स	न	न	न	नऽ	न	न	न	च	ल	त	पुर	वा	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
सां	सां	सां	रें	नि	ध	प	प	प	ध	म	म	गरे	ग	रे	—
अ	वु	आ	डा	ऽ	र	पु	र	बै	ऽ	ठी	को	यऽ	लि	या	ऽ
०				३				×				२			
म	—	म	प		प	नि	नि	पनि	सांरें	नि	सां	निध	पम	प	म
कू	ऽ	क	कू	ऽ	क	मो	रा	लेऽ	ऽऽ	त	जि	यऽ	रऽ	वा	ऽ
०				३				×				२			

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस द्रुत ख्याल ?

सुमिर सिया राम कमल चरणा।
भव भय हरणा सकल सुख करणा॥
जाहि चरण केवट धोई लीनो।
भारत हृदय अति ही सुख कीनो॥
शरण लेत भव सागर तरणा।
हां! सकल सुख करणा॥

स्थायी तित्राल मात्रा १६

			रे	म	प	नि	सारे	नि	ध	प	ध	म	ग	नि	सा
			सु	मि	र	सि	याऽ	रा	ऽ	म	क	म	ल	च	र
				२				०				३			
म	ग	रे	रे	म	ग	रे	ग	नि़	नि़	सा	सा	रे	म	प	ध
णा	ऽ	ऽ	ऽ	भ	व	भ	य	ह	र	णा	स	क	ल	सु	ख
×				२				०				३			
म	ग	रे	रे												
क	र	णा,	सु												
×															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म म म	प प नि —	सां सां सां	नि — सा —
जा ऽ हिं च	र न के ऽ	व ट धो ई	ली ऽ नो ऽ
०	३	×	२
रें रें रें मं	गंरें गं रें रें	गं — नि नि	सां — सां —
र त ह	दऽ य प्र ति	ही ऽ सु ख	की ऽ नो ऽ
०	३	×	२
पनि सां रें नि	ध प प ध	ध प प प	म ग रे —
शऽ र ण ले	ऽ त भ व	सा ऽ ग र	त र णा ऽ
०	३	×	२
ध — — ध	म ग नि सा	म ग रे रे	
हां ऽ ऽ स	क ल सु ख	क र णा सु	
०	३	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस द्रुत ख्याल ३

इतनी सुनो मोरी, विनती करूं मैं तोरी,
जहँ जहँ परी भीर तहँ तहँ दियो धीर,
जय जय जय गिरि राज किशोरी ॥

स्थायी झपताल मात्रा १०

रे	म	प	मपध	ध	म	ग	रेग	नि़	सा
इ	त	नी	SSS	सु	नो	S	मोS	S	री
×		२			०		३		
रे	म	प	नि	सांरें	निध	पध	मग	रेग	सा
वि	न	ती	S	करुS	रूंS	मैंS	तोS	SS	री
×		२			०		३		

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तरा

म	म	प	—	नि	सां	सां	सां	-	मां
ज	हँ	ज	ऽ	हँ	प	री	भी	ऽ	र
×		२			०		३		
नि	सां	रें	—	मं	गंरें	गं	रें	—	रें
त	हँ	त	ऽ	हँ	दिऽ	यो	धी	ऽ	र
×		२			०		३		
नि	नि	सां	—	रें	निध	पध	म	ग	रे
ज	य	ज	ऽ	य	जऽ	यऽ	गि	ऽ	रि
×		२			०		३		
नि़	सा	रे	म	प	मप	ध	म	ग	रे
रा	ऽ	ज	ऽ	कि	शोऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस द्रुत ख्याल ४

हे रस भरो तान सखि हरि गाए।
ब्रज वनिता सब भई बाँवरी।
ग्वाल वाल यमुना तट आए॥
बजत मुरली धुन जब वृंदावन।
सुनत ही मोह लीनो सुर नर मुनि जन।
मगन भये सब पशु पक्षी गण।
नारद डोलत सुध बुध बिसराए॥

स्थायी तित्राल मात्रा १६

		सा	रे म प नि
		हे	र स भ री
			३
सां — सां रें	सांनि,ध प प ध	म गरे ग रे	म म प प
ता ऽ न स	खिऽ,ऽ ऽ ह रि	गा ऽऽ ए ऽ	ब्र ज व नि
×	२	०	३
गरे ग नि़ सा	रे म — मप	धनि ध प —	नि — नि सां
ताऽ ऽ स ब	भ ई ऽ बांऽ	ऽऽ व री ऽ	ग्वा ऽ ल बा
×	२	०	३
— सां निसां रें	नि ध प ध	म गरे ग, सा	
ऽ ल यऽ सु	ना ऽ त ट	आ ऽऽ ए, हे	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म म म	प प नि नि	सां सां सां —	रें नि सां सां
बा ज त मु	र ली धु न	ज ब वृं ऽ	दा ऽ व न
३	×	२	०
नि सां रें म	गरें गं रें रें	ग गं नि नि	सां सां सां सां
सु न त ही	मोऽ ह ली नो	सु र न र	मु नि ज न
३	×	२	०
पनि सांरें रें रें	नि ध प प	पध पध म —	गरे ग रे रे
मऽ गऽ न भ	ये ऽ स ब	पऽ शुऽ प ऽ	क्षीऽ ऽ ग ण
३	×	२	०
म म प नि	सां सां पनि सांरें	नि धप पध पध	म गरे ग, सा
ना र द डो	ल त सुः घऽ	बु घऽ विऽ सऽ	रा ऽऽए ,ऽ हे
३	×	२	०

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस तराना

स्थायी एकताल मात्रा १२

म	प	नि	सांसां	रेंरें	सां	निनि	ध	प	ध	म	ग
ओ	दा	ना	दिर	दिर	दी	ऽमु	त	न	न	दि	र
०		३		४		×		०		२	
रे	प	म	ग	नि़	सा	प	प	मम	पप	ध	प
ना	त	दा	रे	द	र	दा	नि	दिर	दिर	दा	नि
०		३		४		×		०		२	
म	ग	रे	ग	नि़	सा	म	ग	रे	—	—	
दी	मृ	त	न	दि	र	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

××

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	म	म	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	सां
दी	ऽ	म्	त	न	न	त	दि	य	न	न	न
०		३		४		×		०		२	
रें	रे	मं	गं	रें	रें	गं	गं	नि	नि	सां	सां
त	नो	म	त	न	न	त	दा	रे	त	न	न
०		३		४		×		०		२	
नि	नि	सां	रें	सां	<u>नि</u>	ध	प	ध	—	—	म
त	दा	रे	त	दा	रे	दि	र	ना	ऽ	ऽ	त
०		३		४		×		०		२	
ग	रे	ग	म	नि़	सा	म	ग	रे	—	—	—
दा	रे	त	न	दि	र	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

—:o:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस ध्रुपद

—:०:—

आज सखी आनन्द भयो,
दरशन दीनो नन्द लाल।
धूप दीप केसर चंदन,
तिलक देत नंद नन्दन,
गले डारूँ मोतियन माल॥

—:०:—

स्थायी चारताल मात्रा १२

रे	म	प	निनि	सां	—	पनिसांरें	नि।	ध	पध	म	गरे
आ	ऽ	ऽ	जस	खि	ऽ	आऽऽऽ	नं	ऽ	दभ	यो	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
रेग	नि़	सा	रे	म	प	मप	ध	म		नि़	सा
दर	श	न	दी	ऽ	नो	नंऽ	ऽ	द	ला	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	प	नि	—	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां
भू	ऽ	प	दी	ऽ	प	के	स	र	चं	द	न
×		०		२		०				४	
सां	रें	मं	गंरें	गं	रें	गं	—	नि	सां	सां	सां
ति	ल	क	देऽ	ऽ	त	नं	ऽ	द	नं	द	न
×		०		२		०		३		४	
पनि	सांरें	रें	नि	ध	प	पप	ध	म	ग	नि	सा
गऽ	ऽऽ	ले	डा	ऽ	रू	मोति	य	न	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	

—:०:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस धमार

फगवा खेलत नन्द कुमार,
भरि भरि मुठि गुलाल उड़ावत,
सखियन मुख दीनों डार।
ग्वाल बाल अंग संग,
छांड़त चहुँ ओर रंग,
सारी सारी भिजोये दीनी,
मानत नाहीं बार बार॥

स्थायी धमार मात्रा १४

								नि़	सा	रे	म	ग	रेरे
								फ	ग	वा	ऽ	खे	लत
							०			३			
रे	म	प	ध	म	गरे	ग	सा	रे	म	प	नि	ध	प
नं	ऽ	द	कु	मा	ऽर	भ	रि	भ	ऽ	रि	मु	ऽ	ठि
×					२		०			३			
ध	म	म	म	गरे	ग	नि़	सा	रे	म	पप	नि	सां	सां
गु	ला	ल	उ	ड़ाऽ	ऽ	व	त	स	खि	यन	मु	ऽ	ख
×					२		०			३			
रें	नि	धप	ध	म	गरे	नि़	सा,	नि़	सा	रे	म	ग	रेरे
दी	ऽ	नोंऽ	डा	ऽ	ऽऽ	ऽ	र,	फ	ग	वा	ऽ	खे	लत
×					२		०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	—	प	—	नि	—	नि	सां	—	सां	सां	—	सां
ग्वा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	बा	ऽ	ल	अं	ऽ	ग	सं	ऽ	ग
×					२		०			३			
रें	मं	गं	रें	गं	नि	सां	सां	रें	नि	धप	ध	म	गरे
छां	ऽ	ड़	त	च	ऽ	ऽ	हुँ	ओ	ऽ	रऽ	रं	ऽ	गऽ
×					२		०			३			
म	—	म	पध	नि	ध	म	प	नि	—	नि	सां	—	सां
सा	ऽ	री	साऽ	ऽ	री	भि	ऽ	जो	ऽ	ये	दी	ऽ	नी
×					२		०			३			
रे	मं	गं	रें	रें	म	ग	रे	ग	—	नि़	सा	—	सा
मा	ऽ	न	त	ना	ऽ	हीं	ऽ	बा	ऽ	र	बा	ऽ	र
×					२		०			३			

The End

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi